सुषेणवैद्यक

भाषाटीकासमेत.

-/14/-

श्रीः ।

आयुर्वेद

सुषेणवैद्यक ।

सर्व पदार्थ गुणदोष कथन

वेरीनिवासिपण्डितरविदत्त-
वैद्यजीविरचित-
भाषाटीकासमेत ।

यह ग्रंथ

खेमराज श्रीकृष्णदासनें
स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयमें
छापकै प्रसिद्ध किया ।

मुंबई.

शके १८१७ सं० १९५२ वि०

प्रस्तावना.

यह सुषेणवैद्यकृत आयुर्वेदमहोदधि आजदिनतक कितनेक लोगोंको विदित था, परंतु प्रसिद्ध नहीं था. कहते हैं कि, ये वेही सुषेणवैद्यजी हैं, जोकि, रामरावणके युद्धमें शक्तीसे पडेहुए लक्ष्मणजीको जिन्होंनें उठायाथा. अस्तु. इस ग्रंथमें पदार्थोंके गुणदोषोंका बहुत अच्छा वर्णन कियाहै. इसका लाभ सर्वविद्वान् अविद्वान् साधारण वैद्यलोगोंको होना चाहिये, इसवास्ते हमनें वेरीनिवासी पंडित रविदत्तजीसे सरल सुबोध भाषाटीका बनवायकर अपने " श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखानामें छापकै प्रसिद्ध कियाहै. यह ग्रंथ सर्ववैद्य लोगोंको और सर्व सद्गृहस्थोंको आरोग्योपचारकेलिये अवश्य संग्रह करनेंयोग्य है हमारे सिवाय और किसीको छापनेको अधिकार नहीं है ।

सकलजनप्रेमाभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना–मुंबई.

सुषेणवैद्यकानुक्रमणिका.

इति सुषेणवैद्यकानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीः ।

सुषेणवैद्यकं

भाषाटीकासमेतम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ नत्वा धन्वन्तरिं देवं गणाध्यक्षं दिवौकसाम्॥अन्नपानविधिं वक्ष्ये समस्तमुनिसम्मतम् ॥ १ ॥ तार्तीयेनिपुणावदंतिजलदं तस्मान्निशीथेशरत् पूर्वंशैशिरिकस्ततोहिमऋतुः सूर्योदयादग्रतः ॥ मध्याह्नेचतथावदंतिनिपुणा ग्रैष्मीऋतुः स्यात्ततोवासंतीकथिताऋतुस्तुमुनिभिः पूर्वाह्नमेवंसदा ॥ २ ॥ पीयूषंपिबतोविहङ्गमपतेर्येबिंदवोविच्युतास्तेभ्योऽभूदभयादिवाकरकरश्रेणीवदोषापहा ॥ कालिन्दीवबलप्रहर्षजननी गंगेवशूलि

श्रीगणेशपदद्वन्द्वं नत्वासिद्धिप्रदं परम् ॥
रविदत्तेन वैद्येन भाषाटीका विरच्यते ॥ १ ॥

स्वर्गवासियोंका समूहके मालिक श्रीधन्वंतरिजीको प्रणाम कर संपूर्ण मुनियोंसे सम्मत किया अन्नपान विधिको कहते हैं ॥ १ ॥ दिनके तीसरे पहरमें वर्षा, अर्धरात्रिमें शरत्, सूर्योदयसे पहले शिशिर, और सूर्योदयके पीछे हेमंत, मध्याह्नमें ग्रीष्म, और पहर दिन चढे पहले वसंत, ऐसे कुशल वैद्य ऋतुओंको कहते हैं ॥ २ ॥ अमृतको पीते हुये गरुडजीके मुखसे जो बूंद गिरे उन्होंसे सूर्यकी किरणोंकी पंक्तियोंकी तरह दोष हरनेवाली बलभद्रको आनंद देनेवाली यमुनाजीकी तरह और

प्रिया वह्नेर्दीप्तिकरीघृताहुतिरिव क्षोणीवनानारसा ॥ ३ ॥ श्रेष्ठाशालाक्यतंत्रे कफपवनहरीदीपनी पाचनीया शूलोदावर्तगुल्मज्वरगदगुदजान्कुष्ठपांडु प्रमेहान् ॥ श्वासातीसारकासाश्मरिजठररुजोनाशयत्याशुराजन्सेयंपायादपायात्सकलसुखकरी सर्वदाचारुपथ्या ॥ ४ ॥ शश्वज्जीवितवृद्धिदास्मृतिकरा निःशेषजाड्यापहा रोगघ्नीचरसायनीहितकरी कृच्छ्राश्मरीच्छेदिनी ॥ शस्तास्तंभविरेचनाग्निसहने प्रायेणयापाचनी सात्वांपातुहरीतकीक्षितितले हृद्यानवद्यानिशम् ॥ ५ ॥ संहारिणीस्याद्धृदयामयानां संसेवकानांहितकारिणीस्यात् ॥ अनेकयोगैर्ऋषिभिः

महादेवको प्रियरूप गंगाजीकी तरह अग्निको दीपन करनेवाली घीकी आहुतिकी तरह और अनेक प्रकारके रसोंवाली पृथिवीकी तरह हरडै उपजी ॥ ३ ॥ वह शालाक्यतंत्रसंबंधि कार्यमें श्रेष्ठ है कफवातको हरती है दीपन है पाचन है शूल उदावर्त गुल्मज्वर गुदरोग कुष्ठ पांडु प्रमेह श्वास अतीसार खांसी पथरी उदररोग इन्होंको हे राजन् शीघ्र नाशती है दुःखसे रक्षा करती है सब सुखोंको करती है और सब कालमें सुंदर पथ्य है ॥ ४ ॥ निरंतर जीवनाको बढाती है स्मृतिको करती है सब प्रकारका जडपनाको नाशती है रोगको हरती है रसायन अर्थात् बुढापा और रोगको नाशती है हित करती है मूत्रकृच्छ्र पथरीको छेदती है स्तंभ विरेचन और अग्निका सहना इन्होंमें श्रेष्ठ है प्रायतासे जो पाचन है ऐसी वह हरडै पृथिवीतलमें मनोहर और सुंदररूप हुई हे राजन् आपकी निरंतर रक्षा करो ॥ ५ ॥ हृदयके रोगोंको सम्यक् प्रकारसे हरनेवाली सेवनेंवालोंको हित करनेंवाली और बहुतसे योगोंकरकै मुनियोंने जो

कृतासा शिवाशिवायप्रकरोतुनित्यम् ॥ ६ ॥ ग्रीष्मे तुल्यगुडांचसैंधवयुतां मेघावरुद्धांबरे तुल्यांशर्करयाशरद्यमलया शुंठ्यातुषारागमे ॥ पिप्पल्याशिशिरे वसंतसमये क्षौद्रेणसंयोजितां राजन्प्राप्यहरीतकीमिवगदा नश्यंतुतेशत्रवः ॥ ७ ॥ अव्यायामरतावसंतसमये ग्रीष्मेह्निवायुप्रियाः प्रोक्ताःप्रावृषिपल्वलांभसिनवे कूपोदकद्वेषिणः ॥ कट्वम्लोष्णरताःशरद्दधिभुजो हेमन्तनिद्रालसाः शीतांभःपरिगाहिनस्तुशिशिरे नश्यंतुतेशत्रवः ॥ ८ ॥ सुषेणदेवउवाच ॥ तत्रादौसकलसंजीवनद्रव्यप्रधानवारिगुणाःकथ्यंते ॥ स्वादुपाकरसंशीतं त्रिदोषशमनंतथा ॥ पवित्रमति

करी है वह कल्याणरूप हरडै हे राजन् नित्यप्रति आपका कल्याण करो ॥ ६ ॥ ग्रीष्म अर्थात् ज्येठ आषाढमें बराबर भाग गुड और सेंधानमकसे मिलाके, और वर्षा अर्थात् श्रावण भादुवामें खांडसे युत कर शरद् अर्थात् आश्विन कार्तिकमें आंवलासे, हेमंत अर्थात् मंगशिर पौषमें सूंठसे, शिशिर अर्थात् माघ फागुनमें पीपलसे, और वसंत अर्थात् चैत्र वैशाखमें शहदसे युत करी ऐसी हरड़ैको प्राप्त हो जैसे रोग नष्ट होते हैं तैसे आपके शत्रु नष्ट हो ॥ ७ ॥ वसंत ऋतुमें नहीं परिश्रम करनेमें रत, ग्रीष्मऋतुविषे दिनमें गर्म पवनसे प्यार करनेवाले, वर्षा ऋतुमें छोटी जोहड़ीका नया पानी पीनेवाले और कूवाका पानीसे वैर करनेवाले, शरद् ऋतुमें चर्चरा और खट्टा गर्म इन्होंको सेवनेवाले और दही खानेवाले, हेमंत ऋतुमें नींद और आलस्यवाले, और शिशिर ऋतु विषे शीतल पानीमें गोता मार न्हानेवाले ऐसे आपके शत्रु नष्ट हो ॥८॥ सुषेणदेव कहते हैं—तहां प्रथम संपूर्णको जिवानेवाला और द्रव्योंमें प्रधान

पथ्यंच गांगंवारिमनोहरम् ॥ ९ ॥ गांगम् ॥ तस्मात् किंचिद्गुरुतरं स्वादुपित्तापहंपरम् ॥ वातलंवह्निजननं रूक्षंचयमुनाजलम् ॥ १० ॥ यामुनम् ॥ अति स्वच्छंप्रशस्तंच शीतलंलघुलेखनम् ॥पित्तश्लेष्मप्रशमनं नार्मदंसर्वरोगहृत् ॥ ११ ॥ नार्मदम् ॥ कंडूकुष्ठप्रशमनं वह्निसंदीपनंपरम् ॥ पाचनंवातपित्तघ्नं वारिगोदावरीभवम् ॥ १२ ॥ गौदावर्यम् ॥ रूक्षंच शीतलंवारि वातरक्तप्रकोपनम् ॥ किंचिल्लघुतरंस्वादु कृष्णवेण्यासमुद्भवम् ॥१३॥ कृष्णावेण्युदकम् ॥ कावेरीसलिलंपथ्यमामघ्नंबलवर्णकृत् ॥ आग्नेयमतिशीतंच दद्रुकुष्ठविनाशनम् ॥ १४ ॥ कावेर्युदकम् ॥ त्रिदोषशमनंपथ्यं स्वादुहृद्यंचजीवनम् ॥

ऐसा पानीके गुण कहते हैं-गंगाजल स्वादुपाक और रसवाला है शीतल है त्रिदोषको शांत करता है पवित्र है अत्यंत पथ्य है और मनोहर है गंगाजलके ये गुण हैं॥९॥जमुनाजल गंगाजलसे कछुक भारी है स्वाद है पित्तको बहुत नाशता है वातको करता है अग्नीको जगाता है और रूखा है जमना जलके ये गुण हैं॥१०॥नर्मदाका पानी अत्यंत निर्मल है सुंदर है शीतल है लेखन है पित्त वातको शांत करता है और सब रोगोंको हरता है नर्मदाका जलके ये गुण हैं॥ ११॥ गोदावरीका पानी खाज और कुष्ठको शांत करता है अग्निको बहुत जगाता है पाचन है वात पित्तको नाशता है गोदावरीका जलके ये गुण हैं ॥ १२ ॥ कृष्णा वेणीका पानी रूखा है शीतल है वातरक्तको कोपता है कछुक हलका है स्वाद है कृष्णा जलके ये गुण हैं ॥ १३ ॥ कावेरीका पानी पथ्य है आम कोपको नाशता है बल और वर्णको करता है गर्मप्रकृति वाला है बहुत शीतल है दाद और कुष्ठको नाशता है कावेरीका जलके ये गुण हैं॥१४॥आकाशका पानी

आमक्रमपिपासाघ्नं दिव्यंवारिमनोहरम् ॥ १५ ॥
आकाशजलम्॥पूर्वदेशोद्भवानद्यःसर्वावातकफप्रदाः॥
पश्चिमाःपित्तलाःसर्वाः कफवातविनाशनाः ॥ १६ ॥
इतिसंक्षेपतःप्रोक्ता नद्यःक्षुद्रास्तुसंप्रति ॥ समुद्रमुद-
कंविस्रं सक्षारंसर्वदोषकृत् ॥१७॥ अचक्षुष्यंमदप्लीह
गुल्मोदावर्तनाशनम् ॥ तोयादीनांप्रवक्ष्यामि गुण-
दोषौविशेषतः ॥ १८ ॥ दिव्यांतरिक्षनादेयकौप
चौंडेयसारसम् ॥ ताडागमौद्भिदंशैलं जलमष्टविधं
स्मृतम् ॥ १९ ॥ शरत्पयोदनिर्मुक्तं महावैडूर्यस-
न्निभम् ॥ सर्वदोषापहंस्वादु दिव्यमित्युच्यतेज-
लम् ॥ २० ॥ प्रावृड्जलदनिर्मुक्तमव्यक्तस्वादुल-
क्षणम् ॥ वारिस्फटिकसंकाशमांतरिक्षमितिस्मृतम् २१

त्रिदोषको शांत करता है पथ्य है स्वादु है सुंदर है जीवन है आम ग्लानि तृषा इन्होंको नाशता है और मनोहर है आकाशका जलके ये गुण हैं॥१५॥ पूर्व देशसे उपजी सब नदी वात कफको देती हैं पश्चिमसे उपजी सब नदी पित्तको करती है कफ वातको नाशती हैं ऐसे संक्षेपसे छोटी नदीयावो कही ॥ १६ ॥ समुद्रका पानी कच्ची गंधवाला है खारा है सब दोषोंको करता है ॥ १७ ॥ आंखोंमें हित नहीं है मद प्लीहरोग गुल्म उदावर्त इन्होंको नाशता है पानी आदिके गुणदोषोंको विशेषसे कहते हैं ॥ १८ ॥ दिव्य आंतरिक्ष नादेय कौप चौंडच सारस ताडाग औद्भिद शैल ऐसे जल आठप्रकारका कहाता है॥१९॥ शरद् ऋतुके बादलोंसे गिरा सुंदर वैडूर्य-मणि सरिखा सब दोषोंको हरनेवाला और स्वादु ऐसा जल दिव्य कहाता है ॥२०॥वर्षाऋतुके बादलोंसे गिरा नहींप्रकटस्वादलक्षणोंवाला और स्फ-टिकपत्थरके समान कांतिवाला ऐसा पानी आंतरिक्ष कहाता है ॥ २१ ॥

नद्यांशैलप्रसूतायां गोमेदकमणिप्रभम् ॥ प्रश-
स्तभूमिभागस्थं जलंनादेयमुच्यते ॥ २२ ॥
भूम्युत्खातसमुद्भूतं महाशैलसमुद्भवम् ॥ विमलं
मधुरास्वादं कौपंजलमुदाहृतम् ॥ २३ ॥ स्वयंदी-
र्घशिलाश्वभ्रे नीलोत्पलदलप्रभम् ॥ लतावितान
संछन्नं चौंडेयमितिसंज्ञितम् ॥२४॥ नद्याःशैलवरा-
द्वापि स्रुतमेकांतसंस्थितम् ॥ कुमुदांभोजसंछन्नं वा-
रिसारसमुच्यते ॥ २५ ॥ प्रशस्तभूमिभागस्थं नैक
संवत्सरोषितम् ॥ कषायंमधुरास्वादं ताडागंसलिलं
स्मृतम् ॥ २६ ॥ शैलसानुसमुद्भूतं स्पृष्टंवातहिमा
तपैः ॥ लघुशीतामलस्वादु स्मृतंप्रास्रवणंजलम् २७
एतानिमाहिषोष्ट्राश्वगोमृगाजगजादिभिः॥अदूषितानि

पर्वतसे उपजीनदीमें गोमेद लहसनियां सरीखी कांतिवाला और सुंदर पृथि-वीके भागमें स्थित हुआ ऐसा जल नादेय कहाता है॥२२॥पृथ्वीको खोदनेसे उपजा तथा बडा पर्वतसे उपजा निर्मल मधुर स्वाद ऐसा जल कौप कहाता है ॥२३॥ आपही लंबी शिलाके छिद्रमें नीला कमलका पत्ता सरीखी कांति वाला हो लताओंके समूहसे ढकाहुआहो ऐसा जल चौंडच कहाता है ॥२४॥ नदीसे अथवा सुंदर पर्वतसे झिरकै एकांतमें स्थितहो और कुमोदनी कमलसे ढकाहुआ हो ऐसा जल सारस कहाता है ॥२५॥ सुंदर पृथिवीके भागमें स्थितहो अनेकवर्षसे स्थित हो कषैलाहो मधुरहो स्वाद नहीं ऐसा जल ताडाग कहाता है ॥ २६ ॥ पर्वतकी खोहसे उपजाहो पवन जाडा घाम इन्होंसे स्पृष्ट हुआहो हलका हो शीतल हो निर्मल हो और स्वादुहो ऐसा जल प्रास्रवण कहाता है ॥२७॥ भैंसा घोडा ऊंट गौ मृग बकरा और

पात्रेषु मृन्मयेषुविनिःक्षिपेत् ॥ २८ ॥ सर्वमाकाशजं वारि स्वादतोह्यनुमीयते ॥ पार्थिवंतुरसाविज्ञैर्भूमि भागेषुलक्ष्यते ॥२९॥ रक्तकापोतपीताभं पांडुश्वेता सितेषुच ॥ कट्वम्लतिक्तकक्षारकषायमधुरादि-भिः ॥ ३० ॥ नादेयंवातलंरूक्षं दीपनंलघुलेखनम् ॥ ताडागंवातलंस्वादु कषायंकटुपाकिच ॥३१॥ वात श्लेष्महरंवाप्यं सक्षारंकटुपित्तलम् ॥ चौंड्यमाग्नि-करंरूक्षं मधुरंकफकृत्तथा ॥ ३२ ॥ कफघ्नंदीपनंहृ द्यं लघुप्रस्रवणोद्भवम् ॥ सक्षारंपित्तलंकौपं श्लेष्मघ्नं वातजिल्लघु ॥ मधुरंपित्तशमनमविदाह्यौद्भिदंस्मृ-तम्॥३३॥कैदारंमधुरंप्रोक्तं विपाकेगुरुदोषलम्॥त-

हस्ती आदिकोंनें नहीं दूषितकिये ये जल माटीके पात्रोंमें घाल धरने॥२८॥ आकाशसे उपजा सब प्रकारका पानीका स्वादसे अनुमान किया जाता है पृथिवीसे उपजा पानी तो रस जाननेंवालोंनें पृथिवीके भागोंके अनुसार देखा है ॥२९॥ लाल कबूतरके समान पीली कान्तिवाला पांडुवर्ण सपेद और काला ऐसे रंगोंसे युतहुआ पानी चर्चरा खट्टा कडवा खारा कषैला मधुर इन आदि रसोंसे होते हैं ॥ ३० ॥ नादेय पानी वातको करता है रूखा है दीपन है हलका है लेखन है, ताडाग पानी वातको करता है स्वादु है कषैला है और चर्चरापाकवाला है ॥ ३१॥ बावडीका पानी वात कफको हरता है खार सहित है चर्चरा पित्तको करता है, चौंड्य पानी बुद्धिको करता है रूखा है मधुर है कफको करता है ॥ ३२ ॥ प्रस्रवण अर्थात् झिरनाका पानी कफको नाशता है दीपन है सुंदर है हलका है कौप संज्ञक पानी खार सहित है पित्तको करता है कफको हरता है वा-तको जीतता है हलका है, औद्भिद पानी मीठा है पित्तको शांत करता है दाहको नहीं करता है ॥ ३३ ॥ खेतका पानी मीठा है पाकमें भारी

द्वत्पाल्वलमुद्दिष्टं विशेषाद्दोषलंचतत् ॥ ३४ ॥ सर्वं दोषहरंहृद्यं निरवद्यंचजांगलम् ॥ पाकेविदाहितृष्णाघ्नं श्रमघ्नंप्रीतिवर्द्धनम् ॥३५॥ दीपनंस्वादुशीतंच तोयंसाधारणंलघु ॥ अनूपदेशजंवारि सांद्रंच गुरुपिच्छलम् ॥ मधुरंश्लेष्मजननं स्निग्धंवातादिकोपनम् ॥ ३६ ॥ जांगलानूपसाधारणोदकम् ॥ कौपं प्रास्रवणंवसंतसमये ग्रीष्मेतदेवोचितं कालेवानच वृष्टिजातमथवा चौंड्यंघनानांपुनः ॥ नीहारेसरसीतडागविषयं सर्वंशरत्संगमे सेव्यंसूर्यसितांशुरश्मिपवनव्याधूतदोषंपयः ॥ ३७ ॥ अव्यक्तरसगंधंयच्छस्तं वातातपापहम् ॥ यावन्नवांबुतत्पथ्यमन्यत्रक्कथितं

है दोषको करता है, छोटी जोहडीका पानीमें भी येही गुण हैं विशेषकर दोषोंको करता है ॥ ३४ ॥ जांगलदेशका पानी सब दोषोंको हरता है सुंदर है निंदित नहीं है पाकमें विशेष दाह करता है तृषा और परिश्रमको नाशता है प्रीतिको बढाता है ॥ ३५ ॥ साधारण देशका पानी दीपन है स्वादु है शीतल है हलका है अनूपदेशका पानी कठोर है भारी है और कफको बढानेवाला है मीठा है कफको उपजाता है चिकना है वात आदिको कोपता है जांगल अनूप साधारण देशके पानीकेये गुण हैं॥ ३६॥कौप और प्रास्रवण पानी वसंत और ग्रीष्मऋतुमें हित है, वर्षाऋतुमें वर्षासे उपजा पानी हित नहीं है किंतु चौंडय पानी हित है, शीतकालमें सरोवरका और तडागका पानी हित है, शरद् ऋतुमें सूर्य और चंद्रमाके किरनोंसे दूर किये दोषोंवाला सब प्रकारका पानी सेवित करना उचित है ॥ ३७ ॥ नहीं प्रकट रस और गंधवाला पानी वात पित्तको

पिबेत् ॥ घर्मसूर्येन्दुसंसक्तमहोरात्रात्परंत्यजेत् ॥३८॥ तच्चाव्यक्तरसंहिमंलघुतरंघर्मांशुमूर्छापहं तृष्णोष्मातपसांहरंश्रमहरं तंद्रातिनिद्रापहम् ॥ हृद्यं स्वादुविपाकदंस्मृतिकरं दाहौघविच्छेदनं दृष्टंदीर्घं बलायुषांधृतिकरं संजीवनंजीविनाम् ॥ ३९ ॥ विण्मूत्रंतृणनीलिकाविषयुतं तप्तंघनाफेनिलं दन्तग्राह्यमनार्त्तवंसलवणं सेवालकैःसंभृतम् ॥ लूताजंतुविमिश्रितंगुरुतरं पर्णौघपंकान्वितञ्चन्द्रार्कांशुसुगोपितंचनपिबेन्नीरंसदादोषलम् ॥ ४० ॥ प्रसन्नंस्वादुहृद्यंचपथ्यंसंतर्प्पणंलघु ॥ एकप्रदेशजंसेव्यंसदापर्युषितंजलम् ॥ ४१ ॥ कासश्वासातिसारज्वरकि-

नाशता है पवित्र पानी पथ्य है अन्य जगह उबाला पानीको पीवै ॥ ३८ ॥ गर्मी सूर्य चंद्रमा इन्होंसे संसक्त हुआ पानी दिनरात्रिसे परे त्यागै वह नहीं प्रकट रसवाला पानी शीतल है बहुत हलका है घाम मूर्च्छा तृषा गर्मी ताप परिश्रम तंद्रा नींद इन्होंको हरता है मनोहर है स्वादु है पाचक है स्मृति करता है दाहके समूहको काढता है हित है बल और आयुवालोंको धैर्य करता है प्राणियोंको जीवन है ॥ ३९ ॥ विष्ठा मूत्र तृण नीलिका विष इन्होंसे युत गर्म हुआ बहुत झागोंवाला भीतर ग्रहण किया विना समय वर्षा हुआ नमक सहित सिवाल मकडी कीडा आदि जंतु इन्होंसे मिला हुआ अत्यंत भारी पत्तोंका समूह और कीचडसे युत हुआ चंद्रमा और सूर्यसे रक्षित किया ऐसा पानीको मनुष्य नहीं पीवै यह सब कालमें दोषको करता है ॥ ४० ॥ एक देशका निर्मल पानी स्वाद है मनोहर है पथ्य है तृप्तिकारक है हलका है यह सब कालमें रात्रिका धरा वासी सेवना योग्य है ॥ ४१ ॥ खांसी श्वास अतिसार ज्वर किटिभ कुष्ठ कोठाका रोग कुष्ठ प्रमेह मूत्रग्रह

टिभकटीकोष्ठकुष्ठप्रमेहान्मूत्रग्राहोमदार्शःश्वयथुकृ-
मिवमीकर्णनाशाक्षिरोगान् ॥ येचान्येवातपित्त
क्षयकफजकृताव्याधयःसंतिजंतोस्तांस्तानभ्यासयो
गादपहरतिपयःपीतमंतेनिशायाः ॥ ४२ ॥ अंभ-
सांचुलकानष्टौपिबेदनुदिनंनरः ॥ नवनागबलंदद्या-
ज्जीवेद्वर्षशतंसुखी ॥ ४३ ॥ विगतघननिशीथेप्रात
रुत्थायनित्यंपिबतिखलुनरोयोघ्राणरंध्रेणवारि ॥ स-
भवतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्यतुल्योवलिपलितविहीं-
नःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ ४४ ॥ शीतांबुपूरितमुखःप्रति
वासरंयःकालत्रयेपिनयनद्वितयंजलेन ॥ आसिंचति
ध्रुवमसौनकदाचिदक्षिरोगव्यथाविधुरतांभजतेमनु-
ष्यः ॥ ४५ ॥ नादेयंनवमृद्घटप्राणिहितंसंततप्तमर्का-

मदरोग ववाशीर शोजा कृमिरोग छर्दि कानरोग नाकरोग आंखरोग और जो वात पित्त कफसे उपजे रोग मनुष्यके हों इन सबोंको रात्रिके अंतमें पीयाहुआ पानी नाशता है ॥ ४२ ॥ नित्यप्रति मनुष्य आठ चलू पानीको पीवै वह पानी नव हस्तियोंका बल देता है वह मनुष्य१०० वर्ष पर्यंत सुखी हुआ जीवता है ॥ ४३ ॥ जब अर्धरात्रिके समय बादल मेघ नहीं हो तब प्रभातमें उठ जो मनुष्य नाकके छिद्रसे पानी पीता है वह बहुत बुद्धिमान् नेत्रोंसे गरुडजीके समान शरीरमें बलि और सुपेद वालोंसे रहित तथा सब रोगोंसे मुक्त हुआ रहता है ॥ ४४ ॥ जो मनुष्य नित्य प्रति तीनों काल अर्थात् प्रभात मध्याह्न सायंकाल शीतल पानीसे मुखको पूरित रखकै और दोनों नेत्रोंको शीतल पानीसे सींचता है वह निश्चय कभी भी नेत्र रोगको नहीं प्राप्त होता है ॥ ४५ ॥ नवीन माटीका कल-शामें घाल धरा सूर्यके किरणोंसे तपायाहुआ रात्रिमें चंद्रमाके किरनोंसे

शुभ्रीरात्रौसंप्रतिपूर्यमिंदुकिरणैर्मंदानिलांदोलितम्॥
शीतंभिन्नमणिप्रभं लघुतयानास्तीतिशंकापहंपाट-
ल्योत्पलकेतकीसुरभितंसंसेवयेद्वारितत् ॥ ४६ ॥
रेरेरुद्रजटाटवीपरिमलव्यालोलभस्माविलंप्रोन्मज्ज-
त्सुरसुंदरीकुचतटेस्फारोच्छलच्छीकरम्॥धाराधौत-
करालितांबरतलंनिःशेषपापापहंगांगंतुंगतरंगभंगग-
हनंपानीयमानीयताम् ॥ ४७ ॥ स्वच्छंसज्जनचित्त
वल्लघुतरंदीनार्त्तवच्छीतलं पुत्रालिंगनवत्तथैवमधु
रंबालस्यसंजल्पवत् ॥ एलोशीरलवंगचंदनलसत्क-
र्पूरजातीफलंपाटल्योत्पलकेतकीसुरभितं पानीयमा-
नीयताम् ॥ ४८ ॥ पथ्यंदीपनपाचनंलघुतरंसश्वास-
कासापहंसिध्माध्माननवज्वरामशमनंश्लेष्मापहंवात-

पूरित किया मंद पवनसे आंदोलित किया ऐसा नादेय पानी शीतल और भिन्न मणिके समान कांतिवाला हो इसके समान अन्य पानी हलका नहीं है पाटला कमल केतकी इन्होंके फूलोंसे सुगंधित किया वह पानी सेवना ॥ ४६ ॥ रे रे सेवक महादेवकी जटारूप वनमें जो चंचलरूप भस्म उससे मैलाहुआ न्हाती हुई देवतोंकी स्त्रियोंके कुचतटोंपै स्वच्छ और प्रकाशित जलके किनकोंवाला धारासे धोये और करालित किये वस्त्र और शरीरवाला सब प्रकारके पापोंको नाशनेंवाला और ऊंचे तरंगोंसे वनको भंग करनेंवाला ऐसा गंगाजल लावो॥४७॥सज्जन मनुष्यका चित्तकी तरह निर्मल दीन मनुष्यके विलापकी तरह अत्यंत हलका पुत्रको गोद लेनेंकी तरह शीतल बालकका बोलनाकी तरह मधुर और इलायची खस लौंग चंदन कपूर जायफल पाटला कमल केतकी इन्होंसे सुगंधित किया ऐसा पानी लावो ॥ ४८ ॥ यह पानी पथ्य है दीपन है पाचन है बहुत हलका है श्वास खांसी हुचकी अफरा नवीन ज्वर आम इन्होंको शांत करता है

जित्॥संशुद्धौवरबस्तिशुद्धिकरणंहृत्पार्श्वशूलापहंगु ल्मारोचकपीनसेनिगदितंशीतोष्णमेतज्जलम्॥४९॥ पित्तोत्तरेपित्तरोगेपित्तासृक्कफपित्तयोः ॥ मूर्छाछर्दि- ज्वरेदाहेतृष्णातीसारपीडिते ॥५०॥ धातुक्षीणेविषा- र्त्तेचसन्निपातेविशेषतः॥ शस्त्रंविरोधिरोगेच शृतशीतं जलंसदा ॥ ५१ ॥ शस्त्रामृतंविषंवज्रंचत्वारोवारिणो गुणाः ॥ भुक्तांतरेचप्रत्यूषेअभुक्तेभोजनैःसह ॥५२॥ यन्मूलाव्याधयःसर्वेसंभवंतिभयावहाः ॥ तदेवभेषजं तेषांसिद्धिज्ञैःसंस्कृतंजलम् ॥ ५३ ॥ निहंतिश्लेष्मसं- घातंमारुतंचापकर्षति ॥ अजीर्णंजरयत्याशुपीतमु- ष्णोदकंनिशि ॥ ५४ ॥ वर्षासुनजलंग्राह्यंनादेयंबहु

कफको नाशता है वातको जीतता है शोधनमें अच्छी तरह बस्तिस्था- नको शुद्ध करताहै हृच्छूल और पसली शूलको नाशता है गुल्म अरो- चक पीनस इन्होंमें गर्म करकै शीतल किया देना कहाहै ॥ ४९ ॥ पित्तकी अधिकतावाला रोग पित्तरोग पित्तरक्त कफपित्त मूर्छा छर्दि ज्वर दाह तृषा अतीसार इन्होंसे पीडित ॥ ५० ॥ धातु क्षीणवाला विषसे पीडित इन्होंमें और विशेषकर सन्निपातमें और विरोधवाला रोगमें गर्म कर शीतल किया पानी सब कालमें देना ॥ ५१ ॥ शस्त्र अमृत विष और वज्र इस प्रकार ये ४ गुण पानीके हैं, भोजनके बीच बीचमें शस्त्ररूप है प्रभातमें अमृतरूप है भोजनसे पहले विषरूप है और भोजनके साथ वज्ररूप है ॥ ५२ ॥ सब प्रकारके भयंकर रोगोंका मूल पानी है सिद्धिको जाननेवालोंनें संस्कारको प्राप्त किया वही पानी रोगियोंको औषधरूप है ॥ ५३ ॥ रात्रिमें पीया गर्मपानी कफके समू- हको नाशता है और वातको दूर करता है अजीर्णको शीघ्र जराताहै॥५४॥ वर्षा ऋतुमें बहुत दोषकारक नादेय पानी नहीं लेना पकाके शीतल

दोषकृत् ॥ शृतशीतंत्रिदोषघ्नंव्युषितंतच्चदोषकृत् ॥
॥ ५५ ॥ तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनंचपित्तजित् ॥
कफेपादावशेषंतुपानीयंलघुदीपनम् ॥ ५६ ॥ दि-
वाशृतंतुयत्तोयंरात्रौतद्गुरुतांव्रजेत्॥ रात्रौशृतंतुदि-
वसेगुरुत्वमधिगच्छति ॥ ५७ ॥ पार्श्वशूलेप्रतिश्या-
येवातरोगेगलग्रहे ॥आध्मानेस्तिमितेकोष्ठेसदाशुद्धौ
नवज्वरे ॥ ५८ ॥ हिक्कायांस्नेहपीतेचशीतांबुपरिव-
र्जयेत् ॥५९॥ गुल्मार्शोग्रहणीक्षयस्यजठरेमंदानला-
ध्मानकेशोफेपांडुगलग्रहेव्रणगदेमोहेचनेत्रामये॥ वा-
तारुच्यतिसारकेकफयुतेकुष्ठेप्रतिश्यायकेउष्णंवारि
सुशीतलंशृतहिमंस्वल्पंप्रपेयंजलम् ॥ ६० ॥ तप्तायः
पिंडसंयुक्तंलोष्ठनिर्वापितंजलम् ॥ सर्वरोगहरंपथ्यंस

किया पानी त्रिदोषको नाशता है रात्रिका धरा वासी पानी दोषको करता है ॥ ५५ ॥ चौथाई भाग जलाया पानी वातको नाशता है आधा भाग जलाया पानी पित्तको जीतता है कफमें जलानेविषै चौथाई भाग शेष रहा पानी हलका है और दीपन है ॥ ५६ ॥ दिनमें पकाया पानी रात्रिमें भारीपनाको प्राप्त होता है रात्रिमें पकाया पानी दिनमें भारी-पनाको प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥ पशलीशूल प्रतिश्याय वातरोग गलग्र-ह अफरा स्तिमितकोष्ठ वमन जुलाब आदि शुद्धि नवीनज्वर ॥ ५८ ॥ हुचकी इन रोगोंमें और स्नेहको पीनेंवालेको शीतल पानी नहीं देना ॥ ५९ ॥ गुल्म ववाशीर ग्रहणीरोग क्षयरोग मंदाग्नि अफरा शोजा पांडु-रोग गलग्रह व्रणरोग मोह नेत्ररोग वातरोग अरुचि अतिसार कफरोग कुष्ठ प्रतिश्याय इन्होंमें गर्मकर शीतल किया पानी अल्प पीना योग्य है ॥ ६० ॥ तपायाहुआ लोहाका गोलासे संयुक्त किया तथा माटीका

दानैरुज्यकारकम् ॥ ६१ ॥ निरामोभोजनादर्वा-
क्पिबेद्वारिसुशीतलम्॥अजीर्णेतुपिबेद्वारिशीतलंस्वे-
च्छयापुनः ॥६२॥ क्वचिदुष्णंक्वचिच्छीतंक्वचित्क-
थितशीतलम् ॥ क्वचिद्भेषजसंयुक्तंनक्वचिद्वारिवार्यते
॥ ६३ ॥ तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुंच-
ति॥तस्मात्स्वल्पंचदातव्यंनक्वचिद्वारिवार्यते॥६४॥
पानीयंप्राणिनांप्राणाविश्वमेवहितन्मयम् ॥ अतोऽ
त्यंतनिषेधेपिनक्वचिद्वारिवार्यते ॥ ६५ ॥ मूर्च्छा-
पित्तोष्णदाहेषुविषेरक्तेमदात्यये ॥ भ्रमक्लमपरीते
षुतमकेवारिशीतलम् ॥ ६६ ॥ पिबेद्घटसहस्राणि
यावन्नास्तमितोरविः ॥ अस्तंगतेदिवानाथेबिंदुरेको

गोलाको अग्निमें तपा उसको पानीमें बुझावै यह पानी सब रोगोंको हरता है पथ्य है सब कालमें आरोग्य रखता है ॥ ६१ ॥ आमसे रहित हुआ मनुष्य भोजनसे पहले सुंदर शीतल पानीको पीवै अजीर्णमें शीतल पानीको वारंवार अपनी इच्छाके अनुसार पीवै ॥ ६२ ॥ कहींक गर्म कहींक शीतल कहींक उवालकर शीतल किया और कहींक औषधसे युत किया इस प्रकार पानी पीना. कहीं भी पानी नहीं वर्ज्जित करना ॥ ६३ ॥ तृषा वाला मोहको प्राप्त होता है और मोहसे प्राणोंको छोडता है तिस कारणसे स्वल्पपानी देना योग्य है कहीं भी पानी नहीं वर्जित करना ॥ ६४ ॥ प्राणियोंके प्राण पानी है यह संसार पानीसे बना है इसलिये अत्यंत निषेधमें भी कहीं पानी नहीं वर्ज्जित करना ॥ ६५ ॥ मूर्छा पित्तरोग गर्मी दाह विष रक्तरोग मदात्यय भ्रम ग्लानि तमक श्वास इन्होंमें शीतल पानी पीना ॥ ६६ ॥ दिनमें चाहे हजार घडे पानी पीवै कछु चिं

घटायते ॥ ६७ ॥ अजीर्णेचौषधंवारिजीर्णेवारिबल
प्रदम्॥भोजनेचामृतंवारिरात्रौवारिविषप्रदम् ॥६८॥
अत्यंबुपानान्नविपच्यतेऽन्नंनिरंबुपानाच्चसएवदोषः ॥
तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनार्थंमुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि६९॥
क्षुधासंशुष्कहृत्कंठःप्रथमंकवलान्बहून् ॥ नभुंक्ते
प्रपिबेदंबुशीतलंमात्रयायुतम् ॥ ७० ॥ तेनहृत्कंठ
शुद्धिःस्यात्सुखेनान्नंपतत्यधः॥ स्निग्धमुष्णंचयद्भुक्तं
ततःसंतर्पणंत्यजेत् ॥ ७१ ॥ आदौद्रावंसमश्नीया-
त्तत्रांबुनपिबेद्बहु॥मध्येतुकठिनंभुंक्तेयथेष्टंशस्यतेज-
लम् ॥७२॥ तथैवभोजनस्यांतेपीतमंबुबलप्रदम् ॥
द्रव्यप्रधानेभुक्तांतेकिंतुतन्मात्रयापिबेत् ॥ ७३ ॥
आदौजलंवह्निविनाशकारिपश्चात्तदंतेकफबृंहणंच ॥

ता नहीं परंतु रात्रिमें एक बूंद पानी भी घडाके समान माना है ॥६७॥
अजीर्णमें पानी औषध है जीर्ण हुआ भोजनमें पानी बलको देता है भो-
जनमें पानी अमृत है रात्रिमें पानी विषको देनेवाला है ॥ ६८ ॥ अ-
त्यंत पानी पीनेसे और नहीं पानी पीनेसे अन्न नहीं पकता तिस कार-
णसे मनुष्य अग्नीको बढानेंके लिये वारंवार अल्प पानीको पीवै ॥ ६९ ॥
भूखसे सूखा हुआ हृदय और कंठवाला मनुष्य प्रथम बहुतसे ग्रासोंको
खाकै शीतल और मात्रासे युत पानीको पीवै ॥ ७० ॥ उस करकै हृदय
और कंठकी शुद्धि होती है और सुखसे अन्न नीचेको गिरता है चिकना
और गर्म भोजन कर पीछे तृप्ति कारक पदार्थको त्यागै ॥७१॥ आदिमें पतला
पदार्थको खावै तहां बहुत पानीको नहीं पीवै मध्यमें कठिन पदार्थको खाकै
पीछे मनोवांछित पानी पीना श्रेष्ठ है ॥ ७२ ॥ तैसेही भोजनके अंतमें
पीया पानी बलको देता है द्रव्य प्रधानको भोजनकर अंतमें मात्रासे पानी
पीवै ॥ ७३ ॥ भोजनकी आदिमें पीया पानी अग्नीको नाशता है भो-

मध्येतुपीतंसमतासुखंचतस्याभियोगोऽभिमतःसकृ-च्च ॥ ७४ ॥ अमृतंविषमितिसलिलंवेदेनिगदंति विदिततत्वार्थाः ॥ युक्त्यासेवितममृतंविषमेतदयु-क्तितःपीतम् ॥ ७५ ॥ पूरयेद्भागयुगलंकुक्षौचान्नेन सुस्थितः ॥ जलेनैकंचतुर्थंचवायुसंचरणायवै ७६॥ ग्रासेग्रासेतुपातव्यंशीतलंवारिसर्वदा ॥ बहुवारियुतं चान्नमग्निपचतिसत्वरम् ॥ ७७ ॥ तस्मादादावति स्वल्पंमध्येचतृप्तिदायकम् ॥ मात्रायांचपिबेदंते नरोगैर्बाध्यतेनरः ॥ ७८ ॥ वासितंनूतनैःपुष्पैः पाटलीचंपकादिभिः ॥ पथ्यंसुगंधिहृद्यंचशीतलां-बुसदापिबेत् ॥ ७९ ॥ सुगंधिपाटलीपुष्पचं

जनके पीछे और अंतमें पीया पानी कफ और पुष्टिको करता है भोज-नके मध्यमें पीया पानी अग्निकी समानपनाके सुखको देता है वह पानी मध्यमें एकही वार पीना ॥ ७४ ॥ आयुर्वेदमें कुशल वैद्य पानी-को अमृत और विष ऐसे २ प्रकारसे मानते हैं युक्तिसे सेवित किया अमृत है और युक्तिके विना सेवित किया विष है ॥ ७५ ॥ सुंदर स्थित हुआ मनुष्य कुक्षिमें २ भागोंको अन्नसे पूरित करै तीसरा भागको पानी-से पूरित करै और चौथा भागको वायुका संचारके लिये शेष रक्खै ॥ ७६ ॥ सब कालमें शीतल पानी ग्रास ग्रासमें पीना योग्य है बहुत पानीसे युत हुआ अन्नको अग्नि शीघ्र पकाता है ॥ ७७ ॥ तिस कारणसे आदिमें अत्यंत अल्प और मध्यमें तृप्तिकारक और अंतमें १ मात्रासे पानी पीवै तो मनुष्य रोगोंसे पीडित नहीं होता ॥ ७८ ॥ पाटला और चंपा अर्थात् चमेलीआदिके नये फूलोंसे वासित किया पानी पथ्य है सुगंधित है मनोहर है ऐसे शीतल पानीको सदा पीवै ॥ ७९ ॥ सुंदर गंधवाले पाटला और चमेलीके फूलोंसे अधिवासित और कपूरसे सुगं-

पकैरधिवासितम् ॥ कर्पूरेणचयत्तोयंतत्पथ्यं सर्वदानृ
णाम्।८०।ग्रीष्मेशरदिपातव्यंस्वेच्छया सलिलंनरैः॥
अन्यदा स्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत् ॥ ८१ ॥
अन्नेनापिविनाजंतुः प्राणान्संधारयेच्चिरम् ॥ तोया
भावे पिपासातः क्षणात्प्राणैर्विमुच्यते ॥ ८२ ॥
आदिमध्यावसानेच भोजनेपयसायुते ॥ काइर्यसा-
त्म्यं तथा स्थौल्यंभवंति क्रमशो गुणाः ॥ ८३ ॥
पानीयंपानीयंशरदिवसंते च पानीयम्॥नादेयं नादेयं
शरदिवसंते च नादेयम् ॥८४॥ ॥ इत्यायुर्वेदमहो-
दधौश्रीसुषेणकृतेपानीयगुणाः समाप्ताः ॥ ॥ १ ॥
उसीरमांसीसकचूरएलालवंगकंकोलसवारिकुष्ठम् ॥
हरीतकी शीतशिवाच भागंजलाधिवासः पृथिवीश्व-

धित किया ऐसा पानी मनुष्योंको सब कालमें पथ्य है ॥ ८० ॥ ग्रीष्म और शरद ऋतुमें मनुष्योंने अपनी इच्छाके अनुसार पानी पीना अन्य ऋतुओंमें वात कफके भयसे अल्प पानी पीना ॥ ८१ ॥ अन्नके विना मनुष्य बहुत काल पर्यंत प्राणोंको धार सक्ता है परंतु पानी नहीं मिलनेंसे ततकाल मरजाता है ॥ ८२ ॥ भोजनकी आदि मध्य और अंतमें पानी पीवै तो क्रमसे कृशपना समपना और स्थूलपना ये गुण होते हैं ॥ ८३ ॥ शरद् ऋतुमें और वसंत ऋतुमें पूर्वोक्त कहा नादेय संज्ञक पानी पीना उचित है ॥ ८४ ॥ इस प्रकार श्रीयुत सुषेणका किया आयुर्वेद महोदधिमें पानीके गुण समाप्त हुये ॥१॥ खस जटामांसी कचूर इलायची लौंग कंकोल नेत्रवाला कूठ हरडै कपूर आंवला

राणाम् ॥ ८५ ॥ मांसीचंदनवालकद्वययुतं-भागद्वयंस्यात्ततो धात्री जातिपत्रीलवंगसहितं भा-गार्द्धंजातीफलम् ॥ कंकोलं च तमालपत्रत्रुटिभि-र्मुस्तासकर्पूरकैरेतैर्बालचतुष्ककुष्ठसहितंभागंतुसा-र्द्धंभवेत् ॥ ८६ ॥ उशीरधात्रीन्द्रविडंगकुष्ठैः सचं-दनैश्चोरकजातिपुष्पैः ॥ वरांगमुस्तैः सहपाटलैश्चक-र्पूरजातीति जलाधिवासः ॥ ८७ ॥ परिपेलव-चातुल्याराग्गुग्गुलमुस्तकैः ॥ चूर्णितासवयोपेता वारिभोजनधूपनम् ॥ ८८ ॥ कुष्ठमुस्तकसं-युक्तैः पेलयोशीरचंदनैः ॥ मृदितामृत्सु पिष्टै-स्तैः खादिरांगारपाचितैः ॥ ८९ ॥ सहकाररसा भ्यक्तैश्चंपकोत्पलपाटलैः ॥ पद्मकुष्ठककुंदैश्चपथ्यं

इन्होंका समान भाग देवै राजा लोगोंको यह जलाधिवास उत्तम है ॥ ८५ ॥ जटामांसी चंदन दोनों प्रकारका नेत्रवाला ये सब एक २भाग और आंवला जावित्री लौंग ये दो २ भाग जायफल आधा भाग कंकोल तेजपत्ता छोटीइलायची नागरमोथा कपूर कूठ ये सब आधा २ भाग यहभी राजा लोगोंको उत्तम जलाधिवास है ॥ ८६ ॥ खस आंवला इंद्रजव वायविडंग कूठ चंदन गठौना चमेलीके फूल दालचीनी नागरमोथा पाटला कपूर जावित्री इन्होंका जलाधिवास राजा लोगोंको उत्तम है ॥८७॥परिपेला और वच बराबर भाग और गूगल नागरमोथा ये सब चूर्ण आसव पानी भोजन धूप इन्होंमें लेने॥८८॥कूठ नागरमोथा परिपेला खस चंदन इन्होंके चूर्णको माटीमें मिला गोला बना खैरके कोइलोंकी अग्नीसे पका ॥ ८९ ॥ पीया बांसाके रससे युत किये चमेली कमल पाटला पद्माक कूठ कुंद हरडै इन्होंसे युतकिया अधिवासित राजा

कालाधिवासितम् ॥९०॥ श्रेष्ठः सलिलवासोयंस्मृतः सर्वर्तुको बुधैः ॥ लवंगोशीरकंकोलकांतानलदचंदनैः ॥ ९१ ॥ सलिलामयकंकोलपथ्याकर्पूरसंयुतैः ॥ विचूर्णितैः समैरेभिः सुशीतामलवारिणा अधिवासनमिच्छंति श्रेष्ठं सर्वर्तुकंबुधाः ॥ ९२ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृते जलाधिवासस्य विधिः ॥ २ ॥ इदानींक्षीरगुणाः कथ्यंते ॥ तत्रापि गव्यमाहिषयोरेवसदोपयोगित्वात्तयोरेवविचार्यते स्वरूपम् ॥ गव्यंहितंमेध्यतमंहि दुग्धं प्राणप्रदंपित्तसमीरणघ्नम् ॥ रसायनं वर्णकरं सुकेश्यमारोग्यहेतुः सततं नराणाम् ॥ १ ॥ क्षीरंसाक्षाज्जीवनं जन्मसात्म्यात्तद्धारोष्णं गव्यमायुष्यबल्यम् ॥

लोगोंको उत्तम है ॥ ९० ॥ यह सब ऋतुओंके योग्य जलाधिवास पंडितोंनें कहा है लौंग खस कंकोल मालकांगनी वालछड चंदन ॥९१॥ नेत्रवाला कूट कंकोल हरडै कपूर इन्होंके चूर्णोंको सुंदर शीतल आंवलाके पानीसे मिलावै यह सर्वर्तुक अधिवासन वैद्योंने माना है ॥ ९२ ॥ यहां श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेद महोदधिमें जलाधिवास विधि समाप्त हुई ॥ २ ॥ अब दूधके गुण कहते हैं—तहांभी गौका और भैंसका दूध सब कालमें उपयोगी होनेंसे उन दोनोंका स्वरूप विचारा जाता है—गौका दूध अत्यंत बुद्धिको देता है प्राणोंको देता है पित्तवातको नाशता है रसायन है वर्णको करता है वालोंमें हित है मनुष्योंको निरंतर आरोग्यका कारण है ॥ १ ॥ जन्मसेही प्रकृतिके योग्य होनेसे दूध साक्षात् जीवन है धारसेही गर्मरूप दूध आयु और बलमें हित है

प्रातः सायंग्राम्यधर्मावसानेभुंक्ते पश्चादात्मसा-
त्म्यंकरोति ॥ २ ॥ शीतलंमधुरंस्निग्धंवातपि-
त्तहरंपरम् ॥ वृष्यमोजस्करंहृद्यं श्लेष्मघ्नं चरसायनम्
॥ ३ ॥ पाके स्वादुरसेमेध्यंक्षयक्षीणे बलप्रदम् ॥
श्वासकासप्रशमनंश्रमभ्रममदापहम् ॥ ४ ॥ जीर्णे
ज्वरेमूत्रकृच्छ्रेरक्तपित्तेच शस्यते ॥ गवांपयः पवित्रं
चबल्यं पुष्टिप्रकारकम् ॥ ५ ॥ श्रेष्ठं चक्षुष्यमायु-
ष्यं कांतिलावण्यकारकम् ॥ ६॥ इति गोक्षीरम् ॥
माहिषं बलवर्णौजोनिद्राशुक्रबलप्रदम् ॥ तीक्ष्णाग्नि
शमनंस्वादुरसेपाकेचपुष्टिदम् ॥ १ ॥ व्यायामश्रां
तदेहस्यश्रमघ्नमनिलापहम् ॥ निष्कामस्यातिवृद्ध

प्रभात सायंकाल और स्त्री संगके अंतमें जो दूधको पीता है उसको अपनी प्रकृतिके योग्य करता है ॥ २ ॥ गौका दूध शीतल है मीठा है चिकना है वातपित्तको बहुत हरताहै वीर्यमें हित है पराक्रमको करता है सुंदर है कफको नाशता है और रसायन है ॥ ३ ॥ पाकमें स्वादु है रसमें शुद्ध है क्षयसे क्षीणमें बलको देता है श्वास खांसी परिश्रम भ्रम मद इन्होंको नाशता है ॥ ४ ॥ जीर्ण ज्वर मूत्रकृच्छ्र और रक्तपित्तमें श्रेष्ठ है गौवोंका दूध पवित्र है बलमें हित है पुष्टिको करता है॥५॥श्रेष्ठ है नेत्रोंमें हित है कांति और लावण्यको करता है ये गौका दूधके गुण हैं ॥ ६ ॥ भैंसका दूध बल वर्ण पराक्रम नींद वीर्यमें बल इन्होंको देता है तीक्ष्णाग्निको शांत करता है रसमें और पाकमें स्वादु है पुष्टिको देता है ॥ १ ॥ कसरतसे श्रांतहुआ शरीरवालाके परिश्रम और वातको नाशता है कामदेवसे रहितहुआ अत्यंत बूढाको

स्यस्त्रीषुकामप्रदायकम् ॥ बलिनस्तरुणस्यापि
विशेषात्कामदायकम् ॥ २ ॥ माहिषंक्षीरम् ॥
अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ॥ ना-
त्यंबुपानाद्व्यायामात्सर्वव्याधिहरंपयः ॥ ३ ॥
आजमग्निबलकृत्क्षयकासश्वासहानिलहरं परमंतत्॥
रक्तपित्तहरमाश्वतिसारे विस्वरेचाविहितंहितमेव॥४॥
॥ अजाक्षीरम् ॥ आविकंमधुरं स्निग्धं गुरुपित्तकफ-
प्रदम् ॥ पथ्यंकेवलवातेषुश्वासे चानिलसंभवे ॥५॥
अविक्षीरम् ॥ उष्ट्रीक्षीरं सुप्तिशोफाहरंतत्पित्तश्ले-
ष्माद्यर्शसां चप्रदिष्टम्॥ आनाहघ्नंचोदराणांचशस्तं
जंतुघ्नंवैशस्यतेसर्वकालम् ॥ ६ ॥ उष्ट्रीक्षीरम् ॥
उष्णमेकशफंबल्यंश्वासवातापहंपयः ॥ मधुराम्ल-

भी कामदेव देता है बलवाला और जवानको विशेषकर कामदेव देता है ये गुण भैसका दूधके हैं ॥ २ ॥ बकरियोंका छोटा शरीर होनेसे चर्चरा और कडुवाको सेवनेसे बहुत पानी नहीं पीनेंसे और बहुत चलने फिरनेंसे बकरीका दूध सब रोगोंको हरता है ॥ ३ ॥ बकरीका दूध अ-ग्नि बलको करता है क्षय खांसी श्वास वात इन्होंको हरता है रक्तपित्त-को शीघ्र हरता है अतिसारमें और विगडा स्वरमें हित कहा है बकरीका दूधके ये गुण हैं—॥ ४ ॥ भेडका दूध मीठा है चिकना है भारी है पि-त्त कफको देता है केवल वात रोगमें और वातके श्वासमें पथ्य है भेडका दूधके ये गुण हैं॥५॥ऊंटनीका दूध सुप्तिवात शोजा पित्त कफ आदि रोग ववाशीर आनाहरोग इन्होंको हरता है उदर रोगवालोंको श्रेष्ठ है कीडोंको नाशता है सब कालमें श्रेष्ठ है ऊंटनीका दूधके ये गुण हैं ॥ ६ ॥ एक खुरवालीका दूध बलमें हित है श्वास और वातको हरता है मीठा और खट्टा रस

रसंरूक्षंलवणानुरसंलघु॥७॥ खराश्वीक्षीरम् ॥ नार्या-
स्तुमधुरंस्तन्यंकषायानुरसंहिमम्॥नस्याश्चोतनयोः
पथ्यंजीवनंलघुदीपनम् ॥ ८ ॥ स्त्रीस्तन्यम् ॥ हस्ति
न्यामधुरंवृष्यंकषायानुरसंगुरु ॥ स्निग्धंस्थैर्यकरं
शीतंचाक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ॥९॥ हस्तिनीस्तन्यम् ॥
पयोभिष्यंदिगुर्वामंप्रायशः परिकीर्त्तितम् ॥ तदेवा-
तिशृतं विद्याद्गुरुतर्पणबृंहणम् ॥ १० ॥ वर्ज्ज-
यित्वास्त्रियाःस्तन्यमाममेव हि तद्धितम्॥ धारोष्ण-
ममृतंक्षीरंविपरीतमतोन्यथा ॥ ११ ॥ अनिष्टगंध
मम्लंच विवर्णविरसंचयत् ॥ ॥ वर्ज्यंसलवणंक्षीरंय-
च्चविग्रथितंभवेत् ॥ १२ ॥ धारोष्णममृतंपथ्यं धारा
शीतंत्रिदोषकृत् ॥ शृतशीतंत्रिदोषघ्नं शृतोष्णंकफ-

वाला है रूखा है पीछे नमकके समान रसवालाहै हलका है गधी और घोडीका दूधके ये गुणहैं ॥ ७ ॥ नारीका दूध मीठा है पीछे कषैला रस वाला है शीतल है नस्य और आश्चोतनमें पथ्य है जीवन है हलका है दीपन है स्त्रीका दूधके ये गुण हैं-॥ ८ ॥ हथनीका दूध मीठा है पुष्टिमें हित है पीछे कषैलारसवाला है भारी है चिकना है स्थिरताको करता है शीतल है नेत्रोंमें हित है बलको बढातांहै हथनीका दूधके ये गुण हैं ॥ ९ ॥ प्रायतासे कच्चा दूध कफकारक और भारी कहा है अत्यंत पकाया दूध भारी है तृप्तिकारक है पुष्टि करता है ॥१०॥ परंतु स्त्रीके दूधको वर्जकर क्योंकि स्त्रीका दूध कच्चाही हित है धारसे गर्म रूप दूध अमृतहै इस्से विपरीत दूध निषिद्ध है ॥११॥ बुरा गंधवाला खट्टा विगडा वर्णवाला विगडा रसवाला नमकसहित और जो गांठोंवाला हो वह दूध वर्जित करना उचित है ॥ १२ ॥ धारसे गर्मरूप दूध अमृत है पथ्य है धारसे शीतल

वातजित् ॥ १३ ॥ अथाविकंपथ्यतमंशृतोष्ण-
माजंपयोवाशृतशीतमेव ॥ धारासुशीतंमहिषीपय-
श्चधारोष्णमेवंहितमेवगव्यम् ॥ १४ ॥ पित्तघ्नंमाहि
षंक्षीरंवातघ्नमाविकंपयः ॥ वातपित्तहरंगव्यंत्रिदोष-
घ्नमजापयः ॥ १५ ॥ प्रायः प्राभातिकं क्षीरं
गुरुविष्टंभि शीतलम् ॥ रात्र्यां सौम्यगुण-
त्वाच्चव्यायामाभावतस्तथा ॥ १६ ॥ दिवाक-
राभितप्तानांव्यायामानिलसेवनात् ॥ वातपित्तश्र-
मघ्नंचचक्षुष्यंचापराह्णिकम् ॥ १७ ॥ वृष्यंबृंहणम-
ग्निवृद्धिजननं पूर्वाह्णकालेपयोमध्यान्हेबलदायकंर-
तिकरंकृच्छ्राश्मरीक्षोदनम् ॥ बालेष्वग्निकरंक्षयक्षय-

हुआ दूध त्रिदोषको करताहै पकाके शीतल किया दूध त्रिदोषको नाशता है पकाया हुआ गर्म पीया दूध कफ बातको जीतता है ॥ १३ ॥ पकाया हुआ गर्म रूपही भेडकादूध अत्यंत पथ्य है बकरीका दूध पकाके शीतलकिया पथ्य है धारोंसेही शीतल किया भैंसका दूध पथ्य है धारोंसेही गर्म रूप गौका दूध पथ्य है ॥ १४ ॥ भैंसका दूध पित्तको नाशता है भेडका दूध वातको नाशता है गौका दूध वात पित्तको नाशता है बकरीका दूध त्रिदोषको नाशता है ॥ १५ ॥ प्रायतासे प्रभातका दूध भारी है विष्टंभ वाला है शीतल है क्योंकि रात्रिमें सौम्य गुणसे और चलने फिरनेके अभावसे ॥ १६ ॥ सूर्यसे अभितप्त हुईयोंको चलने फिरनेंसे तथा वात-को सेवनेसे दुपहरा पीछेका दूध वात पित्त परिश्रम इन्होंको हरता है और नेत्रोंमें हित है ॥ १७ ॥ पहर दिन चढे पहलेका दूध वीर्यमें हित है पुष्टि करता है अग्नीको उपजाता है दुपहरका दूध बलको देता है रतिको करता है मूत्रकृच्छ्र और राकीपथे नाशता है रात्रिमें दूध बहुत

करंवृद्धस्यरेतोवहं रात्रौक्षीरमनेकदोषशमनं सेव्यं सदाप्राणिनाम् ॥ १८ ॥ भुक्तायेबहुतीव्रचंडविदलायेचाम्लतिक्तारसारूक्षक्षारविदाहशोषकपरा येचातितापप्रदाः ॥ काषायाःकटुरूक्षदुर्जरतराःसंसेव्यमानाहठात्ततत्सर्वंबलकृत्करोतितरसादुग्धंनिशासेवितम् ॥ १९ ॥ मुहूर्त्तपंचकादूर्ध्वंक्षीरंभजतिविक्रियाम्॥तदेवद्विगुणेकाले विषवद्धंतिमानवम् ॥२०॥तस्माच्छृतंवाप्यशृतंपयस्तात्कालिकंपिबेत् ॥ चतुर्भागजलंदत्वायत्नादावर्त्तितंपयः॥२१॥ अक्वथितं दशघटिकाःक्वथितं द्विगुणाश्चताः पयः पथ्यम् ॥ अथवा मधुररसाढ्यं यावत्तावत्पयः प्राश्यम् ॥ २२ ॥ तद्दद्याद्बलकृच्छ्रेष्ठंहितंसर्वरुजापहम् ॥ जीर्णज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतो

दोषोंको नाशता है बालकोंमें अग्नीको करता है क्षयको नाशता है बूढाको वीर्य देता है प्राणियोंको सब कालमें सेवना उचित है ॥ १८ ॥ बहुत तेज और चंडरूप दाल आदि खट्टा कडुवा रूखा खारा दाहकारक शोषकारक और अत्यंत ताप कारक कषैले चर्चरे रूखे और अत्यंत दुःखसे जरनेंवाले ऐसे जो जो पदार्थ हठसे सेवित किये हैं उन सबोंको रात्रिमें पीया दूध बलकारक करता है ॥ १९ ॥ पांच मुहूर्त्त अर्थात् १० घडीसे उपरांत दूध बिगड जाता है और दश मुहूर्तसे उपरांत धरा हुआ दूध विषकी तरह मनुष्यको मारताहै ॥ २० ॥ तिस कारणसे पकाया अथवा नहीं पकाया तत्कालका दूध उसी वक्त पीना चौथा भाग पानी मिला जतनसे आवर्तित कर दूध पीना॥२१॥नहीं पकाया दूध दशघडीतक और पकाया दूध वीशघडीतक पथ्य है अथवा जबतक मधुर रसवाला दूध रहै तबतक पीना उचित है ॥ २२ ॥ श्रेष्ठ दूध देना

पमम् ॥२३॥ तदेवतरुणेपीतं विषवद्धंतिमानवम् ॥
येषांनसात्म्यंक्षीरेणपीतंचाध्मानकारकम् ॥२४॥ ते-
षामर्द्धजलंदत्वानागरंपिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तये-
त्क्षीरशेषंतत्पीत्वासुखमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ पूर्वाह्णे
प्रपिबेद्गव्यमपराह्णेतुमाहिषम् ॥ सशर्करंस्वेच्छया
वायेषांसात्म्यं सदाभवेत् ॥ २६ ॥ आदौमध्येनच
ग्रासेग्रासस्यांतेकदाचन ॥ सर्वंतन्मानशेषंतुपयःपेयं
सदानरैः ॥ २७ ॥ पित्तघ्नं शृतशीतलंकफहरंपक्वं
नदुष्टंपुनः शीतंसद्धनपाचितंतदखिलं विष्टंभदोषाप-
हम् ॥ धारोष्णंत्वमृतंपयः श्रमहरंनिद्राकरंकांतिदं-
वृष्यं बृंहणमग्निवर्द्धनमितिस्वादुत्रिदोषापहम् ॥२८॥

बलको करता है हित है सब प्रकारके रोगोंको नाशता है जीर्णज्वरमें और क्षीण हुआ कफमें दूध अमृतके समान है ॥ २३ ॥ तरुणज्वरमें पीया दूध विषकी तरह मनुष्यको मारता है जिनको दूध नहीं सुहाता हो और पीनेमें अफारा करता हो ॥ २४ ॥ उन्होंको दूधमें आधा भाग पानी मिला सूंठ और पीपलका चूर्ण डाल अग्नी पै पकावै जब दूधमात्र शेष रहै तब उतार पीवै सुख प्राप्त होता है ॥ २५ ॥ पहर दिन चढे पहले गौका दूध पीना तीसरे पहर भैंसका दूध पीना जिन्होंको दूध सुहाता हो उन्होंनें खांड सहित अथवा अपनी इच्छाके अनुसार दूध पीना ॥ २६ ॥ आदिमें मध्यमें नहीं ग्रासमें और ग्रासके अंतमें कभीभी नहीं सब प्रकारका दूध प्रमाणित कर मनुष्योंनें सदा पीना ॥ २७ ॥ पकाके शीतल किया दूध पित्तको हरता है पका हुआ जो दुष्ट न हो वह दूध कफको हरता है बहुत पकाके शीतल किया दूध विष्टंभ दोषको हरता है धारसे गर्मरूप दूध अमृत है परिश्रमको हरता है नींदको करता है कांति देता है वीर्यको बढाता है पुष्टिको करता है अग्नीको बढाताहै

क्षीरभुक्तंनभुंजीतगोधूमान्नेनमानवः ॥ पिष्टान्नेनापि-
नाश्नीयान्नदध्नालवणेनवा ॥ २९ ॥ नमाषैर्नच-
मुद्गैर्वानगुडेनफलेनवा ॥ भूकंदैर्नचशाकैश्चमत्स्य-
मांसादिभिर्नच ॥ ३० ॥ पायसंभक्षयेद्युक्त्यात-
त्पक्वंहिसमंपिबेत् ॥ एणैर्मृगैर्मयूरैश्चतित्तिरीभिः क-
पिंजलैः ॥ ३१ ॥ सर्वैर्जांगलमांसैश्चपयोनप्रतिषि-
ध्यते ॥ वृष्यंहृद्यंचपथ्यंचतत्पीत्वानिलनाशनम्
॥ ३२ ॥ स्निग्धत्वाद्गौरवाज्जाड्यात्रिकालंनापिबे-
त्पयः ॥ समाग्निरपिकिंचान्योमंदाग्निर्विषमोथवा
॥ ३३ ॥ तीक्ष्णाग्नेर्ननुपातव्यंद्विकालमपिमाहिष-
म् ॥ तस्यधातून्पचत्याग्निर्यदातेन नसिंचति ॥ ३४॥
क्षीरंहितंश्रेष्ठरसायनंचक्षीरंवपुर्वर्णबलायुषंच ॥ क्षीरं

स्वादु है त्रिदोषको नाशता है ॥ २८ ॥ दूधके भोजनेको गेहूं अन्नके संग नहीं खावै पिसा अन्न दही अथवा नमक इन्होंके संगभी नहीं खावै ॥ २९ ॥ उडद मूंग गुड फल जमीकंद शाक मछलीका मांस आदि इन्होंके संगभी दूधका पदार्थ नहीं खाना॥ ३०॥खीरको युक्तिसे खावे लाल मृग मृग मोर तीतर सुपेद तीतर इन्होंके संग खीरको पीवै ॥ ३१ ॥ सब प्रकारके जांगल देशके जीवोंके मांसोंके संग दूधका निषेध नहीं है खीर वीर्यमें हित है सुंदर है पथ्य है पीनेसे वातको नाशती है ॥ ३२ ॥ चिकना पनासे भारीपनासे और जडपनासे तीनोंकाल दूध नहीं पीवै सम अग्नि वालाभी मंदाग्नि और विषमाग्निवालाकी कौन कथा है ॥ ३३ ॥ तीक्ष्ण अग्निवालाने दो काल भैंसका दूध पीना जब वह भैंसका दूध नहीं पीता है तब उसके अग्नि धातुओंको पकाता है ॥ ३४ ॥ दूध हित है श्रेष्ठ रसायन है शरीरका वर्ण बल और आयुको करता है मनुष्योंके अव-

हिचायुष्यकरं नराणांक्षीरंवयःस्थापनमुत्तमञ्च३५॥ क्षीरंहिसंदीपनवेदनीयं क्षीरंहिचोष्णंमलशोधनंच ॥ क्षीरंहिसंधानकृदुष्णशीतंक्षीरंकवोष्णं मलनाशनंच ॥ ३६ ॥ मत्स्यमांसगुडमुद्गमूलकैःकुष्ठमावहति सेवितं पयः ॥ शाकजांबवसुरासवेप्सितंमारयत्यबुधमाशुसर्पवत् ॥ ३७ ॥ अम्लेष्वामलकं पथ्यं लवणेषुचसैंधवम् ॥ कषायेष्वभयाप्रोक्ताकटुवर्गेतथार्द्रकम् ॥ ३८ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृतेक्षीरवर्गः ॥ ३ ॥ अथ दधिगुणाः ॥ पवित्रमतिशीतंचदीपनंबलवर्द्धनम् ॥ वातघ्नंमधुरं रूक्षंदधिगव्यंमनोहरम् ॥ १ ॥ स्निग्धंविपाकेमधुरं दीपनंबलवर्द्धनम् ॥ वातापहं पवित्रंचदधिगव्यं रु-

स्थाको स्थित करनेमें उत्तम है ॥ ३५ ॥ दूध अग्निको जगाता है गर्म दूध मलको शोधता है गर्मकर शीतल किया दूध टूटेको जोड़ता है अल्पगर्म दूध मलको नाशता है ॥ ३६ ॥ मछली मांस गुड़ मूंग मूली इन्होंके साथ सेवित किया दूध कुष्ठको करता है शाक जामनका रस मदिरा आसव इन्होंके संग सेवितकिया दूध मूर्खको सर्पकी तरह शीघ्र मारता है ॥ ३७ ॥ अम्लपदार्थोंमें आंवला पथ्य है नमकोंमें सेंधानमक पथ्य है कषैलोंमें हरड़े पथ्य हैं कटु अर्थात् चर्चरागणमें अदरक पथ्य है ॥ ३८ ॥ यह श्रीसुषेणवैद्यका किया आयुर्वेदमहोदधिमें दूधवर्ग समाप्त हुआ॥ ३॥ अब दहीके गुण कहते हैं—गौका दही पवित्र है अत्यंत शीतल है दीपन है बलको बढाता है वातको नाशता है मीठा है रूखा है सुंदर है॥ १॥ पाकमें चिकना है मीठा है दीपन है बलको बढाता है वातको नाशता है

चिप्रदम् ॥ २॥ अरोचकेपीनसकासकृच्छ्रेशीतज्वरे तद्विषमज्वरेच ॥ दुर्नामरोगग्रहणीगदे वा गव्यंप्रशस्तंदधिसर्वदैव ॥ ३ ॥ शरद्ग्रीष्मवसंतेषु निंदितं दधिदोषकृत् ॥ हेमंतेशिशिरेचैव वर्षाकालेबलप्रदम् ॥ ४ ॥ गोदधि ॥ विपाकेमधुरंवृष्यं रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ बलसंवर्द्धनं वृष्यांविशेषान्माहिषं दधि ॥ ५॥ स्निग्धं मधुरशीतंच बलवर्णकरं गुरु ॥ वृष्यंमेदस्करं स्वादुश्रमघ्नंवातनाशनम् ॥ ६ ॥ श्लेष्मामवर्द्धनं चैवसरंपुष्टिकरंतथा ॥ पथ्यंतीक्ष्णंच दहनं माहिषं दधिकांतिदम् ॥ ७ ॥ माहिषंदधि बलासकारकंवह्निमांद्यकरमाशु गुरुत्वम् ॥ तत्प्रयोज्यकटुकैरव

पवित्र है और रुचीको देता है ॥ २ ॥ अरोचक पीनस खांसी मूत्रकृच्छ्र शीतज्वर विषमज्वर ववाशीर ग्रहणी रोग इन्होंमें सदाही गौका दही श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥ शरद् ग्रीष्म वसंत इन ऋतुवोंमें दही निंदित है दोषको करता है हेमंत शिशिर वर्षा इन ऋतुओंमें दही बलको देता है ॥ ४ ॥ भैंसका दही पाकमें मीठा है वीर्यमें हित है रक्त पित्तको साफ करता है विशेष कर बलको बढाता है ॥ ५ ॥ चीकना है मीठा है शीतल है बल और वर्णको करता है भारी है पुष्टिको करता है मेदको करता है स्वादु है परिश्रमको और वातको नाशता है ॥ ६ ॥ कफ और आमको बढाता है सर है पुष्टिकारक है पथ्य है तीक्ष्ण है दाहकारक है कांतिको देता है ॥७॥ भैंसका दही कफको करता है मंदाग्निको शीघ्र करता है भारी है चर्चरे पदार्थोंके चूर्णसे युत किया भैंसका दही हलकापनको प्राप्त

चूर्णमाहिषं च लघुतामुपयाति ॥ ८ ॥ माहिषं दधि ॥ दध्याजंकफपित्तनाशनकरं वातघ्नमुष्णंतथा दुर्नामश्वसनेचकासविहितंचाग्नेश्चसंदीपनम् ॥ वृष्यं वृंहणकांतिदंबलकरं सर्वामयध्वंसनंकार्श्येवाप्यति सारके निगदितं पथ्यंसदाप्राणिनाम् ॥ ९ ॥ कासश्वासहरं रुच्यंशोफातीसारनाशनम् ॥ आग्नेयंसर्वदोषघ्नं विशेषाच्छागजंदधि ॥ १० ॥ अजा-दधि ॥ आविकं मधुरं स्निग्धं गुरुपित्तकफप्रदम् ॥ पथ्यंकेवलवातेषुशोफेचानिलशोणिते ॥ ११ ॥ सर्वदोषकरं दूष्यंकंडूकुष्ठविवर्द्धनम् ॥ कृमिदुर्नाम-कृत्स्वादुविनिंद्यंचाविकंदधि ॥ १२ ॥ मेषी दधि ॥ वाजिजंसमधुरं बलवर्णस्वेददाहमुपयातिवि-नाशम् ॥ दीपनीयमिवदोषलं सदाचाक्षुषंच

होता है॥८॥ बकरीका दही कफपित्तको नाशता है वातको हरता है गर्म है बवाशीर श्वास खांसी इन्होंको नाशता है अग्नीको दीपन करता है वीर्यमें हित है पुष्टिको करता है कांतिको देता है बलको करता है सब रोगोंको नाशता है कृशपना अतीसार इन्होंमें मनुष्योंको सदा पथ्य कहा है ॥ ९ ॥ बक-रीका दही खांसी और श्वासको हरता है रुचीमें हित है शोजा सहित अतीसारको नाशता है गर्म है विशेष कर सब दोषोंको नाशता है ॥१०॥ भेडका दही मीठा है चीकना है भारी है पित्तकफको देता है केवल वात शोजा वातरक्त इन्होंमें पथ्य है ॥ ११ ॥ सब दोषोंको करता है दुष्ट है खाज और कुष्ठको बढाता है कीडे और बवाशीरको करता है स्वादु है विशेषकर निंदित है ॥ १२ ॥ घोडीका दही मीठा है बलवर्ण पसीना दाह इन्होंको नाशता है दीपन है दोषकारक है नेत्रोंमें हित नहीं है वा-

मरुतः प्रविकोपि ॥ १३ ॥ तुरगीदधि ॥ वा-
तार्शकुष्ठकृमिनाशनंचह्यौष्ट्रं विपाकेकटुकं सति
क्तम् ॥ सक्षारमम्लंकृमिकोष्ठकोपकृद्बल्यंचसंत-
र्प्पणमाशुकारि ॥ १४ ॥ ॥ उष्ट्रीदधि ॥ गुरु-
मुष्णंकषायं च कफमूत्रापहंचतत् ॥ स्निग्धं विपाके
मधुरंबल्यंसंतर्प्पणं गुरु ॥ १५ ॥ चाक्षुष्यंग्राहिदो-
षघ्नंदधिनार्या गुणोत्तमम् ॥ ॥ स्त्रीदधि ॥ लघुपाके
बलासघ्नंवीर्योष्णं पित्तनाशनम् ॥ कषायानुरसंना-
ग्यादधिवर्चोविवर्द्धनम् ॥ १६ ॥ ॥ हस्तिनीदधि ॥
विज्ञेयमेवं सर्वेषांगव्यमेवगुणोत्तमम् ॥ वातघ्नंकफ
कृत्स्निग्धं बृंहणंनातिपित्तकृत् ॥ १७ ॥ कुर्या
द्भक्ताभिलाषंच दधिमस्तुबलप्रदम् ॥ शृत

तको कुपित करता है ॥ १३ ॥ ऊंटनीका दही वातकी बवासीर और कृमियोंको नाशता है पाकमें चर्चरा है कडवाहै खारसहित है खट्टा है कृमियोंको कोठामें कुपित करता है बलमें हितहै तृप्तिको शीघ्र करता है॥ १४॥ स्त्रीका दही सर है गर्म है कसैला है कफको और मूत्रको नाशता है चीकना है पाकमें मीठा है बलमें हित है तृप्तिकारक है भारी है ॥१५॥ नेत्रोंमें हित है मलको बांधता है दोषको नाशता है गुणोंमें उत्तम है हथिनीका दही पाकमें हलका है कफको नाशता है गर्म वीर्यवाला है पित्तको नाशता है पीछे कसेलारसवाला है मलको बांधनेवाला है ॥ १६ ॥ सब दहियोंमें गौका दही गुणोंमें उत्तम है वातको नाशताहै कफको करता है चीकना है पुष्टिको करता है अत्यंत पित्तको नहीं करता है ॥ १७ ॥ दहीकी मलाई भोजनमें इच्छा करती है बलको देती

क्षीरेचयज्जातंगुरुवद्दधितत्स्मृतम् ॥ १८ ॥ वातपित्तहरंरुच्यंधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥दधिसारोगुरुर्वृष्योविज्ञेयोनिलनाशनः ॥१९॥ बस्तेर्विशोधनश्चापि कफपित्ताविवर्द्धनः ॥ दधित्वसाररूक्षंचग्राहिविष्टंभि वातलम्॥दीपनीयंलघुतरंसकषायंरुचिप्रदम् ॥२०॥ तृष्णाक्लमहरंमस्तुलघुस्रोतोविशोधनम् ॥ अम्लंकषायंमधुरमवृष्यंकफवातनुत् ॥ २१ ॥ आल्हादनं बृंहणंचभिनत्त्याशुमलंचतत् ॥ बलमावहतिक्षीरंभुक्च्छंदंकरोतिच ॥ २२ ॥ बल्यंशोफकफाग्निमांद्य जननंरक्तप्रदंशुक्रदंरूक्षारोचकपीनसे विषमकेशीत ज्वरेतन्मतम् ॥ अम्लंस्याद्रसपाकतोगुरुतरंवातापहं शीतलंग्राह्युष्णं ग्रहणीगदेनिगदितंविण्मूत्रकृ-

है गर्म दूधमें उपजा दही भारी कहा है ॥ १८ ॥ वातपित्तको हरता है रुचीमें हित है धातु अग्नि बल इन्होंको बढाता है दहीका सार भारी है वीर्यमें हित है वातको नाशता है ॥ १९ ॥ मूत्राशयको शोधता है कफ पित्तको बढाता है सारसे रहित दही रूखा है मलको बांधता है विष्टंभवाला है वातको करता है दीपन है अत्यंत हलका है कसैला है रुचीको देता है ॥ २० ॥ मस्तु तृषा और ग्लानिको हरता है नाडीके स्रोतोंको शोधता है खट्टा है कसैला है मीठा है वीर्यमें हित नहीं है कफ वातको दूर करता है ॥ २१ ॥ आनंद देता है पुष्टिको करता है मलको शीघ्र नाशता है बल और दूधको देता है और भोजनमें रुचि करता है॥२२॥ बलमें हित है शोजा कफ मंदाग्नि इन्होंको उपजाता है रक्त और वीर्यको देता है रूखापन अरोचक पीनस विषमज्वर शीतज्वर इन्होंमें हित है रसमें और पाकमें खट्टा है अत्यंत भारी है वातको नाशता है शीतल

च्छ्रापहम् ॥ २३ ॥ ग्रहण्यांपीनसेमूत्रकृच्छ्रेचविषम
ज्वरे ॥ अरोचकेचमंदाग्नौशस्यतेदधिसर्वदा ॥२४॥
लवणमरिचसर्पिःशर्करामुद्गधात्रीकुसुमरसविहीनंनै-
वहृद्यंननित्यम् ॥ नचशरदिवसंतेनोष्णकालेनरात्रौ
नदधिकफविकारेपित्तरोगेनदद्यात् ॥ २५ ॥ एलासैं
धवशर्करासमरिचंधात्रीगुडंसर्पिषापथ्यंस्याद्वरमुद्ग-
सूपसहितंसंसेवनीयंदधि ॥ नैवोष्णंबहुमंदजंनचशर-
द्ग्रीष्मेवसंतेहितंपित्ताऽसृग्ज्वरकुष्ठदंभ्रमकरंवीसर्पदं
चान्यथा॥२६॥दधिदोषगुणाः॥दधित्रिकटुकयुक्तंरा
जिकाचूर्णमिश्रंकफहरमनिलघ्नंचाग्निसंधुक्षणीयम्॥तु
हिनशिशिरकालेसेवनीयं च पथ्यंभवति सुदृढकायो

है मलको बांधता है ग्रहणीरोग मलकाबंधा मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाश-
ता है ॥ २३ ॥ ग्रहणीरोग पीनस मूत्रकृच्छ्र विषमज्वर अरोचक
और मंदाग्नि इन्होंमें सदा दही श्रेष्ठ है ॥ २४ ॥ नमक मिरच घी खांड
मूंग आंवला फूल रस इन्होंसे रहित दही नहीं खाना नित्य प्रति नहीं
खाना शरद् ऋतु वसंतऋतु ग्रीष्मऋतु रात्रि कफका विकार पित्तरोग
इन्होंमें नहीं देना ॥ २५ ॥ इलायची सेंधानमक खांड मिरच आंवला
गुड़ घी सुंदर मुंगोंकी दाल इन्होंसे युत किया दही सेवना उचित है
गर्म नहीं हो बहुत कमजामा दही हित नहीं शरद ग्रीष्म और वसंत
ऋतुमें सेवित किया दही पित्तरक्त ज्वर कुष्ठ इन्होंको देता है भ्रमको
करता है अन्य प्रकारसे सेवित किया दही विसर्प रोगको देता है ॥२६॥
सूंठ मिरच पीपल राई इन्होंका चूर्णसे युत किया दही कफको हरता है
वातको नाशता है अग्नीको जगाता है शीतलकालमें सेवना पथ्य है

रूपवान् सत्ववांश्च ॥ २७ ॥ सगुडदधिसुखोष्णं धौतवस्त्रेण सम्यग्युवतिकरविलासैर्गालितं धूपितं तत् ॥ शशिसममपिविश्वाजाजिचूर्णेन मिश्रमधिककरविलासैः सेवितंमर्दितंच ॥ २८ ॥ दधितरुणमपथ्यं पथ्यसंपुष्टिहेतोर्बलकरमतिवृष्यंमेहकृद्दीपनीयम् ॥ कफकरमनिलघ्नंनातिपित्तप्रकोपं तदनिशमतिसेव्यं माधुरंचाम्लभावात् ॥ २९ ॥ मधुरंभक्षयेच्चैवह्यत्यम्लंवर्जयेत्सदा ॥ मधुरंदधिरोगघ्नमत्यम्लं रोगकारकम् ॥ ३० ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेदधिवर्गःसमाप्तः॥४॥इदानींमस्तुगुणाःकथ्यंते॥ स्रोतःशुद्धिंविधत्तेप्रकटयतिरुचिं दीपयत्याशुवह्निं कृत्वाशुद्धिंमलानांजरयतिसहसाभुक्तमन्नंविचित्रम्॥ उष्णंसाम्लंकषायंलघुसुरभिसरंशूलविष्टंभहारिश्रेष्ठं-

इस्से दृढ शरीरवाला रूपवाला और बलवाला मनुष्य हो जाता है ॥ २७ ॥ गुड़ सहित सुखपूर्वक गर्म दहीको धोया हुआ वस्त्रसे अच्छी तरह जवान स्त्रीके हाथसे छाना और धूपितकर चंद्रमाका वर्ण सरीखा उस दहीमें सूंठ और जीराका चूर्ण मिला मर्दित कर सेवै ॥२८॥ तरुण दही अपथ्य और संपुष्टिके हेतुसे पथ्य है, मीठा दही बल करता है अत्यंत पुष्टि करता है प्रमेहको करता है दीपन है कफको करता है वातको नाशता है पित्तको कुपित नहीं करता है खट्टाभावसे यह दही सदा सेवना ॥ २९ ॥ मीठा दही खाना, अत्यंत खट्टा दही वर्जित करना, मीठा दही रोगको नाशता है अत्यंत खट्टा दही रोगको करता है ॥ ३० ॥ यहां श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेद महोदधिमें दधिवर्ग समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ अब मस्तुके गुण कहते हैं—मस्तु अर्थात् दहीका पानी स्रोतोंको

मस्तुप्रशस्तंकफपवनरुजांदुष्टमूत्रग्रहेषु॥ १॥ लघ्वन्ने
रुचिपक्तिदंक्लमहरंबल्यंकषायंसरंभक्तच्छंदकरं तृषो-
दरगरप्लीहार्शशोफापहम्॥वांतेशुद्धिकरंकफानिलह-
रंविष्टंभशूलापहं पांडोर्मूत्रविकारगुल्मशमनंमस्तुप्र-
शस्तंलघु॥ २ ॥ लघुत्वाद्दीपनत्वाच्चविष्टंभाध्मा-
ननाशनात्॥ स्रोतःशुद्धिकरत्वाच्चतक्रादपिविशिष्य
ते ॥ ३ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृते
मस्तुवर्गः ॥ ॥ इदानींतक्रगुणाःकथ्यंते ॥ घो-
लंमथितमुदश्वित्तक्रंचैतच्चतुर्विधंज्ञेयम् ॥ सर-
संनिर्ज्जलमाद्यंस्यादंभोवर्जितं मथितम् ॥ १ ॥
पादसलिलमुदश्वित्तदर्द्धजलं तक्रमाहुश्च ॥ ग-

शोधता है रुचीको देता है अग्नीको शीघ्र दीपन करता है मलोंकी शुद्धि कर भोजन किया विचित्र अन्नको शीघ्र जराता है गर्म है खट्टा है कसैला है हलका है सुगंधित है सर है शूल और विष्टंभको हरता है श्रेष्ठ है कफ वातके रोग और दुष्ट मूत्रग्रह इन्होंमें श्रेष्ठ है ॥ १ ॥ हलका है अन्नमें रुचीको देता है अन्नका पाक करता है ग्लानीको हरता है बलमें हित है कसैला है सर है भोजनमें रुची करता है तृषा उदररोग कृत्रिम विष तिल्लीरोग बवाशीर शोजा इन्होंको नाशता है वमनमें शुद्धि करता है कफ वात विष्टंभ शूल पांडुरोग मूत्रविकार गुल्म इन्होंको नाशता है श्रेष्ठ है हलका है ॥ २ ॥ हलकापनसे और दीपनपनेंसे विष्टंभ और अफराको नाश करनेंसे और स्रोतोंकी शुद्धि करनेसे मस्तु तक्रसे उत्तम है ॥ ३॥ यहां आयुर्वेद महोदधिमें मस्तुवर्ग समाप्त हुआ ॥५॥ अब तक्रके गुण कहते हैं—घोल मथित उदश्वित् तक्र ऐसे चार प्रकारका जानना। रस-सहित हो और पानीसे रहित हो वह घोल होता है; पानीसे रहित मथित होताहै ॥ १ ॥ चौथाई भाग पानी सहित उदश्वित् होताहै;आधा पानी सहित

व्यंतुदीपनंतक्रं मेध्यमर्शास्त्रिदोषनुत् ॥ २ ॥ माहिषंश्लेष्मलंतक्रं सांद्रंशोफकरंगुरु ॥ हंतिगुल्ममतीसारं प्लीहार्शोग्रहणीगदान् ॥ ३ ॥ सुस्निग्धंछागलंतक्रं लघुदोषत्रयापहम् ॥ गुल्मार्शोग्रहणीशोफपांड्वामयविनाशनम् ॥ ४ ॥ घोलंमारुतपित्तहारिमथितं वातापहंश्लेष्महृत्पित्तश्लेष्मविनाश्युदश्विदधिकं तक्रं त्रिदोषापहम् ॥ मंदाग्नावरुचौतथैवनितरामन्येषुरोगेष्वपि श्रेष्ठंतक्रमिदंवदंतिमुनयस्तेनोत्तमंप्राणिनाम् ॥ ५ ॥ यथासुराणाममृतंप्रधानं तथानराणांभुवि तक्रमाहुः ॥ अम्लेनवातंमधुरेणपित्तं कफंकषायेण निहन्तिसद्यः ॥ ६ ॥ वातश्लेष्मविनाशनंरुचिकरं कृच्छ्राश्मरीछेदनं मूत्राघातहरंप्रमेहशमनं प्लीहादि-

तक्र होता है; गौका तक्र दीपन है पवित्र है बवाशीर और त्रिदोषको दूर करता है ॥ २ ॥ भैंसका तक्र कफको करता है कठोर है भारी है गुल्म अतीसार तिल्लीरोग बवाशीर ग्रहणीरोग इन्होंको नाशता है॥ ३ ॥ बकरीका तक्र सुंदर चीकना है हलका है त्रिदोषको नाशता है गुल्म बवाशीर ग्रहणी रोग शोजा पांडुरोग इन्होंको नाशता है ॥ ४ ॥ घोल वात पित्तको हरता है; मथित वातको हरता है कफको हरता है; उदश्वित् पित्त कफको हरता है; तक्र त्रिदोषको हरता है; मंदाग्नि अरुचि और अन्य रोग इन्होंमें श्रेष्ठ है ऐसे मुनि कहते हैं तिस कारणसे मनुष्योंको तक्र उत्तम है ॥ ५ ॥ जैसे देवतोंको अमृत प्रधान है तैसे पृथिवीमें मनुष्योंको तक्र कहा है; खट्टा पदार्थके संग वातको, मीठा पदार्थके संग पित्तको और कसैला पदार्थके संग कफको शीघ्र नाशता है ॥ ६ ॥ तक्र वात कफको नाशता है रुचीको करता है मूत्रकृच्छ्र पथरी मूत्राघात प्रमेह

गुल्मापहम् ॥ दुर्नामोदरपांडुरोगजठरक्रूरार्त्तिनिष्कृं-
तनंतक्रंपाचनदीपनंलघुतरंपथ्यंसदाप्राणिनाम्॥ ७॥
आमातिसारेचविपूचिकायां वातज्वरेपांडुषुकामला-
याम् ॥ प्रमेहगुल्मोदरवातशूलेनित्यंपिबेत्तक्रमरोच-
केच ॥८॥ तक्रंस्वादुकषायमम्लकरसं भक्ष्येलघिष्ठं
हितं गुल्माशःपरिणामशूलशमनं छर्दिप्रसेकापहम् ॥
तृष्णारोचकशोफमेदगरजिच्छ्लेष्मानिलघ्नंपरं सेव्यं
मूत्रगदापहंज्वरहरं स्नेहोत्थपिंडापहम् ॥ ९ ॥
शीतकालेग्निमांद्येच कफोत्थेष्वामयेषुच ॥ मार्गा-
वरोधेदुष्टेच वायौतक्रंप्रशस्यते ॥ १० ॥ तत्पुनर्म-
धुरंश्लेष्मप्रकोपनमतःपरम् ॥ वातघ्नंपित्तशमनम-
म्लंचेत्पित्तकृत्सदा ॥ ११ ॥ वातेऽम्लंसैंधवोपेतं

तिल्ली आदि रोग गुल्म बवाशीर अतीसार रोग पांडुरोग उदररोग इ-
न्होंको नाशता है पाचन है दीपन है अत्यंत हलका है सब कालमें मनु-
ष्योंको पथ्य है ॥ ७ ॥ आमातिसार विषूचिका वातज्वर पांडुरोग का-
मलारोग प्रमेह गुल्म उदररोग वातशूल और अरोचक इन्होंमें नित्य-
प्रति तक्रको पीवै ॥ ८ ॥ तक्र स्वाद है कसैला है खट्टा रसवाला है भो-
जनमें हलका है हित है गुल्म बवाशीर परिणाम शूल छर्दि प्रसेक इन्हों-
को नाशता है तृषा अरोचक शोजा मेद कृत्रिमविष इन्होंको जीतता है
कफ वातको जरूर नाशता है मूत्ररोग ज्वर स्नेहकी फुनसी इन्होंको ना-
शता है सेवित करना उचित है ॥ ९ ॥ शीत कालमें मंदाग्निमें कफसे
उपजे रोगोंमें मार्गोंके रुकनेमें और दुष्टहुआ वायुमें तक्र श्रेष्ठ है
॥१०॥ मीठा तक्र कफको कोपता है वातको नाशता है पित्तको शांत करता है
खट्टा तक्र सब कालमें पित्तको करता है ॥११॥ वात रोगमें सेंधानमकसे युत

स्वादुपित्ते सशर्करम् ॥ पीत्वा तक्रं कफे वापि व्योषक्षा-
रसमन्वितम् ॥ साजाजिलवणं तक्रं सर्वकालेषु शस्य-
ते॥१२॥स्थौल्यं करोति हरतेऽनिलमेतदेव यन्नोष्णता
मुपगतं न कदाचिदेव ॥ सर्पिःसितामलकमुद्गकषाय-
युक्तं सेव्यं वसंतशरदागमकालवर्ज्यम्॥१३॥ नवनी-
तोद्धृतं मथितं कथयंति समगुणं सुधियः ॥ चिरम-
थितं मथितं पुनरुत्पत्तिकरं न कस्य दोषस्य ॥ १४ ॥
नैव तक्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ॥ नमूर्च्छाभ्र-
मदाहे पुनरोगे रक्तपैत्तिके ॥ १५ ॥ शशिकुंदसम-
प्रभशंखनिभं युवतीकरनिर्मथितं मथितम्॥परिपक्व-
सुगंधकपित्थरसं पिब हे नृप सर्वरुजापहरम्॥१६॥हेमं-
ते शिशिरे पिबेत्तु मथितं तक्रं वसंते ऋतौ नैदाघे चक्र-

किया तक्र पीना पित्त रोगमें खांड सहित स्वाद तक्र पीना कफरोगमें सूंठ मिरच पीपलका चूर्णसे युत किया तक्र पीना जीरा और नमकसे युत किया तक्र सब कालोंमें श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ बुढापाको करता है वातको हरता है गर्म किया तक्र निंदित है; घी मिश्री आंवला मूंगका काथ इन्होंसे युत किया तक्र सेवित करना परंतु वसंत और शरद्-ऋतुमें नहीं सेवना ॥ १३ ॥ नौंनी घी निकाश मथित कियाकोभी वैद्य समान गुणवाला कहते हैं; बहुतकाल पर्यंत मथित किया मथित फिर किसी दोषकोभी नहीं उपजाता है ॥ १४ ॥ क्षतरोग गर्मकाल दुर्बल मनुष्य मूर्छा भ्रम दाह रक्तपित्त रोग इन्होंमें तक्रको नहीं देना॥ १५ ॥ चंद्रमा और कुंदका फूलके समान कांतिवाला और जुवान स्त्रीका हाथसे मथित किया मथितको और पका हुआ सुगंधित कैथके रसको हे राजन् पीवो सब रोगोंको नाशता है ॥ १६ ॥ हेमंत और शिशिर-

वुदश्विद्‌धुचितंस्याद्घोलकं प्रावृषि ॥ शस्तंस्यान्मिलितं घनांतसमयेस्यात्कालसेयंतथा सोयंषट्सुऋतुष्वपि प्रणिहितः स्यात्तक्रपानक्रमः ॥१७॥ मथितं गोरसंघोलंद्रवमम्लंविलोडितम्॥श्वेतंदंडाहतं सांद्रंनामतःपरिकीर्त्तितम् ॥ १८॥ द्विगुणांबुस्वेदमिदमर्द्धोदकमिति स्मृतम् ॥ तक्रंत्रिभागभिन्नंतुकेवलं मथितंस्मृतम्॥ १९ ॥तक्रस्योपरियत्तोयमुदश्वित्परिकीर्त्तितम् ॥दध्नोह्यधस्तुयत्तोयं तन्मस्तुपरिकीर्त्तितम्॥२० ॥ ग्राहिणीवातलारूक्षादुर्ज्जरातक्रकूर्चिका ॥ तक्राल्लघुतरोमंडःकूर्चिकादधितक्रवत् ॥२१ ॥ तक्रौदनेस्थौल्यकरेदधिस्याद्दध्योदने तक्रमतीवपथ्यम् ॥ क्षीरौदनेते विषवत्प्रकल्पेतयोः

ऋतुमें मथितको पीवै; वसंत ऋतुमें तक्रको पीवै ग्रीष्म ऋतुमें उदश्वित्को पीवै वर्षा ऋतुमें घोलको पीवै शरद् ऋतुमें मिलित तथा कालसेयको पीवै ऐसे छः ऋतुओंमें तक्रका पीना कहा है ॥ १७ ॥ मथित गोरस घोल द्रव अम्ल विलोडित श्वेतदंडाहत सांद्र इन नामोंसे तक्र कहा है ॥ १८ ॥ द्विगुणांबु स्वेद अर्द्धोदक ये सब तक्रके भेद हैं; चौथाई भाग पानीवाला मथित होता है ॥ १९ ॥ तक्रके ऊपर जो पानी हो वह उदश्वित् कहाता है दहीके नीचे जो पानी हो वह मस्तु कहाता है ॥ २० ॥ तक्रकूर्चिका मलको बांधती वातको करती है रूखी है दुःखसे जरती है; तक्रसे मंड अत्यंत हलका है कूर्चिका दही और तक्रके समान है ॥ २१ ॥ तक्र और पके चावल मुटापा करते है, तहां दही पथ्य है दही चावल खानेमें तक्र अत्यंत पथ्य है दूध चावल खानेमें दही और तक्र विषके समान है तक्र चावल और दही चावल

प्रयोगेविषवत्पयश्च॥२२॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्री-
सुषेणकृतेतक्रवर्गः समाप्तः ॥६॥ अतः परं नवनीत-
गुणाःकथ्यंते॥शीतंवर्णबलप्रदंसुमधुरंवृष्यंचसंग्राह-
कंवातघ्नं कफकारकं रुचिहरंहृद्यंत्रिदोषापहम् ॥
कामाध्वश्रमशांतिदं रतिकरंकांतिप्रदंपुष्टिदम् ॥ स-
द्यस्कंनवनीतमुद्धृतमिदंस्यात्सर्वरोगापहम् ॥ १ ॥
शीतंबलाढ्यंमधुराम्लवृष्यंश्लेष्मापहं पित्तमरुत्प्रणा-
शम्॥ शोककृशक्षीणक्षयाऽतिवृद्धाबालेषुपथ्यं नव-
नीतमुष्णम् ॥ २ ॥गव्यंवामाहिषंवापिनवनीतंनवो-
द्धृतम् ॥ शस्यतेबालवृद्धेषुबलकृद्धातुवर्द्धनम् ॥ ३ ॥
शीतंवर्णबलप्रदंसमधुरं संग्राहिवह्निप्रदंहृद्यंश्वासज-
रापहं क्षयहरं पित्तास्रवातापहम् ॥ कासार्शोर्दित

खानेमें दूध विषके समान है ॥ २२ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयु-
र्वेदमहोदधिमें तक्रवर्ग समाप्त हुआ ॥६ ॥ इसके अनंतर नौंनीघीके गुण
कहे जाते हैं– तत्काल निकाशाहुआ नौंनीघी शीतल है वर्ण और
बलको देता है सुंदर मीठा है वीर्यमें हित है मलको बांधता है वातको
नाशता है कफको करता है रुचीको करता है मनोहर है त्रिदोषको
नाशता है स्त्रीसंग और मार्ग चलनेके परिश्रमको शांत करता है रतिको
करता है कांति और पुष्टिको देता है और सब रोगोंको नाशता है॥ १ ॥
गर्म नौंनीघी शीतल है बलको देता है मीठा है खट्टा है वीर्यमें हित है
कफको नाशता है पित्त वातको नाशता है शोकी माड़ा क्षीण क्षय-
वाला अत्यंत बूढा और बालक इन्होंको पथ्य है ॥ २ ॥ गौका अथवा
भैंसका नया नौंनीघी बालक और बूढोंको श्रेष्ठ है बलको करता है
धातुको बढाता है ॥ ३ ॥ भैंसका तत्कालनिकाशा नौंनीघी शीतल

शोकशोफशमनं स्रस्तांगपीडापहंसद्यस्कंनवनीतमा-
हिषमिदंस्यात्सर्वरोगापहम् ॥ ४ ॥ इत्यायुर्वेदमहो-
दधौ श्रीसुषेणकृतेनवनीतवर्गः॥७॥अथघृतवर्गः॥धी-
कान्तिस्मृतिकारकंबलकरंमेधाप्रदंशुद्धिकृद्वातघ्नं श्र-
मनाशनंस्वरकरं पित्तापहंपुष्टिदम् ॥ वह्नेर्वृद्धिकरं
विपाकमधुरं वृष्यंचशीतंसदा सेव्यंगव्यमिदंघृतं
बहुगुणं सद्यःसमावर्त्तितम् ॥ १ ॥ सर्पिर्गवांचाप्य-
मृतंविषघ्नं चक्षुष्यमारोग्यकरंचवृष्यम्॥ रसायनंमंद-
मतीवमेध्यं स्नेहोत्तमंचेतिबुधाःस्तुवंति॥२॥इति गो-
घृतम् ॥ सर्पिर्माहिषमुत्तमंधृतिकरं सौख्यप्रदंकांति-
दं वातश्लेष्मनिबर्हणंबलकरं वर्णप्रसादक्षमम् ॥ दु-

है वर्ण और बलको देता है मीठा है मलको बांधता है अग्निको देता है सुंदर है श्वास बुढापा क्षय पित्त रक्त वात खांसी बवाशीर लकवा वात शोक शोजा अंगकी पीड़ा इन्होंको नाशता है और सब रोगोंको नाशता है ॥ ४ ॥ यहां श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेदमहोदधिमें नवनीत-वर्ग समाप्तहुआ ॥ ७ ॥ अब घृतवर्ग कहते हैं– गौकाघी बुद्धि कांति स्मृति बल इन्होंको करता है शुद्धबुद्धिको देता है शु-द्धिको करता है वातको नाशता है परिश्रमको नाशता है स्वरको करता है पित्तको नाशता है पुष्टिको देता है अग्नीको बढाता है पाकमें भी मीठा है वीर्यमें हित है सब कालमें शीतल है ऐसे बहुत गुणोंवाला तत्काल शुद्धकिया गौका घी सेवित करना ॥ १ ॥ गौओंका घी अमृत है विष-को नाशता है नेत्रोंमें हित है आरोग्य करता है वीर्यमें हित है रसायन है अल्प लिया अत्यंत बुद्धिमें हित है स्नेहोंमें उत्तम है ऐसे पंडित स्तुति करते हैं ॥ २ ॥ भैंसका घी उत्तम है धैर्यको करता है सुखपना और

र्नामग्रहणीविकारशमनं मंदानलोद्दीपनं चक्षुष्यं नचगव्यतःपरमिदं हृद्यंमनोहारिच॥३॥ माहिष्यंत-न्मानुषाणांचशस्तंबल्यंवृष्यंवह्निशुद्धिंकरोति॥मेदो-द्भूतंमेहकृत्तस्थौल्यकारि तस्मान्नित्यंनित्यकालं निषेव्यम्॥४॥इति महिषीघृतम् ॥ दीपनीयमजास-र्पिश्चक्षुष्यंबलवर्द्धनम् ॥ कासेश्वासेक्षयेवापि पथ्यं पानेषुतल्लघु॥५॥इत्यजाघृतम् ॥ आविकंघृतमतीव-गुरुत्वाद्वर्ज्यमेवसुकुमारनराणाम् ॥ सद्यएवबल-पुष्टिकरंस्यादुष्ट्रजंश्वयथुनाशकरंच ॥ ६ ॥ गव्यंसु पाचितंसर्प्पिर्वातपित्तकफापहम् ॥ यथाक्षीर-गुणं मेषीछागीगर्द्दभिकाघृतम् ॥ ७ ॥ औष्ट्रक-

कांतिको देता है वात कफको नाशता है बलको करता है वर्णको निर्मल करता है बवासीर ग्रहणी रोग इन्होंको नाशता है मंदाग्निको जगाता है परंतु जैसा गौका घी नेत्रोंमें हित सुंदर और मनोहर है ऐसा यह नहीं है ॥ ३ ॥ भैंसका घी मनुष्योंको उत्तम है बलमें हित है वीर्यमें हित है शुद्ध बुद्धिको करता है मेदको करता है प्रमेहको करता है बुढापाको करता है तिस कारणसे नित्य प्रति सेवना उचित है ॥ ४ ॥ बकरीका घी दीपन है नेत्रोंमें हित है बलको बढाता है खांसी श्वास और क्षय इन्होंमें पथ्य है पीनेमें हलका है ॥ ५ ॥ भेडका घी अत्यंत भारी है इस लिये सुकुमार मनुष्योंको वर्जित करना उचित है, तत्कालही बल और पुष्टिको करता है ऊंटनीका घी शोजाको नाशता है ॥ ६ ॥ सुंदर पकाया गौका घी वात पित्त कफको नाशता है भेंडी बकरी गधी इन्होंका घी इन्होंका दूधके समान गुणोंवाला है ॥ ७ ॥ ऊंठनीका घी पाकमें

टुघृतंपाके श्लेष्मक्रिमिविषापहम् ॥ दीपनंकफवा-
तघ्नं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ८ ॥ पाकेलघ्वाश्विकंस
र्पिर्नचपित्तप्रकोपनम्॥कफेऽनिलेयोनिदोषे शोषेकं-
पेचतद्धितम् ॥ ९ ॥ पाकेलघूष्णंवीर्येचकषायंकफ-
नाशनम्॥दीपनंवलमूत्रंचविद्यादेकशफंघृतम्॥१०॥
इत्यौष्ट्रादिघृतम्॥चक्षुष्यमग्र्यंस्त्रीणांचसर्पिःस्यादमृ-
तोपमम्॥वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम् ११॥
स्त्रीघृतम् ॥ कषायंबद्धविण्मूत्रं तिक्तमग्निकरंलघु ॥
करेणुजंहंतिसर्पिः कफकुष्ठविषक्रिमान् ॥१२॥ इति
हस्तिनीघृतम् ॥ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृते
घृतवर्गः ॥७॥ इदानींतैलगुणाःकथ्यंते॥उष्णंविपाके
कटुकंसतीक्ष्णंकफापहंवातनिवारणंच ॥ कृमीन्नि-

चर्चरा है कफ कृमि विष इन्होंको नाशता है दीपन है कफ वातको
नाशता है कुष्ठ गुल्म उदररोग इन्होंको नाशता है ॥ ८ ॥ घोड़ीका घी
पाकमें हलका है पित्तको नहीं कुपित करता है कफ वात योनिदोष शोष
कंप इन्होंमें हित है ॥ ९ ॥ गधी घोड़ी आदि एकखुरवालीका घी पा-
कमें हलका है वीर्यमें गर्म है कसैला है कफको नाशता है दीपन है बल
और मूत्रको देता है॥ १० ॥ स्त्रियोंका घी नेत्रोंमें हित है उत्तम है अमृ-
तके समान है शरीरको और अग्नीको बढाता है पाकमें हलका है विषको
नाशता है ॥ ११ ॥ हथिनीका घी कसैला है मलमूत्रको बंध करता है
कड़वा है अग्नीको करता है हलका है कफ कुष्ठ विष कृमि इन्होंको ना-
शता है ॥ १ ॥ यहां श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेदमहोदधिमें घृतवर्ग
समाप्त हुआ॥७॥अब तेलके गुण कहे जाते हैं–तेल गर्म है पाकमें चर्चरा है

हन्याद्बलशुक्रकारितैलंकृमिश्लेष्ममरुत्प्रणाशि ॥१॥
कंडूहरंकांतिविवर्द्धनंचवर्चोविवृद्धिंव्रणरोपणंच ॥ति-
लस्यजातंखलुयच्चतैलंबालेषुवृद्धेष्वपिपथ्यमेतत् २
नपित्तरोगेनचशोणितेचपथ्यंमहावातविकारसंघे॥ति
लोद्भवंतैलमुदाहरंतिवाताश्रितान्हन्तिसमस्तदोषान्
॥३॥कट्वम्लवीर्यंबहुपित्तकारि विण्मूत्रसंगंकुरुतेऽग्नि-
दीप्तिम्॥पामादिदोषापहरंचतैलमभ्यंगतःसर्षपसंभवं
च ॥४॥ कटूष्णंसार्षपंतैलंकफशुक्राऽनिलापहम् ॥
लघुशुक्रशकृत्स्पर्शात्कुष्ठाशोव्रणजंतुजित् ॥ ५ ॥
एरंडतैलंकृमिनाशनंचसर्वत्रशूलघ्नमरुत्प्रणाशम् ॥
कुष्ठापहंचापिरसायनंचापित्तप्रकोपानलशोधनंच ॥
॥ ६ ॥ सतिक्तोषणमेरंडतैलंस्वादुसरंगुरु ॥ वर्ध्म-

तीक्ष्ण है कफको नाशता है वातको दूर करता है कीड़ोंको नाशता है बल वीर्यको करता है कृमि रोग कफ वात इन्होंको नाशता है ॥ १॥ तिलोंका तेल खाजको हरता है कांतिको बढाता है मलको बढाता है घावपै अंकुर लाता है बालक और वृद्धोंको यह पथ्य है।२।पित्तका रोगऔर रक्त रोगमें पथ्य नहीं है महावात रोगके समूहमें पथ्य है. तिलोंसे उपजाको तेल कह-ते हैं यह वातसे उपजे सब दोषोंको नाशता है ॥ ३ ॥ खिरसमका तेल चर्चरा खट्टा वीर्यवाला है बहुत पित्तको करता है मल मूत्रको बंधकरता है अग्नीको दीप्त करता है और मालिसकरनेसे पाम आदि रोगोंको नाशता है ॥ ४ ॥ खिरसमका तेल चर्चरा है गर्म है कफ वीर्य वात इन्होंको नाशता है हलका है वीर्य और मलके स्पर्शसे कुष्ठ बवाशीर घाव कृमि इन्होंको जीतता है ॥ ५ ॥ अरंडका तेल कीड़ोंको नाशता है सब जगह शूल और वातको नाशता है कुष्ठको नाशता है रसायन है

गुल्मानिलकफानुदरंविषमज्वरम् ॥७॥ रुक्शोफौ चकटीगुह्यकोष्ठपृष्ठाश्रयौजयेत् ॥तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलंविस्रंरक्तैरंडोद्भवंत्विति ॥ ८ ॥ आमवातगजेंद्राणांशरीरवनचारिणाम् ॥एकएवाग्रणीर्हंताह्येरंडस्नेहकेसरी ॥ ९ ॥ कौसुंभतैलंकृमिनाशनंचतेजोबलदृष्टिविनाशनंच॥खर्ज्वाश्चकंड्वाश्चकरोतिकोपंत्रिदोषजंचापिबलक्षयंच ॥ १० ॥ अरुष्करंतैलमिदंचपुंसां सर्वामयघ्नंकृमिकुष्ठनुद्भृशम् ॥ मेधाबलवीर्यकरंनराणां व्रणंचपूतिप्रदभिन्नतारम् ॥ ११ ॥ लेपात्करंजतैलंचदृष्टिरोगविनाशनम् ॥ कुष्ठेचपामाभिन्नानां सर्ववातविनाशनम् ॥ १२ ॥ इतिकरंजतैलम् ॥ ॥ तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटकाविनाशनम् ॥ कुष्ठपाम-

पित्तको कुपित करता है अग्निको शोधता है ॥६॥ अरंडका तेल कड़वा है चर्चरा है स्वाद है सर है भारी है वर्ध्मरोग गुल्मवात कफ उदररोग विषमज्वर॥७॥कटि गुदा कोठा पीठ इन्होंकी पीड़ा और शोजा इन्होंको जीतता है तीक्ष्ण है गर्म है पिच्छिल है कच्ची गंधवालाहै ॥८॥ शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवातरूपगजेंद्रोंको अकेलाही अरंडका तेल सिंहरूप अग्रणी होके नाशता है ॥ ९ ॥ कसूंभा अर्थात् करड़ का तेल कृमियोंको नाशता है तेज बल नेत्र इन्होंको नाशता है खाज पाम त्रिदोषका कोप और बलका नाश इन्होंको करता है ॥१० ॥ भिलावाका तेल पुरुषोंके सब रोगोंको नाशता है कृमि कुष्ठको अत्यंत दूर करता है मनुष्योंके बुद्धि बल वीर्यको करता है दुर्गंधित घावको अच्छा करता है ॥ ११ ॥ लेपसे करंजुवाका तेल दृष्टिरोगको नाशता है कुष्ठ पाम सब वात इन्होंको नाशता है ॥१२॥ रालका तेल विस्फोटकको नाशता है कुष्ठ पाम कृमि कफ वातके रोग इन्होंको

क्रिमिहरंहन्याच्छ्लेष्मानिलामयान् ॥ १३ ॥ आक्षं
स्वादुहिमंकेश्यंगुरुपित्तानिलापहम् ॥ नात्युष्णं
निंबजंतैलंक्रिमिकुष्ठविषापहम् ॥ १४ ॥ व्यायाम-
स्त्रीनिधुवनकृतश्रांतिविच्छेदनंच पथ्यं बाल्ये-
वयसितरुणेवार्द्धकेवापिपथ्यम् ॥ नान्यत्किंचिद्भ-
वतिपुरुषेसर्पिषःस्वास्थ्यकारि यद्वेदागमवेदिभिर्नि-
गदितं साक्षादिहायुर्नृणाम् ॥१५॥ यद्वैद्येनरसायना-
यकथितंसद्योजरानाशनं यत्सारस्वतकल्पकांतिम-
तिभिःप्रोक्तंधियःसिद्धये ॥ तत्रैकायनकांतिकृद्रुचि-
करंपीतंमुदेस्याद्घृतम् ॥ १६ ॥ वीर्येंतिशीतंचगुणे
विपाकेस्वादुत्रिदोषघ्नरसायनंच ॥ तेजोबलायुष्यक-
रंचमेध्यंचक्षुष्यमेतद्घृतमाहुरार्याः ॥१७॥ओजस्ते-
जोभिवृद्धिंजनयतिसुखदंकांतिकृत्सम्यगुक्तम्॥पापा-

नाशता है ॥ १३॥ बहेडाका तेल स्वादहै शीतलहै बालोंमें हितहै भारी है पित्त वातको नाशताहै नींबकातेल अत्यंत गर्म नहीं है कृमि कुष्ठ विष इन्होंको नाशताहै ॥ १४ ॥ अत्यंत कसरत और अत्यंत स्त्रीसे भोग करनेंवालाके परिश्रमको शांत करता है बाल्य वृद्ध और तरुण इन अवस्थाओंमें पथ्य है पुरुषको घीसे परे स्वस्थपना करनेंवाला अन्य पदार्थ नहीं है आयुर्वेद जाननेवालोंनें यह प्रत्यक्ष आयुरूप कहा है ॥१५॥ पान किया घी आनंद देता है रसायन है बुढापाको शीघ्र नाशता है जो सारस्वतकल्प बनानेवालोंनें बुद्धिकारक कहा है कांति और रुचीको करताहै ॥ १६ ॥ घी वीर्यमें अत्यंत शीतल है गुणमें और पाकमें स्वाद है त्रिदोषको नाशता है रसायन है तेज बल आयु इन्होंको करता है बुद्धिमें हित है नेत्रोंमें हित है ऐसे वैद्य कहते हैं ॥ १७ ॥ ओजको बढाता है सुखको देता है अच्छी तरह कांति-

लक्ष्मीश्रमघ्नंश्वसनकसनहृज्जीर्णवातज्वरघ्नम्॥१८॥
शूलोदावर्तरोगग्रहणिनिवहजांनाशयत्याशुपीडांवा-
तघ्नं पित्तनाशंस्वरकरभिषजेक्षुद्भ्रमेचैवगव्यम्॥१९॥
चक्षुष्यंवृष्यमायुःस्मृतिधृतिकरणं राजयक्ष्माघ्नना-
शं रूक्षेक्षीणेचपथ्यं वलिपलितहरं सामदोषप्र-
कोपम्॥भूतोन्मादेप्रमत्तेबहुतिमिरकफेकृच्छ्रपस्मार-
हारि सर्वेषांसर्वदैवप्रथितगुणगणं साधुपथ्यंघृतं
स्यात् ॥ २० ॥ नूत्नाज्यंवस्त्रपूतंचमूत्रबस्तिविशो-
धनम्॥श्लेष्मलंपित्तनाशंचबलपुष्टिविवर्द्धनम्॥२१॥
पुराणंतिमिरश्वासपीनसज्वरकासनुत् ॥ मूर्च्छाकुष्ठ-
विषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥२२॥ मदापस्मार-

कारक कहा है पाप दरिद्र परिश्रम इन्होंको नाशता है श्वास और खांसी को नाशता है पुराना वात और ज्वरको नाशता है॥ १८॥ गौका घी शूल उदावर्त ग्रहणीरोग इनवालोंकी पीडाको नाशता है वातको नाशताहै पित्तको नाशता है स्वरको करता है भूख और भ्रममें हितहै ॥ १९ ॥ घी नेत्रोंमें हित है वीर्यमें हित है आयुस्मृति धृति इन्होंको करता है राजयक्ष्माको नाशता है रूक्ष और क्षीण मनुष्यको पथ्य है शरीरकी बलियां और बालोंका सुपेदपनाको नाशता है आम सहित दोषको कोपता है भूतोन्माद प्रमत्त बहुत तिमिर कफ मूत्रकृच्छ्र अपस्मार इन्होंको हरता है सबोंको सब कालमेंही बहुत गुणदायक है सुंदर पथ्य है ॥ २० ॥ नया घी वस्त्रसे छाना हुआ मूत्र और मूत्राशयको शोधता है कफको करता है पित्तको नाशता है बल और पुष्टिको बढाता है ॥ २१ ॥ पुराना घी तिमिर श्वास पीनस ज्वर खांसी मूर्छा कुष्ठ विष उन्माद ग्रहदोष अपस्मार इन्होंको नाशता है ॥ २२ ॥ पुराना घी मद अपस्मार मूर्छा

मूर्च्छाचशिरःकर्णाक्षियोनिजान्॥ पुराणंजयतिव्या-
धीन्व्रणशोधनरोपणम् ॥२३॥ उग्रगंधि पुराणं स्या-
द्दशवर्षस्थितंघृतम्॥लाक्षारसनिभंशीतंतद्विसर्पग्रहा
पहम्॥२४॥अपस्मारग्रहोन्मादवातेशस्तंविशेषतः॥
पूर्वोक्तांश्चाधिकान्कुर्याद्गुणास्तदमृतोपमम् ॥ २५ ॥
निरामयानांनवयौवनानां कृत्वागवांयद्दशधौतम-
द्भिः ॥ वह्नौविपक्वंनवनीतनूतनंयोग्यंघृतंतद्रससं-
युतंच ॥ २६ ॥ क्षौमंतैलमचक्षुष्यंपित्तकृद्वात-
नाशनम् ॥ ओजक्षंकफपित्तघ्नंकेश्यंदृक्श्रोत्रतर्पणं
णम् ॥२७॥ एरंडतैलम् ॥ अधोभागिकमेरंडमन्ये-
षांतिलवत्स्मृतम् ॥ सर्वधान्यसमावर्त्तिवैदिलेफल-
जानिच ॥ तैलवर्णकृतोलेपःखर्जूकंडूविनाशनम्२८

शिरोरोग कानरोग योनिरोग इन्होंको जीतता है घावको शोधता है और रोपित करता है ॥ २३ ॥ दश वर्षसे धरा घी तेजगंधवाला हुआ पुराना होता है लाखका रसके समान कांतिवाला है शीतल है विसर्प और ग्रहदोषको नाशता है ॥ २४ ॥ अपस्मार ग्रहदोष उन्माद वात इन्होंमें विशेष कर श्रेष्ठ है पूर्वोक्त गुणोंको अधिक करता है अमृतके समान है ॥ २५ ॥ रोगोंसे रहित और नया यौवनवाली ऐसी गौवोंका घीको पानीसे दशवार धोके अग्निपै पकावै यह उत्तम है रससे संयुत है ॥ २६ ॥ अलसीका तेल नेत्रोंमें हित नहीं है पित्तको करता है वातको नाशता है पराक्रम कफ पित्त इन्होंको नाशता है बालोंको बढाता है नेत्र और कानोंको तृप्त करता है ॥ २७ ॥ अरंडका तेल दस्तावर है अन्य सबोंका तेल तिलका तेलके समान कहा है सब अन्न वैदल अन्न और फलोंके तेल भी तिलोंका तेलके समान है तेलका वर्णके समान किया

धान्यतैलम् ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृते-
तैलवर्गः ॥ अथमधुगुणाः ॥ कौतिकंभ्रामरं
क्षौद्रंमाक्षिकंछात्रमेवच ॥ आर्घ्यमौद्दालकंदालमि-
त्यष्टौमधुजातयः ॥ १ ॥ चक्षुष्यंछेदितृट्श्लेष्मवि-
षसिध्मास्रपित्तनुत्॥मेहकुष्ठकृमिश्वासकासातीसार-
नाशनम् ॥२॥व्रणशोधनसंधानरोपणंवातलंमधु ॥
रूक्षंकषायंमधुरंतत्तुल्यामधुशर्करा ॥३॥ त्रिदोषघ्नं
मधुप्रोक्तंपक्वमांसंत्रिदोषकृत्॥हिक्काश्वासकफच्छर्दि-
मेहतृष्णाविषापहम् ॥४॥ क्षौद्रंजलेनसंघृष्टंस्थौल्यं
प्रतिपिबेन्नरः ॥ कृशोभवतिसप्ताहाल्लेखनंतत्रजा-
यते ॥५॥ लेपेहितंरक्तगुदांकुराणांप्रज्ञोद्भवंलेह्यमदो-
भिवृद्धिः॥सर्वांगुरुश्चापिरसायनानांकासापहोवापिम-

लेप खाज और पामको नाशता है ॥ २८ ॥ यहां श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेदमहोदधिमें तैलवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब शहदके गुण कहते हैं- कौतिक भ्रामर क्षौद्र माक्षिक छात्र आर्घ्य औद्दालक और दाल ऐसे आठ प्रकारके शहद हैं ॥ १ ॥ शहद नेत्रोंमें हित है छेदि है तृषा कफ विष हुचकी रक्तपित्त इन्होंको दूर करता है प्रमेह कुष्ठ कृमि श्वास खांसी अतीसार इन्होंको जीतता है ॥ २ ॥ शहद घावको शोधता है टूटाको जोडता है घावपै अंकुरलाता है वातको करता है रूखा है कसैला है मीठा है इसीके समान शहदकी खांड है ॥ ३ ॥ शहद त्रिदोषको नाश-ता है पका हुआ मांसवाला त्रिदोषको करता है हुचकी श्वास कफ छर्दि प्रमेह तृषा विष इन्होंको नाशता है ॥ ४ ॥ पानीसे युत किया शहदको मोटा मनुष्य ७ दिन पीवै माड़ा हो जाता है तहां लेखन होता है ॥५॥ रक्तसे उपजे गुदाके मस्सों पै लेपमें हित है चाटनेसे बुद्धि उपजाता है

धुप्रयोगः ॥६॥ मेहेहितः स्यान्मलछर्दिनाशोहिक्काऽतिसारेव्रणकुष्ठहंता॥कंडूप्रणाशोलघुदीपनोहिदिव्यामृतः सर्वमधुप्रयोगः ॥ ७ ॥ स्थावरंजंगमंवापिकृत्रिमंचविषापहम् ॥ वलीपलितनिर्मुक्तोदेहस्तस्मिन् प्रजायते॥८॥क्षतक्षीणहितंचैवपांडुकामलरोगजित्॥ स्थूलकायहरंचैवरक्तेचापिहितंमधु ॥ पाकेस्वादु मधुश्रेष्ठंविपाकेदोषसंयुतम् ॥ ९ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेमधुवर्गः ॥ अथेदानीमिक्षुगुणाःकथ्यंते ॥ स्निग्धश्चसंतर्प्पणबृंहणश्चसंजीवनःस्वादुरसःश्रमघ्नः ॥ वृष्यश्चपित्तास्रशमं नयेच्चह्यंतर्विदाहीकफकृत्सितेक्षुः ॥ १ ॥

सब प्रकारके शहदका प्रयोग भारी है रसायन है और खांसीको नाशता है ॥६॥ प्रमेहमें हित है मल छर्दि हुचकी अतीसार घाव कुष्ठ इन्होंको नाशता है खाजको नाशता है हलका है दीपन है सब प्रकारका शहदका प्रयोग दिव्य अमृत है ॥ ७ ॥ शहद, स्थावर जंगम और कृत्रिम ऐसे सब विषोंको नाशता है वलियां और बालोंका सुपेदपनासे रहित हुआ शरीर हो जाता है ॥ ८ ॥ क्षत और क्षीणको हित है पांडु और कामलाको जीतता है मोटा शरीरको माडा करता है और रक्तमेंभी हित है पाकमें स्वाद है विशेष पाकमें दोषवाला है ॥ ९ ॥ यहां आयुर्वेदमहोदधिमें शहदवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब ईखके गुण कहे जाते हैं– सुपेद ईख चीकना है सम्यक्प्रकारसे तृप्तिकरता है पुष्टिकारक है संजीवन है स्वाद रसवाला है परिश्रमको नाशता है वीर्यमें हित है पित्त रक्तको शांत करता है भीतर दाहवाला है कफको करता है ॥ १ ॥

तद्वत्सुकृष्णोहिभवेद्गुणैश्चवृष्योभवेत्तर्प्पणदाहहंता॥ सक्षारकिंचिन्मधुरोरसेनशोषाऽपहर्ताव्रणशोफकर्ता ॥ २ ॥ पौंड्रकोभीरुकश्चैववंशकःश्वेतपोरकः ॥ कांतारस्तापसेक्षुस्यात्काष्ठेक्षुस्तुपवित्रकः ॥ ३ ॥ नेपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोथकोशकृत् ॥ इत्येतेजातयःस्थौल्याद्गुणान्वक्ष्याम्यतःपरम् ॥४॥ सुशीतोमधुरःस्निग्धोबृंहणः श्लेष्मलोरसः॥अविदाही गुरुर्वृष्यः पौंड्रकोभीरुकस्तथा ॥ ५ ॥ अन्येतुल्यगुणाः केचित्सक्षारोवंशकोमतः॥ वंशवच्छ्वेतपोरस्तु किंचिदुष्णः सवातहा॥६॥कांतारस्तापसेक्षुश्च वंशकानुगतौमतौ ॥एवंगुणस्तुकाष्ठेक्षुःसतुवातप्रकोपनः ॥ ७ ॥ सूचीपत्रोनीलपोरोनेपालोदीर्घपत्रकः ॥ वातलः कफपित्तघ्नः सकषायोविदाहकः ॥ ८ ॥

कालाईखमें भी येही गुण हैं परंतु वीर्यमें हित है तृप्ति करता है दाहको नाशता है खारा है कछुक मीठा है शोषको नाशता है घाव और शोजाको हरता है ॥ २ ॥ पौंड्रक भीरुक वंशक श्वेतपोरक कांतार तापसेक्षुकाष्ठेक्षु पवित्रक ॥ ३ ॥ नेपाल दीर्घपत्र नीलपोर कोशकृत् ये सब ईखके भेद हैं इसके अनंतर गुणोंको कहैंगे ॥ ४ ॥ पौंड्रक और भीरुक ईख सुंदर शीतल है मीठा है चीकना है पुष्टिकारक है कफकारक है रसवाला है दाहको नहीं करता है भारी है वीर्यमें पथ्य है ॥ ५ ॥ अन्य ईख समान गुणवाले है; वंशक ईख खार सहित माना है; ऐसेही गुणोंवाला काष्ठेक्षु वातको कोपता है ॥ ६ ॥ वंशककी तरह श्वेतपोरक है; यह कछुक गर्म है वातको नाशता है कांतार और तापस ईखभी वंशकके समान माने है ॥ ७ ॥ सूचीपत्र नीलपोर नेपाल दीर्घपत्रक ये सब ईख

कोशकारोगुरुः शीतोरक्तपित्तक्षयापहः ॥ अतीवम-
धुरोमूलेमध्येमधुरएवच ॥ ९ ॥ अग्रेषुत्रिषुविज्ञेय
इक्षोस्तालसमोरसः॥१०॥कफकृच्चविदाहीचरक्तपि-
त्तनिबर्हणः ॥ शर्करासमवीर्यस्तुदंतनिष्पीडितोरसः
॥ ११ ॥ गुरुर्विदाहीविष्टंभीयांत्रिकस्तुप्रकीर्त्तितः॥
पक्वोगुरूरसःस्निग्धःसतीक्ष्णः कफवातनुत् ॥ १२॥
फाणितंगुरुमधुरमभिष्यंदिचबृंहणम् ॥ शुक्रकफकरं
चैवपित्तघ्नंचविशेषतः॥ १३ ॥ सक्षीरोमधुरोऽतिमू-
त्रबहुलोरक्तस्यसंशोधनोमेदोहंतिकरोतिपित्तशमनं
वातघ्नविष्टंभनः ॥ श्लेष्माणंजनयेच्चबृंहणकरोबल्यः
सदास्वास्थ्यकृद्वातघ्नोविषहास्वपित्तशमनःसेव्यो

वातको करते हैं कफ पित्तको नाशते हैं कसैले हैं विशेष दाह करते हैं॥८॥ कोशकार ईख भारी है शीतल है रक्तपित्त और क्षयको नाशता है मूलमें अत्यंत मीठा है मध्यमें मीठा है ॥९॥ अग्रभागोंमें तालका रसके समान है ॥ १० ॥ दांतोंसे पीड़ित किया ईखका रस कफको करता है दाहको नहीं करता रक्तपित्तको नाशता है खांडके समान वीर्यवाला है ॥ ११ ॥ यंत्रसे निकाशा ईखका रस भारी है दाह करता है; पकाया हुआ ईखका रस भारी है चीकना है तीक्ष्ण है कफ वातको दूर करता है ॥ १२ ॥ राब भारी है मीठी है अभिष्यंदवाली है पुष्टिकारक है वीर्य और कफको करती है और विशेषकर पित्तको नाशती है ॥ १३ ॥ दूध सहित ईखका रस मीठा है अत्यंत मूत्रको उपजाता है रक्तको शोधता है मेदको नाशता है अत्यंत पित्तको नाशता है वातको नाशता है विष्टंभ करता है कफको जीतता है पुष्टिकारक है बलमें हित है सब कालमें स्वस्थपना करता है वातको नाशता है विषको हरता है पित्तको शांत

विरेकःसदा॥१४॥मत्स्यंडिकाचखंडशर्करविमलो-
त्तरोत्तराःस्निग्धाः ॥ गुरुरसमधूत्तययावृष्यारक्तपित्त
नाशकरी॥१५॥यावन्तीशर्क्करप्रोक्तासर्वदाहप्रणाश-
नी॥रक्तपित्तप्रशमनीछर्दिमूर्च्छातृषापहा॥१६॥ रू-
क्षामधुकपुष्पोत्थाफाणितावातपित्तकृत्॥कफघ्नाम-
धुरापाकेविपाकेबस्तिदूषणा ॥१७॥ गुडशर्क्करयातु-
ल्याबस्तिशोधनपाचनी॥ पित्तसंशमनीचैवरक्तपित्त-
निबर्हणी ॥१८॥ मधुराशर्क्कराचैवहिक्काऽतीसारना-
शनी॥रूक्षाविच्छेदिनीचैवकषायामधुरापिच॥१९॥
वृष्यःशीतोष्णपित्तंशमयतिमधुरोबृंहणःश्लेष्मका-
री स्निग्धोहृद्यःसरश्चश्रमशमनपटुर्मूत्रवृद्धिंकरो-
ति ॥ मेदोवृद्धिंविधत्तेशमयतिचमलंतर्पणंचेंद्रि-

करता है जुलाब लगाता है सब कालमें सेवना उचित है ॥ १४ ॥ राव खांड शर्करा ये जितनी निर्मल और चीकनी हों उतनी उत्तरोत्तर क्रमसे उत्तम हैं; बहुत रसवाली और जो मीठी हैं वह शुक्रको हित हैं रक्त पित्तको नाशती हैं ॥ १५ ॥ जितनी खांड कही है वह सब दाहको नाशतीहै रक्त पित्तको शांत करती है छर्दि मूर्च्छा तृषा इन्होंको नाशतीहै ॥१६॥महुवाके फूलोंकी राव पित्तको नहीं करतीहै कफको नाशती है पाकमें मीठी है विशेष पकानेमें मूत्राशयको दूषित करती है ॥१७॥ गुड़की शक्करके समान मूत्राशयको शोधती और पकाती है पित्तको शांत करती है रक्त पित्तको दूर करती है ॥ १८ ॥ मीठी खांड हुचकी और अतीसारको नाशती है रूखी है छेदिनी है कसेली है और मीठी है ॥ १९ ॥ ईखका गंडा वीर्यमें हित है शीत गर्मी और पित्तको शांत करता है मीठा है पुष्टिकारक है कफको करता है चीकना है सुंदर है सर है परिश्रमको

याणाम्॥ दंतैर्निष्पीड्यसाक्षादमृतमयरसोभक्षयेदि-
क्षुदंडम् ॥ २० ॥ कांतारोरक्तवर्णःस्यात्कोशकार-
स्तथैवच ॥ श्वेतस्तुपौण्ड्रकोज्ञेयस्त्रयःश्रेष्ठास्तथेक्ष-
वः ॥ २१ ॥ मधुरोमूलभागेस्यान्मध्येमधुरएवच ॥
अग्रभागेपुरस्थोयस्तस्मात्स्याल्लवणोलघुः ॥ २२ ॥
भक्षयेदिक्षुकं कालेभोजनस्याग्रतोनरः ॥ स्वभा-
वान्मधुरोप्येषभुक्तोवातप्रकोपनः ॥ २३ ॥ वि-
दाहीविष्टंभीगुरुरतितरांशोषशमनः ॥ कफो-
त्क्लेशंकुर्यात्पवनजननइछर्दिकरणः ॥ २४ ॥ मूल-
मध्यदलनाच्च तत्क्षणात् पीयतेयदितुयांत्रिकोर-
सः॥वातपित्तशमनस्तदाभवेत् तर्पणश्चमलमूत्रशो-
धनः ॥ २५ ॥ पित्तघ्नः पवनापहोरुचिकरोहृद्य-

शांत करता है मूत्रको बढाता है मेदको बढाता है दोषको शांत करता है और इंद्रियोंको तृप्त करता है; दांतोंसे पीडित कर अमृतमय रसवाला ईखका गंडाको चूसै ॥ २० ॥ लाल वर्णवाला कांतार ईख और कोशकार ईख होता है; सुपेद ईख पौंड्रक जानना उचित है ये तीनों ईख श्रेष्ठ हैं ॥ २१ ॥ मूल भागमें मीठा है और मध्यमें भी मीठा है अग्रभागमें नमक समान रस वाला है हलका है ॥ २२ ॥ समयमें भोजनके आगे ईखका गंडाको चूसै, यह स्वभावसे ही मीठा है अथवा भोजन करने बाद चूसा हुआ वातको कोपता है ॥२३॥ दाहको करता है, अवष्टंभ करता है, अत्यंत गुरु है, शोषका शमन करता है, कफ करता है, वायूको उत्पन्न करता है, वांति करता है ॥ २४ ॥ मूल मध्य दलनेसे जब तत्कालही यंत्रसे निकाशा रस पीया जावै वह वात पित्तको शांत करता है तृप्तिकारक है मल और मूत्रको शोधता है ॥ २५ ॥ पुराना

स्त्रिदोषापहः संयोगेनविशेषतोज्वरहरः संतापशां-
तिप्रदः ॥ विण्मूत्रामयनाशनोऽग्निजननःकंडू-
प्रमेहांतकृत्स्निग्धः स्वादुरसोलघुःश्रमहरः पथ्यः
पुराणोगुडः ॥ २६ ॥ दाहंनिवारयतिपित्तमपाकरो-
ति तृष्णांछिनात्तिविनिहंतिचमोहमूर्छें ॥ २७ ॥ नि-
त्यंमोहतृषास्यशोषशमनीदाहज्वरध्वंसिनीश्वासच्छ-
र्दिमदात्ययक्लमहरी हृद्या च संतर्प्पणी ॥ क्षीणेरेत-
सिपावकेचविशमेक्षीणक्षतेदुर्बले दुर्वारेपि च रक्तपि-
त्तजगदे सेव्यासदाशर्करा ॥२८॥ अक्षिजेषुविकारे-
षुसर्वेष्वपिमनोहरा॥ समस्तरोगशमनीतवराजाख्य-
शर्करा॥२९॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृते इक्षु-
वर्गः॥इदानींमद्यगुणाःकथ्यंते॥ ॥संदीपनंमद्यमती-

गुड़ पित्तको नाशता है वातको नाशता है रुचीको करता है सुंदर है त्रिदोषको नाशता है संयोगसे विशेषकर ज्वरको हरता है संतापको शांत करता है मलमूत्रके रोगको नाशता है अग्नीको उपजाता है खाज और प्रमेहको नाशता है चीकना है स्वाद रसवाला है हलका है परिश्र-मको नाशता है पथ्य है ॥ २६ ॥ खांड दाहको दूर करती है पित्तको नाशती है तृषाको काटती है मोह और मूर्छाको नाशती है ॥ २७ ॥ सब कालमें सेवित करी खांड मोह तृषा मुखशोष दाह श्वास छर्दि म-दात्यय ग्लानि इन्होंको हरती है सुंदर है तृप्ति करती है क्षीणवीर्य विष-माग्नि क्षीण क्षत दुर्बल और असाध्य रक्तपित्त इन्होंमें हित करती है ॥ २८ ॥ वंशलोचनकी खांड नेत्रोंके सब रोगोंमें सुंदर है सब रोगोंको शांत करती है ॥ २९ ॥ यहां श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेदमहोद-धिमें ईखका वर्ग समाप्त हुआ ॥ अब मदिराके गुण कहे जाते हैं—मदिरा

वतीक्ष्णमुष्णंचतुष्टिप्रदंपुष्टिदंच ॥ सुस्वादुतिक्तं कटुकंतथाम्लंपाकेरसेसूक्ष्मसरंचमद्यम् ॥१॥काषायंस्वरसादनंबलकरंसश्वासकासापहं वर्ण्यंचैवलघूष्णदुष्टजरणंनिद्राभिवृद्धिप्रदम् ॥ पित्तासृक्कफसारकेचविषमेकाश्यैंषुतत्पीनसे रूक्षंश्रोत्रविशोधनंरुचिकरंवातादिसंशोषणम्॥श्लेष्माणंविनिहंतियुक्तमनिशंसेव्यंसदाप्राणिनाम् ॥ २ ॥ दीपनंरोचनं मद्यंतीक्ष्णोष्णंतुष्टिपुष्टिदम् ॥ सुस्वादुतिक्तकटुकमम्लपाकरसंसरम् ॥ ३ ॥ सकषायंस्वरारोग्यप्रातिभावर्णकृल्लघु ॥ नष्टनिद्रातिनिद्रेभ्योहितंपित्तास्रदूषणम् ॥ ४ ॥ कृशेस्थूलेहितंरूक्षंसूक्ष्मंस्रोतोविशो-

संदीपन है अत्यंत तीक्ष्ण है गर्म है तुष्टि और पुष्टिको देती है सुंदर स्वाद है कड़वी है चर्चरी है पाकमें और रसमें खट्टीहै सूक्ष्म सरहै ॥ १ ॥ कसैली है स्वरको शिथिल करती है बलको करती है श्वास और खांसीको नाशती है वर्णमें हित है हलकी है गर्म है दुःखसे जरती है नींदको बढ़ाती है पित्तरक्त कफका गिरना कृशपना पीनस इन्होंमें हितहै रूखीहै कानोंको शोधती है रुचीको करती है वात आदिको शोषतीहै युक्तिके वशसे कफको नाशती है मनुष्योंको सब कालमें सेवित करनी उचित है ॥ २ ॥ मदिरा दीपन है रोचन है तीक्ष्ण है गर्महै तुष्टिपुष्टिको देती है स्वाद है कड़वी है चर्चरी है पाकमें और रसमें खट्टी है ॥ ३ ॥ कसैली है स्वर आरोग्य कांति वर्ण इन्होंको करती है हलकी है नष्ट हुई नींदवालोंको और अत्यंत नींदवालोंको हित है पित्त रक्तसे दूषितहुआको नाशती है ॥ ४ ॥ कृश और स्थूलको हित है

धनम् ॥ वातश्लेष्महरंयुक्त्यापीतंविषवदन्यथा ॥५॥
गुरुत्वग्दोषजननंनवंजीर्णमतोन्यथा ॥ पेयंनोष्णो-
पचारेणनातिरिक्तेक्षुधातुरे ॥ ६ ॥ नात्यर्थंतीक्ष्ण-
मृद्वल्पसंभारंकलुषंनच ॥ गुल्मोदरार्शोग्रहणीकफ-
हृत्स्नेहिनीगुरु ॥ ७ ॥सुराऽनिलघ्नीमेदोसृक्स्तन्यमू-
त्रकफापहा ॥ तद्गुणावारुणीहृद्यालघुस्तीक्ष्णानिहं-
तिच ॥ ८ ॥ शूलकासाग्निश्वासविबंधाध्मानपीन-
सान् ॥ ९ ॥ ग्राह्युष्णोजांगलोरूक्षःपाचनःशोफ-
नाशनः ॥ नातितीव्रमदालस्येपथ्यावैभीतकीसु-
रा ॥ १० ॥ विष्टंभिनीयवसुरागुर्वीरूक्षात्रिदोषला ॥
यथाद्रव्यगुणोरिष्टः सर्वमद्यगुणाधिकः ॥ ११ ॥

रूखी है सूक्ष्म है स्रोतोंको शोधती है युक्तिसे पान करी वात कफको हरती है अन्यथा बिषके समान है ॥ ५ ॥ नयी मदिरा भारी है त्वचा-दोषको उपजाती है पुरानी मदिरा नयी मदिरासे विपरीत गुणोंवाली है गर्म पदार्थके संग नहीं पीनी जुलाब लिये हुआ और भूखसे पीड़ित हुआ नहीं पीवै ॥ ६ ॥ अत्यंत तीक्ष्ण कोमल अल्प ऐसे संभारोंवाली और मैली मदिरा नहीं पीनी; गुल्म उदररोग बवाशीर ग्रहणीदोष कफ इन्होंको हरती है स्नेहिनी है भारी है ॥ ७ ॥ सुरा वातको नाशती है मेद रक्त दूध मूत्र कफ इन्होंको नाशती है वारुणी मदिरामेंभी येही गुण हैं परंतु सुंदर है हलकी है तीक्ष्ण है ॥ ८ ॥शूल खांसी मंदाग्नि श्वास बंधा अफरा पीनस इन्होंको नाशती है ॥ ९ ॥ जांगल मलको बांधती है गर्म है रूखी है पाचन है शोजाको नाशती है; वहेडाकी मदिरा अत्यंत तीव्रमद और आलस्यवालोंको पथ्य है ॥ १० ॥ जवोंकी मदिरा विष्टंभ करती है भारी है रूखी है त्रिदोषको करती है जैसा द्रव्य

ग्रहणीपांडुकुष्ठार्शःशोषशोफोदरज्वरान् ॥ हंतिगु-
ल्मकृमिप्लीह कषायकटुवातलः ॥ १२ ॥ माध्वीकं
लेखनंहृद्यंनात्युष्णंमधुरंसरम्॥अल्पपित्तानिलं पांडु
मेहार्शःकृमिनाशनम् ॥१ ३ ॥ सृष्टमूत्रशकृद्वातोगौ-
डस्तर्पणदीपनः ॥ वातपित्तकरः सीधुः श्लेष्मस्नेह-
विकारहा ॥ १४ ॥ मेदःशोफोदरार्शोघ्नस्तत्रपक्वोर-
सोवरः ॥ छेदीमध्वासवस्तीक्ष्णोमेहपीनसकास-
जित् ॥ १५ ॥ रक्तपित्तकफोत्क्लेदिसूक्तं वातानु-
लोमनम् ॥ भृशोष्णंतीक्ष्णरूक्षाम्लंहृद्यंरुचिकरं
सरम् ॥ १६ ॥ दीपनंशिशिरस्पर्शंपांडुहृत्कृमिना-
शनम् ॥ गुडेक्षुमधुमाध्वीकंसूक्तंलघुयथोत्तरम्१७।

हो उसके समान गुणोंवाला और सब मदिराके गुणोंसे अधिक गुणवाला अरिष्ट होता है ॥ ११ ॥ ग्रहणी रोग पांडुरोग कुष्ठ बवाशीर शोष शोजा उदररोग ज्वर कृमि तिल्लीरोग इन्होंको नाशता है ॥ १२ ॥ माध्वीक लेखन है सुंदर है अत्यंत गर्म नहीं है मीठा है सर है अल्पपित्त वात करता है; पांडु प्रमेह बवाशीर कृमि इन्होंको नाशता है ॥ १३ ॥ गुड़की मदिरा मूत्रमल और अधोवातको उपजाती है तर्पण है दीपन है सीधु वात पित्तको करती है कफ और स्नेहके विकारको नाशती है ॥ १४ ॥ पका हुआ रसवाला सीधु उत्तम है शोजा उदररोग बवाशीर इन्होंको नाशतीहै; मध्वासव छेदीहै तीक्ष्णहै प्रमेह पीनस खांसी इन्होंको नाशतीहै ॥ १५ ॥ सूक्त रक्तपित्त और कफको दूर करती है वातको अनुलोम करती है अत्यंतगर्म है तीक्ष्ण है रूखा है खट्टा है सुंदर है रुचीको करती है सर है ॥ १६ ॥ गुड़ ईख मधु इन्होंका माध्वीक दीपन है शीतल स्पर्शवाला ह पांडु और कृमि रोगको नाशता है माध्वीकसे सूक्त हलका है ॥ १७॥

कंदमूलफलाद्यंचतद्वद्विद्यात्तदासुतम् ॥ सांडाकिंवा सुतंचान्यत् कालाम्लंरोचनंलघुऽन्यथा १८ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेमद्यवर्गः॥ अथेदानींकांजिकवर्गःकथ्यते ॥ धान्याम्लंभेदितीक्ष्णं सुरभिलघुसरं सोष्णसंस्पर्शशीतंरूक्षंचैवक्लमघ्नंस्मरहरविशदंबास्तिसंशोधनंच ॥ शस्तंचास्थापनेस्याल्लघुविषशमनंश्वासशूलापनोदि गंडूषैर्धारणास्यान्मुखगदनिवहे गंधनिर्णाशनंच ॥ १ ॥ धान्याम्लंभेदितीक्ष्णोष्णं पित्तकृत्स्पर्शशीतलम् ॥ श्रमक्लमहरंरुच्यंदीपनं बस्तिशोधनम् ॥ २ ॥ शस्तमास्थापनेहृद्यंलघु वातकफापहम् ॥ गंडूषधारणाद्वक्रमलदौर्गंध्यदोषजित् ॥३॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृतेकांजि-

कंद मूल और फल आदिका सुत जानना; सांडाकी अथवा अन्य सुत जानना; कालाम्ल रोचन है दीपन है हलका है ॥ १८ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें मद्यवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब इसके अनंतर कांजीवर्ग कहते हैं–कांजी भेदन है तीक्ष्ण है सुगंधित है हलकी है सर है गर्म स्पर्शवाली है शीतल है रूखी है ग्लानिको नाशती है कामदेवको हरती है सुंदर बस्तिको शोधती है आस्थापनमें उत्तम है हलकी है विषको शांत करती है श्वास और शूलको दूर करती है. कांजीके गरारे धारण करनेंसे मुखका गंध निकसता है ॥ १ ॥ कांजी भेदी है तीक्ष्ण है गर्म है पित्तको करती है स्पर्शमें शीतल है परिश्रम और ग्लानिको हरती है रुचीमें हित है दीपन है बस्तीको शोधती है ॥ २ ॥ आस्थापनमें उत्तम है सुंदर है हलकी है बात कफको नाशती है गरारे धारनेंसे मुखका मल दुर्गंधता और दोषको जीतती है ॥ ३ ॥ यहां सुषेण-

कवर्गः ॥ ॥ अथमूत्रवर्गः ॥ औष्ट्रंगोजाविजातंगज-
हयमहिषीजातमूत्रंः खरोत्थंतिक्तंतीक्ष्णं लघूष्णं
सलवणसुसरंपित्तलंभेदिरूक्षम्॥हृद्यंरुच्यंकृमिघ्नंहु-
तवहजननं कुष्ठमेदोविनाशंगुल्मानाहार्शशूलानि-
लकफविषजित्शोफपांडूदरघ्नम्॥१॥मूत्रंतथाष्टाद-
शकुष्ठशोथपांडूदरोन्मादकफामयघ्नम् ॥ सेव्यंनिहं-
त्यार्शविकारमेतद्रूक्षंतथोष्णंकृमिषुप्रशस्तम् ॥ २ ॥
इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेमूत्रवर्गः ॥ अथे-
दानींधान्यगुणाःकथ्यंते ॥ स्निग्धोवातहरस्त्रिदोष-
शमनःपथ्यः सदाप्राणिनांश्रेष्ठोव्रीहिषुषाष्टिकःश्रम-
हरः कृच्छ्रादिदोषापहः ॥ गौरश्चासितगौरतोपिनि-

का किया आयुर्वेदमहोदधिमें कांजीवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब मूत्रवर्ग कहते
हैं॥ऊंट गौ बकरी भेंड हस्ती घोड़ा भैंस गधा इन्होंका मूत्र कड़वाहै तीक्ष्ण
है हलका है गर्म है सलौना है सर है पित्तको करता है भेदी है रूषा है
मनोहर है रुचीमें हित है कृमियोंको नाशता है अग्नीको उपजाता है कुष्ठ
और मेदको नाशता है गुल्म अनाह बवाशीर शूल वात कफ विष इन्हों-
को जीतता है शोजा और पांडुको नाशता है ॥ १ ॥ मूत्र अठारह कुष्ठ
शोथ पांडु उदररोग कफरोग इन्होंको नाशता है सेवित करना बवाशीरके
विकारको नाशता है रूखा है गर्म है कृमिरोगमें उत्तम है ॥ २ ॥ यहां
श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें मूत्रवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब अन्नके
गुण कहे जाते हैं—सांठीचावल चीकना है वातको हरता है त्रिदोषको
शांत करताहै मनुष्योंको सब कालमें पथ्य है व्रीहि अन्नमें श्रेष्ठ है परि-
श्रमको हरता है मूत्रकृच्छ्र आदि दोषोंको हरता है सुपेद और नहीं

तरांसेव्यःकरोत्युच्चकैः क्षुद्रश्वासहरः क्षतक्षयहरः
कासादिदोषापहः ॥ १ ॥ रसेपाकेस्वादुःपवन
कफपित्तप्रशमनोज्वरेजीर्णेपथ्यःसबलजठरक्षोभह-
रणः ॥ शिशूनांवृद्धानांनृपतिसुकुमारातिसुखिनाम-
यंसेव्योराज्ञांभवतिहिसदाशालिरमलः॥२॥देशेदेशे-
चयेजातानानावर्णाश्चशालयः॥ तेषांश्वेतःप्रधानोसौ
त्रिदोषशमनःपरम् ॥३॥ रक्तोभीरुकपुंडरीककलम
स्तूर्णोमहापुष्पकोदीर्घः कांचनहायनोसितासितःपु-
ष्पांडजः पांडुकः॥पुंड्राख्यस्तपनीयकःशकुनकोलो-
ध्रस्तुसौगंधिकः इत्याद्याः सपतंगकृष्णकयुताह्यद्याः-
शुभाःशालयः ४ स्वर्याबृंहणजीवनाबलकराःस्निग्धा-
स्त्रिदोषापहाःशुक्रश्लेष्मविवर्द्धना रुचिकराःसंदीपना-
स्तर्पणाः ॥ पथ्याःसर्वगदे हिताः श्रमहराःक्षुत्तृट्-
भ्रमध्वंसकाःश्रेष्ठाव्रीहिषुषष्टिकाः कलमकोरक्तोमहा-

सुपेद है निरंतर सेवना क्षुद्रश्वास क्षत क्षय और खांसी आदि दोषोंको हरता है ॥ १ ॥ निर्मल शालिचावल रसमें और पाकमें स्वाद है वात कफ पित्त इन्होंको शांत करता है जीर्ण ज्वरमें पथ्य है पेटके रोगको ह-रता है बालक बूढे राजे सुकुमार अत्यंत सुखी इन्होंको सेवना उचित है ॥ २ ॥ देश देशमें जो अनेक वर्णवाले शालि चावल उपजते हैं उन्होंमें सुपेद शालि प्रधान है; त्रिदोषको बहुत नाशता है ॥ ३ ॥ रक्त भीरुक पुंडरीक कलम तूर्ण महापुष्पक दीर्घकांचन हायन असित सित पुष्पांडज पांडुक पुंड्राख्य तपनीयक शकुनक लोध्र सौगंधिक पतं-ग कृष्णक इन आदि शालिचावल सुंदर हैं शुभ हैं ॥ ४ ॥ सांठी कल-

शालयः ॥ ५ ॥ रोचनास्तर्पणाहृद्यादीप्ताःपित्त-
स्यपाचनाः ॥ गुरवोबृंहणाःपथ्यानानाजातीयशा-
लयः॥६॥पतंगोमधुरोहृद्यःस्वादुसंजीवनोलघुः॥ वृ-
ष्योबलप्रदोहन्यात्सघृतोसौमलत्रयम् ॥ ७ ॥ शा-
ल्यन्नंकफवातघ्नंस्वादुपित्तनिवारणम् ॥ रूपशुक्र-
महातेजःसत्वबुद्धिबलप्रदम् ॥ ८ ॥ कृष्णशा-
लिस्त्रिदोषघ्नोमधुरोरसपाकयोः ॥ पित्तघ्नःपिच्छलः
शुक्ररूपवर्णबलप्रदः॥ ९ ॥ एतेशालिगुणाःप्रोक्ताज्ञा-
तव्याः शास्त्रकोविदैः ॥ सर्ववनतृणान्नंचकुष्ठरोगवि-
नाशनम् ॥ सर्वव्याधिहरंशीघ्रंमुखशोधनमेवच
॥१०॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेशालिवर्गः॥

मक रक्त और महाशालि ये स्वरमें हित हैं पुष्टि करते हैं जीवन हैं बल-
को करते हैं चीकने हैं त्रिदोषको नाशते हैं वीर्य और कफको बढातेहैं
रुचीको करते हैं दीपन हैं तृप्ति करते हैं पथ्य हैं सब रोगोंमें हितहैं
परिश्रमको हरते हैं भूख तृषा भ्रम इन्होंको नाशते हैं व्रीहियोंमें श्रेष्ठहैं
॥ ५ ॥ अनेक जातिके शालिचावल रोचन हैं तृप्तिकारक हैं सुंदर हैं
पित्तको पकाते हैं भारे हैं पुष्टिकारक हैं पथ्य हैं ॥ ६ ॥ पतंग चावल
मीठा है सुंदर है स्वाद है संजीवन है हलका है वीर्यमें हित है बलको
देता है घीसे युत किया यह त्रिदोषको नाशता है ॥ ७ ॥ शालि अन्न
कफ वातको नाशता हैं स्वाद हैं पित्तको निवारता हैं रूप वीर्य बहुत
तेज सत्व बुद्धि बल इन्होंको देता हैं ॥८॥ काला शालि त्रिदोषको ना-
शता हैं रस और पाकमें मीठा हैं पित्तको नाशता हैं पिच्छिल हैं वीर्य
रूप वर्ण बल इन्होंको देता हैं ॥ ९ ॥ ये शालिके गुण वैद्योंके कहे जा-
नने ।सब प्रकारका बनका तृणसंज्ञक अन्न कुष्ठ रोगको नाशता हैं सब

उष्णारूक्षतराः कषायमधुराःपाकेलघुत्वादिकाः श्लेष्मघ्नाःपवनादिपित्तजनका विष्टंभिनःसर्वदा ॥ श्यामाकादिकधान्यलक्षणमिदंप्रोक्तंनृणामग्रतः सम्यग्वैबलशालिनांचसुखिनामल्पोपयोगान्मया ॥ १ ॥ इतिधान्यवर्गः ॥ यावनालंत्रिदोषघ्नंरेतोबलविवर्द्धनम् ॥ मलशोधिवर्णनाशंसत्वबुद्धिबलप्रदम् ॥ ॥ १ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौसुषेणकृतेयावकवर्गः ॥ अथशिंबिधान्यगुणाःकथ्यंते ॥ मुद्गःपित्तकफापहोव्रणहरः कंठामयघ्नोलघुः पथ्योवातविरक्तजंतुषुतथानेत्रामयेसर्वदा ॥ नैवाध्मानकरस्तथाऽनिलहरोमंदेऽनलेशस्यते भूतानामपिचोत्तमः स्वरकरोमूत्रामयच्छेदनः ॥ १ ॥ ॥ इति मुद्गः ॥

रोगोंको हरता हैं शीघ्र हैं मुखको शोधता हैं ॥ १० ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें शालिवर्ग समाप्त हुआ ॥ शामक आदि गर्म हैं अत्यंत रूखे हैं पाकमें कसैले और मीठे हैं हलके हैं कफको नाशतेहैं वात पित्तको उपजाते हैं सब कालमें विष्टंभवाले हैं मनुष्योंके आगे शामक आदिका यह लक्षण कह सम्यक् प्रकारसे बलवाले और सुखियों नें अल्प सेवने ॥ १ ॥ यह धान्यवर्ग है ॥ ज्वारी त्रिदोषको नाशता हैं वीर्य और बलको बढाता हैं मलको शोधता हैं वर्णको नाशता हैं सत्व बुद्धि बल इन्होंको देता हैं ॥ १ ॥ यहां सुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें यावकवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब शिंबिधान्यके गुण कहे जातेहैं-मूंग पित्त कफको हरता हैं घावको और कंठरोगको हरता हैं हलकाहैं वात रक्तरोग कृमिरोग इन्होंमें पथ्य हैं नेत्र रोगमें हित हैं अफरा नहीं करता हैं वातको हरता हैं मंदाग्निमें हित हैं मनुष्योंको उत्तम हैं स्वरको

माषःस्निग्धोबलमलकरः शोषणः श्लेष्मकारीवीर्येचो-
ष्णोझटितिकुरुतेरक्तपित्तप्रकोपम् ॥ हन्याद्वातंगुरु-
रतिसरोरेचकोभक्ष्यमाणः ॥ स्वादुर्नित्यंश्रमसुखजु-
षांजीवनीयोनराणाम्॥ २ ॥माषोगुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रः
स्निग्धोष्मवीर्योमधुरोनिलघ्नः ॥ संतर्पणः स्तन्यकरो
विशेषात्बलप्रदःशुक्रकफापहश्च ॥ ३ ॥ कषायभा-
वान्नपुरीषभेदीनमूत्रलोनैवबलासकर्त्ता॥ स्वादुर्विपा-
केमधुरोतिसांद्रः संतर्पणस्तन्यरुचिप्रदश्च ॥ ४ ॥ रौ-
क्ष्यच्चशैत्यात्पवनस्यकर्ता वैशद्यकृच्चापिहिराजमाषः
॥ माषैःसमानंफलमात्मगुप्तामृदुश्चकाकांडफलंत-
थैव ॥ ५ ॥माषः ॥ आरण्यमाषागुणतः प्रदिष्टारूक्षाः

करता हैं मूत्र रोगको छेदता हैं ॥ १ ॥ खायाहुआ उड़द चीकनाहै बल और मलको करता है शोषण है कफको करता है वीर्यमें गर्महै रक्त पित्तके कोपको शीघ्र करता है वातको नाशता है भारी है अत्यंत सर है रेचक है नित्य प्रति स्वाद है परिश्रम और सुख सेवनेवाले मनु-ष्योंको जीवन है ॥ २ ॥ उडद भारी है मल मूत्रको भेदता है चीकना है गर्म वीर्यवाला हैं मीठा है वातको नाशता हैं संतर्पण है दूधको देता है विशेष कर बलको देता हैं वीर्य और कफको देता है ॥ ३ ॥ कसैला-भावसे मलको नहीं भेदता है मूत्रको नहीं उपजाता है कफको नहीं करता है स्वाद है पाकमें मीठा है अत्यंत करडा है तृप्तिकारक है दूध और रु-चीको देता है ॥ ४ ॥ रूखापना और शीतलपनासे चंवरा वातको और विशदपनाको करता है उड़दके समान गुणवाला कौंचका फल है कोमल है तैसाही काकांडका फल है ॥ ५ ॥ वनके उड़द रूखे हैं कसै-ले हैं दाहको नहीं करते हैं वातका प्रकोप शांत नहीं होता है तेलसे भी

कषायाअविदाहिनश्च ॥ वातप्रकोपःप्रशमंनयाति तैलाक्तमेतेविभवात्प्रदिष्टाः॥६॥अथकुलत्थगुणाःक थ्यंते॥उष्णःकुलित्थोसरसःकषायःकटुर्विपाकेकफ- मारुतघ्नः॥शुक्राश्मरीगुल्मनिषूदनश्चसंग्राहकःपीन- सकासहारी ॥ ७ ॥ आनाहमेदोगुदकीलहिक्काश्वासा- पहः शोणितपित्तकृच्च ॥ कफस्यहंतानयनामयघ्नो विशेषतोवन्यकुलत्थउक्तः ॥ ८ ॥ राजमाषःसरोरु- च्यःकफशुक्रसपित्तवान्॥सुस्वादुर्वातलोरूक्षोकषा- योपिमहागुरुः ॥ ९ ॥ रूक्षःकषायोविषशोफशु- क्रबलासदृष्टिक्षयवृद्धिदाही ॥ कटुर्विपाकेमधुरश्च नूनं प्रभिन्नविण्मारुतपित्तलश्च ॥ १० ॥ ईष- त्कषायोमधुरःसतिक्तःसंग्राहकःपित्तकरस्तथोष्णः॥

गोये हुये ये उत्तम हैं ॥ ६ ॥ अब कुलथीके गुण कहते हैं–कुलथीका रस कसैला है पाकमें चर्चरा है कफ वातको नाशता है शुक्राश्मरी गुल्म इन्होंको नाशता है मलको बांधता है पीनस और खांसीको हरता है ॥ ७ ॥ आनाह मेद गुदकील हुचकी श्वास इन्होंको नाशता है रक्तपि- त्तको करता है कफको नाशता हैं नेत्र रोगको नाशता हैं वनकी कुल- थीमें इस्से विशेष गुण कहे हैं चंवरा सर हैं रुचीमें हित हैं कफ वीर्य पित्त इन्होंवाला हैं सुंदर स्वाद हैं वातको करता हैं रूखा हैं कसैला हैं बहुत भारी हैं ॥ ९ ॥ वन तिल रूखा हैं कसैला हैं विष शोजा वीर्य कफ दृष्टि इन्होंको नाशता है दाहकारक है पाकमें चर्चरा हैं मल मूत्रको भेदता हैं वात्त पित्तको करता हैं ॥ १० ॥ कछुक कसैला हैं मीठा हैं कडवा हैं मलको बांधता हैं पित्तको करता हैं गर्म हैं पाकमें

तिलोविपाकेमधुरोबलिष्ठः स्निग्धोव्रणेलेपनपथ्यउक्तः॥ ११ ॥ वनतिलः॥ दंत्योग्निमेधाजननोऽल्पमूत्रःस्तन्योथकेशोनिलहागुरुश्च॥ तिलेषुसर्वेष्वसितः प्रधानोमध्यःसितोहीनतरास्तथान्ये ॥१२ ॥ कृष्णतिलः॥ यथोदितास्तेगुणतः प्रधानाज्ञेयाःकटूष्णारसपाकयोश्च ॥१३॥ वल्लभेदाः ॥ फलंतुवल्लीशिवस्य मतंदोषकरंगुरु ॥ पित्तलंस्वादुतिक्तंचकुष्ठपामाहरं परम्॥विषघ्नंदीपनंचोष्णंकृमिघ्नमनिलापहम्॥१४॥ अथानंतरंयवगुणाःकथ्यंते॥ यवःकषायोमधुरोहिमश्चकटुर्विपाकेकफपित्तहारी॥व्रणेषुपथ्यस्तिलवच्चनित्यंप्रबद्धमूत्रोबहुवातवर्चाः ॥१५ ॥ स्थैर्याग्निमेधाव-

मीठा है अत्यंत बलवाला है चीकना है घावपै लेपमें पथ्य कहा है ॥ ११ ॥ तिल दांतोंमें हित है अग्नि और बुद्धिको उपजाता है मूत्रको अल्पकरता है दूधको उपजाता है बालोंमें हित है वातको नाशता है भारी है सब तिलोंमें काला तिल प्रधानहै सपेद तिल मध्यम हैं अन्य तिल हीनगुणवाले हैं ॥ १२ ॥ यथोदित किये ये गुणमें प्रधान हैं रस और पाकमें चर्चरे और गर्म हैं ॥ १३ ॥ वल्ली और शिवका फल दोषकारक है भारी है पित्तको करता है स्वादु है कडवा है कुष्ठ और पामको हरता है विषको नाशता है दीपन है गर्म है कृमियोंको नाशता है वातको नाशता है ॥ १४ ॥ अब इसके अनंतर जवोंके गुण कहेजाते हैं जव कसैला है मीठा है शीतल है पाकमें चर्चरा है कफ पित्तको हरता है व्रणमें पथ्य है तिलोंकी तरह नित्य प्रति मूत्रको बंध करता है अधोवात और मलको बहुत उपजाता है ॥ १५ ॥ स्थिरपना अग्नि बुद्धि बलवर्ण इन्होंको करताहै पिच्छलहै मोटाहै

लवणंकृच्चसापिच्छलस्थूलविलेखनश्च ॥ मेदोमरुत्तृड्
हरणोतिरूक्षः प्रसादनःशोणितपित्तयोश्च ॥ १६ ॥
एभिर्गुणैर्हीनतरैश्चकिंचिद्विद्याद्यवेभ्योन्ययवानशेषैः
॥ गोधूमउक्तोमधुरोगुरुश्चबल्यःस्थिरःशुक्ररुचिप्रद-
श्च ॥ १७ ॥ स्निग्धोतिशीतोऽनिलपित्तहारीसंधा-
नकृच्छ्लेष्मकरःसरश्च ॥ कटुर्विपाकेकटुकःकफघ्नो
विदाहिभावादहितःकुसुंभः ॥ १८ ॥ तेसक्तवोलघु-
तरानयनामयघ्नाः क्षुत्तृड्ज्वरानपनुदंत्यतिसारमेहा-
न् ॥ सद्योबलंददतिशर्करयाचसार्धमंतर्विदाहश-
मनाःपरमाहिमाश्च ॥ १९ ॥ उष्णस्तथास्वादुर-
सोऽनिलघ्नःपित्तोल्बणः स्यात्कटुकोविपाके ॥ पा-
केरसेवापिकटुःप्रदिष्टः सिद्धार्थकःशोणितपित्तकर्त्ता
॥ २० ॥ तीक्ष्णोष्णवीर्यःकफमारुतघ्नस्तथागु-

लेखन है मेद वात तृषा इन्होंको नाशता है अत्यंत रूखा है रक्त पित्तको साफ करता है ॥ १६ ॥ अन्य जवोंमें इस जब से कछुक हीन गुण है गेहूं मीठा है भारी है बलमें हित है स्थिर है वीर्य और रुचीको देता है ॥ १७॥ करडा चीकना हैं अत्यंत शीतल हैं वात पित्तको नाशता है टूटाको जोडता है कफको करता है सरता हैं पाकमें चर्चरा है चर्चरा स्वाद देता है विदाहि भावसे अहित हैं ॥ १८ ॥ जवोंके सतू अत्यंत हलके हैं नेत्रके रोगको नाशते हैं भूख तृषा ज्वर अतीसार इन्होंको दूर करतेहैं खांडके साथ तत्काल बलको देते हैं शरीरका भीतरकी दाहको शांत करतेहैं और बहुत शीतलहैं॥१९॥ सिरसम गर्म है स्वादुरस वालाहै वातको नाशता है पित्तकी अधिकतावाला है पकानेमें चर्चरा है पाकमें और रसमेंभी चर्चरा है रक्तपित्तको करता है ॥२०॥ काला सिरसममेंभी येही गुण

णश्चासितसर्षपोऽपि ॥ २१ ॥ आढक्यःकफ-
मारुतप्रशमनावीर्येणचोष्णास्तथा दृष्टचस्त्रग्दर-
कंठजामयरुजोमेदोनिलंकुर्वते ॥ कासश्वासवमी-
तृषाज्वरहराः पथ्याश्चकंडूरुजापामाकुष्ठभगंदरेषुन-
तथारुच्यास्तुपथ्याभृशम् ॥ २२ ॥ आढकी
कफवातघ्नीईषन्मारुतकोपिनी ॥ तस्याहिद्विदलं
पथ्यंस्वादुविष्टंभकृद्गुरु ॥ दीपनंकफपित्तघ्नंसर्व-
मेहप्रणाशनम् ॥ २३ ॥ अथमुद्गादिगुणाःक-
थ्यंते ॥ ज्वरहरणबलाढ्यं रक्तपित्तप्रणाशं विद-
धतिनिपुणास्तेमुद्गयूषंप्रशस्तम् ॥ अनिलमपिनिहं-
तिस्नेहसंस्कारयुक्तंशमयतितनुदाहंसर्वरोगेषुशस्तम्
॥ २४ ॥ व्यपगतमलदोषाः प्राणिनःक्षीणगात्रा
अधिकतरतृषार्त्तायेचघर्मप्रतप्ताः ॥ ज्वलनमुख-

है परंतु तीक्ष्ण है गर्म वीर्यवाला है कफ वातको नाशता है ॥२१॥ अरहर कफ वातको शांत करतीहै वीर्यसे गर्म है नेत्ररोग प्रदररोग कंठरोग मेद वात इन्होंको करती है खांसी श्वास छर्दि तृषा ज्वर इन्होंको नाशती है खाज पाम कुष्ठ भगंदर इन्होंमें पथ्य नहीं है रुचीमें हित हैं अत्यंत पथ्य है ॥ २२ ॥ अरहर कफ वातको नाशती है कछुक वातको कोपती हैं अरहरकी दाल पथ्य है स्वादु हैं विष्टंभवाली है भारी है दीपन है कफ पित्त नाशक है सब प्रमेहोंको नाशती हैं ॥ २३ ॥ अब मूंग आदिके गुण कहे जाते हैं–मूंगोंका यूष ज्वरको हरता है बलको करता है रक्तपित्तको नाशता है सुंदर है घीके संस्कारसे युतकिया वातकों नाशता है शरीरका दाहको शांत करता है सब रोगोंमें श्रेष्ठ है ॥ २४ ॥ दोषोंवाले मलवाले क्षीणहुआ शरीरवाले बहुत तृषासे

विदग्धा येचसारातिभूताः पुनरिहमनुजास्तेमुद्ग-यूषस्ययोज्याः॥२५॥ मुद्गपानीयः॥अथकुलत्थयूष-गुणाःकथ्यंते॥वीर्येचोष्णाः कुलत्थाः कफपवनहराः पित्तरक्तप्रदाश्चपाकेम्लाः श्वासकासोदरहृदयशिरो-बस्तिशूलापहाःस्युः ॥ मूत्राघातप्रमेहाश्मरिभृशद-मनाः शुक्रविच्छेदनाश्चश्रेष्ठादुर्नामकुष्ठश्वयथुगुद यकृद्गुल्मतूनीगदेषु ॥ २६ ॥ कुलत्थयूषः ॥ मसू-रगुणाः कथ्यंते ॥ मासूरालघवोऽतिरूक्षाविशदाश्चक्षु ष्यमूत्रग्रहाःश्लेष्मापित्तनिबर्हणारुचिकरावातामयान् कारकाः॥विष्टंभंजनयंतिकोष्ठधमनंकृच्छ्राश्मरीच्छे-दकाःसर्वेपित्तविकारजेषुविहिताहृद्याश्चमाधुर्यकाः॥ ॥२७॥इति मसूरः॥प्रभूतवातंकुरुतेऽतिरूक्षः कफा वहः पित्तहरोनितांतम्॥रुचिप्रदःशूलकरोनराणामा-

पीडित गर्मीसे जलते हुये अग्निसे जलतेहुये अतीसारसे पीडित हुये ये सब मनुष्य मूगोंका यूषके योग्य हैं ॥ २५ ॥ कुलथीका यूष वीर्यमें गर्म है कफ वातको हरता है रक्तपित्तको देता है पाकमें खट्टा है श्वास खांसी उदररोग हृदयरोग शिरका शूल बस्तिशूल मूत्राघात प्रमेह पथरी इन्होंको अत्यंत नाशता है वीर्यको नाशता है श्रेष्ठ है बवासीर कुष्ठ शोजा गुदारोग इन्होंको करता है गुल्म और तूनीबातमें हित है ॥ २६ ॥ मसूरके गुण कहेजातेहै–मसूर हलका हैं अत्यंत रूषा है सुंदर है नेत्रोंमें हित है मूत्रको रोकता है कफ पित्त को नाशता है रुचीको करता है वातके रोगोंको करता है विष्टंभ और कोष्ठमें अफराको उपजाता है मूत्रकृच्छ्र और पथरीको छेदता है पित्तके विकारोंमें हित है सुंदर है मीठा है ॥ २७ ॥ मटर बहुत

मानुबंधीकथितःकलायः॥२८॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृतेशिबिधान्यवर्गः ॥ अथचणकगुणाः कथ्यंते॥रूक्षावातकराः प्रमेहशमनाः कृच्छ्राश्मरीच्छेदनाविड्भेदंजनयंतिपित्तशमनाआध्मानरोगप्रदाः॥कंठध्वंसहराःसुभक्षसुखदाः शुष्कारुचिच्छेदनाबल्या वर्णकराविशुष्कचणकाःपुंसश्चनैतेहिताः॥ १ ॥ शुष्कचणकाः॥आर्द्रावृष्यतमाबल्याःश्लेष्मलारुचिकारकाः॥वातपित्तहराःशीतामूत्रकृच्छ्रनिवारकाः॥२॥ आर्द्रचणकाः ॥ भर्जितचणकगुणाः कथ्यंते॥लघवो भ्रष्टचणकाःश्रमक्लमहरापराः॥ छर्दिघ्नारोचनानिद्रासुखपुष्टिबलप्रदाः ॥ ३ ॥ असितचणकयूषो दाहनाशंविधत्ते प्रबलमहितपथ्यंसर्वमेहप्रणाशम् ॥

वातको करता है अत्यंत रूखा है कफको नाशता है निरंतर पित्तको हरता है रुची देता है मनुष्योंके शूल करता है उडदके साथ अनुबंधवाला है ॥ २८ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें शिंबिधान्यवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब चनोंके गुण कहे जाते हैं-शूके चने रूखे हैं वातको करते हैं प्रमेहको शांत करते हैं मूत्रकृच्छ और पथरीको छेदते हैं मलको भेदते हैं पित्तको शांत करतेहैं अफराको देते हैं कंठध्वंसको हरते हैं खानेमें सुख देते हैं रुचीको छेदते हैं बलमें हितहैं वर्णको करते हैं पुरुषको हित नहीं है ॥ १ ॥ भीजे चने अत्यंत वीर्यकारक हैं बलमें हित है कफको करते हैं रुचीको करते है बात पित्तको हरते हैं शीतल हैं मूत्रकृच्छ्रको दूर करते हैं ॥ २ ॥ भुनेहुये चने परिश्रम और ग्लानिको हरते हैं छर्दिको नाशते हैं रोचन है नींद सुख पुष्टि बल इन्होंको देते हैं ॥ ३ ॥ कालेचनोंका यूष दाहको नाशता है

दहनमरिचयोगाद्वातरोगार्त्तिहारी विदलदलविपक्वः सर्वदोषंप्रयाति॥४॥कृष्णचणकयूषः॥पित्तघ्नाश्चणकाः श्वेताः कृष्णावातप्रकोपनाः ॥५॥इति श्वेतचणकाः॥ अथगोधूमगुणाः कथ्यंते ॥ स्निग्धः स्वादुरसोविपाकमधुरः प्रायेणचामाश्रयोबल्यः शीतकरः सरो रुचिकरः संधानकारीगुरुः॥ शुक्रश्लेष्माविवर्द्धनोधृतिकरः पित्तानिलध्वंसकोगोधूमः सुमनोहरःस्थिरकरः श्वेतोविकारापहः ॥ ६ ॥ गोधूमः ॥ अथ यवगुणाः कथ्यंते ॥ यवः कषायोमधुरः सुशीतोमेहेहितः पित्तकफामयघ्नः ॥ प्रबद्धमूत्रोन्ययवः सबल्यो वर्ण्यश्चवृष्यस्त्वनुलोमवातः ॥ ७ ॥ यवः ॥ अतियवः ॥ उष्णःकषायस्तुरसश्चरूक्षोमेहाक्रिमिश्लेष्मविषाऽपहश्च ॥ माधुर्ययुक्तोबलवांस्त-

प्रबल है अहितमें पथ्य है सब प्रमेहोंको नाशता है चीता और मिरचके योगसे बात रोगको अत्यंत हरता है साबत चनोंका यूष सब दोष उपजाताहै॥४॥सुपेदचने पित्तको नाशते हैं कालेचने वातको कोपते हैं ॥५॥ अब गेहूंके गुण कहेजाते हैं–गेहू चीकना है रसमें स्वादु है पाकमें मीठा है प्रायतासे आमको करताहै बलमें हितहै शीत करताहै सरहै रुचीको करता है टूटाको जोडता है भारीहै वीर्य और कफको बढाताहै धैर्यको करता है पित्त वातको नाशता है सुंदर मनोहर है स्थिर करता है सुपेद गेहूं विकारको नाशता है ॥ ६ ॥ जव कसैला है मीठा है सुंदर शीतल है प्रमेहमें हित है पित्त कफ आमके रोगको नाशता है दूसरा जव मूत्रको बढाताहै बलमें हित है वर्णमें हित है वीर्यमें हित है वातको अनुलोम रखता है ॥ ७ ॥ वांशका जव गर्म है कसैला है रूखा है प्रमेह क्रामि कफ विष इन्होंको नाशताहै

थैवपित्तापहोवेणुयवःप्रदिष्टः ॥ ८ ॥ वेणुयवः ॥ दंत्योवर्णबलाग्नि बुद्धिजननस्त्वन्योनिलघ्नोगुरुःस्नि-ग्धःपित्तकरोऽल्पमूत्रकरणः केश्योतिपथ्योव्रणे ॥ ग्राह्युष्णोधृतिकृत्कषायमधुरस्तिक्तो विपाकेकटुःकृ-ष्णःपथ्यतमःसितोल्पगुणकोहीनास्तथान्येतिलाः ॥ ॥ ९॥ श्यामाककोद्रवाद्याश्चयेचान्येप्युक्ताशिंबिकाः॥ अपथ्यास्तेनशस्यंते सुखिनांनिरुजांतथा ॥ १० ॥ यद्यदागच्छतिक्षिप्रंतत्तल्लघुतरंस्मृतम् ॥ यवगोधूम मुद्राश्चतिलाश्चापिनवाहिताः ॥ ११ ॥ इति श्रीसुषेणकृतेधान्यवर्गः ॥ ॥ अथेदानींपक्वान्नगु-णाः कथ्यंते ॥ लघुरुचिकरकामीफेनिकातिप्रश-स्ताबलवतिलघुजीर्णेछर्दिनाशंकरोति॥ विदलतिमु-खघर्मंचाम्लपित्तंविदाहं जठरभरणयोग्यागोधुमैः

मीठापनसे युत है बलवाला है पित्तको नाशनेंवाला कहा है ॥ ८ ॥ काला तिल दांतोमें हित है वर्ण बल अग्नि बुद्धि इन्होंको उपजाता हैं दूधमें हित है वातको नाशता है भारी है चीकना है पित्तको करता है अल्प मूत्रको करता है बालोंमें हितहै व्रणमें अत्यंत पथ्य है मलको बांध-ताहै गर्महै धैर्यको करता है कसैला है मीठा है पाकमें कडवा है चर्चरा है अत्यंत पथ्य है सुपेद तिलमें अल्प गुण है अन्यतिल हीनगुणोंवाले हैं ॥ ९ ॥ शामक कोदू आदि शिंबि अन्न अपथ्य है सुख वालोंको और आरोग्यवालोंको हित नहींहै ॥ १० ॥ जो जो शीघ्र पकनेमें आवे वे अत्यंत हलके कहे हैं जव गेहुं मूंग और तिल ये नये हित हैं ॥ ११ ॥ यह श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमें धान्यवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब पकवानके गुण कहे जाते हैं गेहुंकी फेनी हलकी है रुचीको करती है बलवाला और

संप्रयुक्ता ॥ १ ॥ गोधूमफेनिकाः ॥ गुरवोबृंहणाः स्निग्धाबल्याः शुक्रकराःपराः ॥ स्त्रीषुहर्षंप्रयच्छंति माषपिष्टिकसंभवाः ॥ २ ॥ फेणिकाः ॥ तोयाज्ये नविमर्दितांसुसमितांकृत्वासुयोग्यंतथा खंडाज्येनप- चेद्धुताशनमृदौ कृत्वासुबंधेततः ॥ कर्पूरैर्मरिचैः कृतेयमथवाशश्वच्चजातीदलैः पुष्पालंबमितिब्रुवं- तिमुनयोनाम्नामहामोदकम् ॥ ३ ॥ वृष्यास्तुकंदर्प्प करावलाग्निसंवर्द्धनाः प्रीतिरुचिप्रदायकाः ॥ वातं सपित्तंप्रभवंतिभुक्ताः सन्मोदकामोदकरानराणाम् ॥४॥ मंदवह्निजनकोतिकोपहृन्माषमोदकगणोबल- प्रदः॥मोदकागुरवोवृष्याः श्लेष्मलाश्चिरपाकिनः॥मं- दाग्निंचप्रयच्छंति गोधूमशालिजास्तथा ॥ ५ ॥

हलका मिजाजवालोंको बहुत उत्तम है छर्दिको नाशती है मुखकी गर्मी अम्लपित्त दाह इन्होंको नाशती है पेटको पुष्ट करनें योग्य है ॥ १ ॥ उड़दकी पीठीसे बनी फेनी भारी है पुष्टि करती है चीकनी है बलमें हित है वीर्यको करती है उत्तम है स्त्रियोंमें आनंदको देती है ॥ २ ॥ घी और पानीसे गीहूंकी मैदाको मर्दितकर योग्य बना खांड घी मिला मंद अग्निपै पकाकै पीछे कपूर मिरच जावित्री ये सब मिला मोदक बना- वै इसको महामुनि पुष्पालंबमोदक कहते हैं ॥ ३ ॥ भोजन किये सुंदर मोदक वीर्यमें हित हैं या कामदेवको करते है बल और अग्नीको बढाते है प्रीति और रुचीको देते हैं वात और पित्तको नाशते हैं ॥ ४ ॥ उड़दोंका मोदक मंदाग्नीको उपजाता है अत्यंत कोप करता है सब कालमें बलको देता है गीहूं और शालिचावलोंके मोदक भारे है वीर्यमें

शमयतिबहुपित्तंश्लेष्मकोपंकरोति जनयतिजठराग्निं वातरोगान्निहंति ॥ सुरतजनितखेदंतत्क्षणादेवहन्यादमृतफलमुदारंचारुशंसंतिवैद्याः ॥ ६ ॥ अमृतफलम् ॥ अमृतरसाख्यंभक्ष्यंतिललुलितं खंडघृतपक्कम् ॥ शमयतिअर्शःकृच्छ्रान्हरति सवातं तथापित्तम् ॥ ७ ॥ रुच्यावल्यामलबलकराहृद्यगंधाःस्थिराश्च तेजोवर्णस्थिरतनुकराःशुक्रवृद्धिंकराश्च ॥ मेदोवृद्धिंजनयतितरांपित्तरोगेषुशस्ताःसर्पिःपक्कागुडमधुयुतालड्डुकाःसंप्रयुक्ताः ॥ ८ ॥ कर्पूराद्याविदलनलिकाराजयक्ष्मापहंत्रीविश्वस्यैताहितकरजनाल्हादनीभक्षणी-

हित हैं कफको करते हैं बहुत देर पाकवाले हैं और मंदाग्नीको देते हैं ॥ ५ ॥ अमृत फल बहुत पित्तको शांत करता है कफके कोपको करता है पेटका अग्नीको उपजाता है वात रोगोंको नाशता है कामदेवसे उपजे खेदको शीघ्र नाशता है ऐसे अमृतफलको उत्तम वैद्य सहराते हैं ॥ ६ ॥ तिलोंसे युत किया खांड और घीसे पकाया अमृतरस नामक भक्ष्य अर्थात् तिलसंकली बवाशीर मूत्रकृच्छ्र वात पित्त इन्होंको नाशता है ॥ ७ ॥ भोजन किये लड्डू रुचिमें हित हैं बलमें हित हैं मल और बलको करते हैं सुंदरगंधवाले हैं स्थिर हैं अग्नीके समान वर्णसे युत शरीरको करते है वीर्यकी वृद्धिको करते हैं मेदकी वृद्धिको अत्यंत करते हैं पित्तके रोगोंमें उत्तम हैं ये लड्डू घीसे पकाने और शहदसे युत करने ॥ ८ ॥ कपूरकी वटिका सुंदर ललित है राजयक्ष्माको नाशती है संसारको हित करती है खायी हुई मनुष्योंको

या ॥ ९ ॥ घारिकेंडरिकापूर्यवटिकावट-
कादयः ॥ वृष्यका रोचनाबल्या गुरवःस्युः
स्वयोनिवत् ॥ १० ॥ वृष्या रोचनदीपनीब-
लकरागुर्वामभिष्यंदिनीप्राणातर्प्पणकारिणीरस-
वतीश्लेष्माणकंबिभ्रती ॥ घोरानाहविबंधगुल्म-
शमनीपित्तास्रविच्छेदिनी स्नेहेनापिसुपूजिताच स-
ततंभक्षेच्चइंडारिकाम् ॥ ११ ॥ घृतपूरंबलकरंवृष्यं
मधुरशीतलम् ॥ हंतिवातंरक्तपित्तंश्लेष्मलंचाविशे-
षतः ॥ १२ ॥ क्षीरखर्जूरिकाःस्निग्धाः शुक्रमांसब-
लप्रदाः ॥ बल्यारतिकराहृद्याश्छर्द्यरोचकनाशनाः
॥ १३ ॥ सुस्निग्धा वटिकाचदुग्धमृदिताकां-
तिस्वसौख्यप्रदाबल्या कृच्छ्रकराश्रमप्रशमनामंदा-

आनंद देती है ॥ ९ ॥ घारिका इंडरिका पूडी फलोरी वड़ा आदि ये सब वीर्यमें हित हैं रोचन हैं बलमें हित हैं अपनी जातीके तरह भारे हैं ॥ १० ॥ इंडीरिका वीर्यमें हित है रोचन है दीपन है बलको करती है भारी है आमको करती है अभिष्यंदवाली हैं प्राणोंको तृप्त करती है रस वाली है कफको देती है भयंकर आनाह बंधा गुल्म इन्होंको नाशती है पित्तरक्तको छेदती है स्नेहसे पूजितकरी निरंतर खानी ॥ ११ ॥ घेवर बलको करता है वीर्यमें हित है मीठा है शीतल है वात रक्तपित्त इन्होंको नाशता है और विशेष कर कफको करता है ॥ १२ ॥ क्षीर खजूरिका चीकनी है वीर्य मांस बलको देती है बलमें हित है रातिको करती है सुंदर है अरुचीको नाशती है ॥ १३ ॥ दूधकी बड़ी चीकनी है दूधमें मर्दितकी जाती है कांति और सुखको देती है बलमें हितहै मूत्रकृच्छ्रको करती

ग्रयेद्दुर्जरा ॥ पित्तासृक्छमनायसाथसततं भक्ष्या-
स्वयं पुष्टिदा ॥ प्रोक्तेयंवटिकाघृतप्लुतकृताकामा-
ग्निसंदीपनी ॥१४॥ क्षीरवटिका ॥ सुस्निग्धाः क्षीरव-
टिकाःकांतिसौख्यबलप्रदाः ॥ तृष्णाकराःश्रमघ्ना-
श्चदुर्जराश्चविशेषतः ॥ १५ ॥ गुरवोबृंहणावृष्यारु-
चिशुक्रबलप्रदाः ॥ वातघ्नास्तैलपक्कास्तेवटकामा-
षसंभवाः ॥ १६ ॥ मुद्गजाताश्चये केचिल्लघवो
रुचिकारकाः ॥ दुर्जरालघवोरूक्षाश्चणकादिकृता-
युताः ॥ १७ ॥ कांजिकेतुविनिक्षिप्तावटकामा-
षसंभवाः ॥ वातघ्नारोचकाहृद्याः कफपित्तप्रको
पनाः ॥ १८ ॥ राजीचूर्णैर्विमिश्राकफपवन-
हरारोचका दीपनीस्यान्मंदाग्निध्वंसयुक्तामलवि

है परिश्रमको शांत करती है मंदाग्निवालाके दुःखसे जरतीहै रक्तपित्तको निरं-
तर नाशतीहै खानी चाहिये आपही पुष्टिको देती है ये बडी घीसे युतकरी काम
देव और अग्नीको जगाती है ॥ १४ ॥ क्षीरवटी चीकनी है कांति सुख
बल इन्हींको देती है तृषाको करती है परिश्रमको नाशतीहै और
विशेषकर दुर्जर है ॥ १५ ॥ उडदके बड़े भारे हैं पुष्टिको करतेहैं वीर्यमें
हित हैं रुची वीर्य बलको देते हैं तेलमें पकेहुये ये बातको नाशते हैं॥१६॥
मूंगके बड़े हलके रुचीको करते हैं चनोंके बड़े हलके हैं रूषे हैं ॥ १७ ॥
कांजीमें गेरे उड़दके बड़े बातको नाशते हैं रोचक हैं सुंदर हैं कफ
पित्तको कुपित करते हैं॥१८॥राईका चूर्णसे युत किया बडा कफ बातको
हरता है रुचीको उपजाता है मंदाग्निको नाश करताहै मल और विषको

षशमनाजारयेत्सर्वमन्नम् ॥ चिंचातोयैर्विमिश्रागुड लवणयुतापित्तहिक्कार्त्तिहंत्री तृष्णामूर्छाभिघातज्व-रपवनहराक्षुद्ररोगस्यहंत्री ॥ १९ ॥ ॥ तक्रंको-मलश्रृंगवेरकलिलिकाकुस्तुंबरीसंयुतं युक्त्यावर्त्ति-तमर्द्धशेषमपरेभांडेसुधूपावृते ॥ कृत्वातक्रमनोह-राश्चवटकास्तेषां रुचिर्मार्दवं स्वादुंसौरभमुद्वहंत्यह रहस्तंवेत्तिविश्वेश्वरः ॥ २० ॥ ॥ कूष्मांडार्कमरी-चैर्जीरकसिंधूत्थमेथिकासहितैः ॥ पिष्टैर्माषदलोत्थै-र्विहितावटकाश्चवटिकाश्च ॥ २१ ॥ ॥ श्लक्ष्णं गोधूमचूर्णंतुषरहितमुखं स्वादुतोयेनासिक्तंसंमर्द्यसुंद रीणांघनपरिलुलितं गोलकंसूक्ष्मपिष्टैः ॥ अंतःपात्रे सुतप्तेकरयुगरचिता मंडकाः श्वेतदीर्घानिक्षिप्ताभा

शांत करता है सब प्रकारका अन्नको जराती है छोटी अमलीके पानीसे युतकरी पितको हरतीहै हृदयके रोगको हरती है तृषा मूर्छा अभिघात ज्वर बात इन्होंको हरती है क्षुद्ररोगको हरती है ॥ १९ ॥ तक्र कोमल अदरकके कतले धनियां ये मिला युक्तिसे आवर्तितकर जब आधा शेषरहै तब धूपित किया पात्रमें घाल ऐसे तक्रसे सुंदर बड़े बना खावै रुचि को-मलपना स्वाद और सुंगधित रसको देते हैं उस रसको विश्वेश्वरही जानते है ॥ २० ॥ कोहलाको सूर्यके किरणोंसे धूपितकर पीछे जीरा सेंधानमक मेथी ये सब मिला उड़दकी दालकी पीठीमें मिला बड़े औ फलोरी बनानी ॥ २१ ॥ मिहीन और तुषसे रहित गेहुंका चून ले मीठा पानीसे सींच सुंदर स्त्रियोंसे मर्दित कराना पीछे करड़े गोले बना सुंदर तपायाहुवा तवापै

जनेषुचिमिचिमिचिमिताःशब्दयंतःसुसिद्धाः ॥२२॥
तेभक्ष्याभक्तभुक्तोपरिघृतसहितामुद्गयूषैर्विमिश्राआ-
ढक्यैर्वामसूरैर्घृतपिशितरसैर्जांगलानूपमांसैः ॥ काले
वासंतपूर्वेप्रहरयुगमुखेभोजनं नित्यपथ्यं रात्रौक्षीरा
ज्ययुक्तालिलितनरपतेर्भोजनंग्रीष्मकाले ॥ २३ ॥
गोधूममंडकारुच्यालघवश्चोष्णदीपनाः ॥ मंडका
मंडिकाश्चैवपथ्याअंगारपाचिताः ॥ २४ ॥ अ-
त्युष्णामंडकाःपथ्याह्यतिशीतागुरुस्मृताः ॥ क-
कूलकर्परीभ्रष्टाःकट्वांगारविपाचिताः ॥ २५ ॥
रक्तघ्नापित्तकोपीचस्वादुर्मारुतनाशिनी ॥ बृंहणी
दीपनीवृष्यागोधूमांगारपाचिता ॥ २६ ॥ शालि
पिष्टदधिखंडसंयुतादध्नएववटकेसुसंमताः ॥ घो-

दोनों हाथोंसे रचे लंबे मांडे डाल सेकने जब चिम चिम करते शब्द करने लगे तब सिद्ध जानने ॥ २२ ॥ भात खानेके पीछे घीसे सहित वे मांडे मूंगोंके यूषके अथवा हरड़का यूष तथा मसूरका यूष घी मांस का रस जांगल और अनूप देशके मांस इन्होंके संग वसंत आदिकालमें दो पहरमें नित्य खाना पथ्य है ग्रीष्मकालमें रात्रि विषे दूध घीसे युतकर राजा लोगोंको खाने योग्य है॥ २३ ॥ गीहूंके मांडे रुचीमें हित है हलके हैं गर्म हैं दीपन हैं अंगारोंपै पकाये मांडे और मंडिका पथ्य है ॥ २४ ॥ अत्यंत गर्म मांडे पथ्य हैं अत्यंत शीतल मांडे भारे हैं तवा तंदूरपै पकाये तथा चर्चरे कोइलोंपै पकाये ॥ २५ ॥ गेहूंसे बनाये और अंगारो पै पकाये मांडे और अंगाड़िका रक्तको नाशती है पित्तको कोपती है स्वादु है वातको नाशती है पुष्टि करती है दीपन है वीर्यमें हित है ॥ २६ ॥ शालि चावलोंकी पीठी दही खांड इन्होंसे संयुत किये

रवातशमनारुचिप्रदा नाशयंतिकिलपित्तजांरुजम् ॥ २७ ॥ दुर्जरंचणकादीनांवन्हिमांद्यकरंपरम् ॥ लघुरुच्याग्निजननंदद्यान्माषादिपूरणम् ॥ २८ ॥ मधुरंमधुराम्लंचतदेवप्रकरोतिच ॥ कफप्रकोपजननंचणकंपूरणंस्मृतम् ॥ २९ ॥ गोधूमचूर्णघनवेष्टितमाषमुद्गपिष्टंसुपक्वमितिवेष्टनिकावदंति॥ तांभक्षयेदतिबलंलभते मनुष्यस्तैलेनवासहघृतेनसुगंधिनावा॥३०॥तावद्गर्वोत्रभक्षाणांस्यंदतेश्लाघ्यतेपिच॥ उष्णोष्णाःसर्पिषास्नातायावन्नांगारपाचिताः॥३१॥ गुडगोधूमयोर्मिश्रैतैलपक्वान्नभक्षणात् ॥ करोतिपित्तश्लेष्माणंमारुतंचापकर्षति ॥ ३२ ॥ अथतैलवटिकाः॥ लघवः पर्पटारुच्याःकफघ्नाःशालिसंभ-

दहीके बड़े बनते है ये घोर वातको शांत करते हैं रुचीको देते हैं भयंकर पित्तरोगको नाशते हैं ॥ २७ ॥ चना आदिकी पीठी देके बनाया पदार्थ दुःखसे जरता है मंदाग्नीको बहुत करता है उड़द आदिकी पीठीसे पूरित किया पदार्थ हलका है रुचीमें हित है अग्नीको उपजाता है॥२८॥ मधुर और मधुर अम्लपदार्थसे पूरित किया पदार्थ मधुर और अम्लके समान गुणोंको देता है चनोंका पूरण कफके कोपको उपजाता है॥२९॥ गीहूंका चून उड़दकी पीठी मूंगकी पीठी इन्होंकी वेष्टनिका बनानी उनको मनुष्य खावै तो बलको प्राप्त होता है घीके साथ अथवा सुगंधित तेलके साथ खानी उचित है ॥ ३० ॥ भक्ष्य पदार्थोंको तबही तक गर्व है और तबहीतक प्रशंसित किया गया है कि, जबतक गरम गरम निकाल घीमें डुबोये अंगार मंडिका नहीं खानेमें आती है ॥ ३१ ॥ गुड़ गीहूंसे मिलाया और तेलसे पकाया अन्न भोजनसे पित्त कफको करता है और वातको दूर करता है ॥ ३२ ॥शालि

वाः॥ गुरवोरोचनाश्चैवशालिमुद्गादिसंभवाः ॥३३॥ विष्टंभीपायसीबल्यामेदःकफकरीगुरुः ॥ कफपित्तकरीबल्याकृशरानिलनाशनी ॥ ३४ ॥ तैलेविपक्वावटकाश्चशालिजाः संदुर्जरारोचनभक्षणाश्च ॥ कफप्रकोपंजनयंति सद्योविशेषतःकूरवटीचजीर्णा ॥ ३५ ॥ सक्तवोबृंहणावृष्याः कृष्णाःपित्तकफापहाः ॥ पीताःसद्योबलकराभेदिनःपवनापहाः ॥ ३६ ॥ संधानकृत्पित्तहरः पुराणस्तंडुलःस्मृतः ॥ सुदुर्जरःस्वादुरसो बृंहणस्तंदुलोद्भवः ॥ ३७ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेपक्वान्नवर्गः ॥ अतःपरं फलगुणाः कथ्यंते ॥ त्रिदोषशमनंपथ्यंहृद्ययंमधुर

चावलोंके पापड हलके हैं रुचीमें हित हैं कफको नाशते हैं शालि और मूंग आदिके पापड़ भारे हैं रुचीको उपजाते हैं ॥ ३३ ॥ खीर विष्टंभ करता है बलमें हित है कफको करता है भारी है खीचड़ी कफ पित्तको करती है बलमें हित है वातको नाशती है ॥ ३४ ॥ शालि चावलोंके बड़े तेलमें पकाये दुःखसे जरते हैं रुचीको करते हैं भक्षणरूप हैं विशेष कर पुरानी कूरवटी कफके कोपको शीघ्र करती है ॥ ३५ ॥ काले सत्तू पुष्टिको करते हैं वीर्यमें हित हैं पित्त कफको नाशते हैं पीले सत्तू बलको शीघ्र करतेहैं भेदन हैं वातको नाशते हैं ॥ ३६ ॥ पुराना चावल अलग हुआको जोड़ता है पित्तको हरता है चावलोंका पदार्थ दुःखसे जरता है स्वादु रसवाला है पुष्टिको करता है ॥ ३७ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें पक्वान्नवर्ग समाप्त हुआ–इसके अनंतर फलोंके गुण कहेजाते है–सुंदर पकाहुआ अनारका फल त्रिदोषको

शीतलम् ॥ छर्द्यरोचकतृष्णाघ्नंशोषपित्तज्वराप-
हम् ॥ १ ॥ दाहपित्तप्रशमनंसर्वरोगविनाशनम्॥
बलवर्णकरंहृद्यंसुपक्वंदाडिमीफलम् ॥ २ ॥ अत्य-
म्लंमधुरं कषायगुणभृद्विद्वद्भिरुक्तंरसेवीर्येसंशमनं
समीरणहरंपित्तापहंदीपनम् ॥ किंचित्संग्रहणंक-
फस्यहरणंप्रायोविपाकेपुनः प्रख्यातारसवीर्यपाक-
विभवैरेवंगुणादाडिमे ॥ ३ ॥ चक्षु-
ष्यारक्तपित्तंशमयतिमधुराशीतवीर्याविपाकेस्वादुः
स्निग्धाकषायागुरुरधिकतृषाशोषदोषापहंत्री ॥ द्रा-
क्षाक्षीणक्षतानामपहरतिवमीश्वासकासज्वरार्त्तिति-
क्तास्यत्वंमदंचप्रवरतरफलेपूत्तमासंप्रदिष्टा ॥ ४ ॥
द्राक्षासैवतुधातुवृद्धिजननीसंतर्प्पणीशोषहातृष्णार्त्ति-

शांत करता है पथ्य है नेत्रोंमें हित है मीठा है शीतल है छर्दि अरोचक तृषा शोष पित्त ज्वर इन्होंको नाशता है ॥ १ ॥ दाह और पित्तको नाशता है सब रोगोंको नाशता है बल और वर्णको करता है सुंदर है ॥ २ ॥ रसमें अत्यंत खट्टा है मीठा है कसैला गुण वाली है वीर्यमें संशमन है वातको हरता है पित्तको हरता है दीपन है कछुक मलको बांधता है कफको हरता है प्रायतासे पाकमें रस वीर्य पाक विभव इन्हों करके ये गुण अनारमें हे ॥ ३ ॥ पकी दाख आंखोंमें हित है रक्तपित्तको शांत करती है मीठी है पाकमें शीतल वीर्यवाली है स्वादू है चीकनी है कसैली है अत्यंत भारी है तृषा शोष दोष इन्होंको नाशती है क्षीण मनुष्योंके छर्दि श्वास खांसी ज्वर मुखको कड़वापन और मद इन्होंको नाशती है ॥ ४ ॥ पकीहुई दाख धातुओंको बढाती है तृप्ति करती है शोषको नाशती है तृषा वात छर्दि इन्होंको नाशतीहै

व्यथनीसमीरशमनीछर्द्यामयध्वंसिनी ॥ पाके-
म्लासुरसारसेनमधुरा शीताचवीर्येणसा संपक्काचि-
हिताज्वरेचकफजेविण्मूत्रसंशोधिनी ॥ ५ ॥
त्वक्तिक्ताकटुकाकफाक्रिमिहरीस्निग्धानिलध्वंसिनी
मांसोद्बृंहणवातापित्तशमनीवृष्यामहादुर्ज्जरा ॥ अम्ले-
केसरमग्निवृद्धिजननंसश्वासकासापहंहिक्काछर्दितृ-
षास्यजाड्यहरणंतन्मातुलुंगोद्भवम् ॥ ६ ॥ ति-
क्तास्निग्धाभवतिकटुकामातुलुंगस्यवातध्वंसायत्व-
ग्गुरुचमधुरं बृंहणंवात्तपित्ते ॥ मांसंभिन्नं भ-
वतिलघुतत्केसरं कासहिक्काश्वासश्लेष्मानिलजठर-
जिद्गुल्मशूलाऽनिलघ्नम् ॥ ७ ॥ सिंधूत्थे-
नघनागमेचसितयाकाले शरत्संज्ञकेहेमंतेचणकार्द्र-

पाकमें खट्टी है सुंदर रसवाली है मीठी है वीर्यमें शीतल है कफका ज्वरमें हित है मलमूत्रको शोधती है ॥ ५ ॥ दाखवृक्षकी छाल कड़वी है चर्चरी है कफ और कृमियोंको हरती है चीकनी है वातको नाशती है मांसको पुष्ट करती है वातपित्तको शांत करती है वीर्यमें हित है बहुत दुःखसे जरती है बिजौराका केसर अग्निको बढाता है श्वास खांसी हुचकी छर्दि तृषा मुखका जड़पना इन्होंको हरता है ॥ ६ ॥ बिजौराकी छाल कड़वी है चीकनी है चर्चरी है वातको नाशती है बिजौराका गूदा भारी है मीठा है पुष्टिकारक है वातपित्तमें हित है भेदन है–बिजौराका केसर खांसी हुचकी श्वास कफरोग वातरोग उदररोग इन्होंको जीतता है गुल्म शूल वातको नाशता है ॥ ७ ॥ वर्षा कालमें सेंधा नमकके संग शरद्

हिंगुमरिचैःसिद्धार्थतैलान्वितैः ॥ एतैस्तैः शिशिरेम धावनियुतैर्ग्रीष्मेगुडेनार्चितं वैद्यैर्भूमिपमातुलुंगमुदितं सर्वत्रसाधारणम् ॥ ८ ॥ ॥ जंबीरकं पाचनदीपनंच वातापहं पित्तकफप्रदंच ॥ अन्नस्यपाकंत्वचिरेणकुर्या त्सरोचनंवह्निविवर्द्धनंच ॥ ॥ ९ ॥ कटुकमधुरमम्लं सुप्रतीकंरसेषु रुचिकरमुदराग्नेर्दीपनं वातहारि ॥ निहतकफसमीरं पित्तमाहंतिवीर्यं करुणफलमतीदं वातपित्तंविपाके ॥ १० ॥ निंबूफलं रोचनमाग्निवृद्धिंकरोतिपित्तं चसवातरक्तम् ॥ अचाक्षुषंश्लेष्मकरं विशेषाद्भुक्तेचपाकं कुरुतेचसद्यः ॥ ११ ॥ नारिंगस्यफलं बलंचकुरुतेसुस्वादुहृद्यंलघुश्रेष्ठं वन्हि-

ऋतुमें मिश्रीके संग हेमंत ऋतुमें चना अदरक हींग मिरच इन्होंके संग शिशिर ऋतुमें चना अदरक हींग मिरच सिरसमतेल इन्होंके संग वसंतमें किसीसेभी नहीं युत और ग्रीष्म ऋतुमें गुड़के संग ऐसे हे राजन् सब कालमें बिजौरा खाना॥८॥ बिजौरा पाचन है दीपन है वातको नाशता है पित्त कफको देता है अन्नको शीघ्र पकाता है रुचिकारक है और अग्नीको बढाता है ॥ ९ ॥ करंडफल चर्चरा है मीठा है खट्टा है रसमें सुंदर है रुचिकारक है उदरकी अग्नीको दीपता है वातको हरता है कफ वात पित्तको हरता है वीर्यको नाशता है पाकमें वात पित्तको नाशता है ॥ १० ॥ नींबूफल रुचीको करता है अग्नीको बढाता है पित्त और वातरक्तको करता है नेत्रोंमें हित नहीं है विशेषकर कफको करता है भोजन करनेमें पाकको शीघ्र करता है ॥ ११ ॥ नारंगीफल बलको करता है स्वादु है सुंदर है हलका है श्रेष्ठ है अग्नीको

करं विदाहशमनं भुक्तान्नपाकप्रदम् ॥ सर्वारोचकनाशनंश्रमहरं वातापहंपुष्टिदं भुक्तापिप्रतिभक्षितं न कुरुते किंचिद्विकारंनृणाम् ॥ १२ ॥ ईषद्रसेमधुरशीतलमम्लतिक्तं वीर्योद्गमाच्छमनदीपनपाचनं च ॥ आवेदयंतिकफपित्तकरं विपाकेनारिंगसत्फलमुदारधियोवदंति ॥ १३ ॥ ॥ सुस्वादुपाकेरसहृद्यरक्तपित्तप्रकोपं विलयंतिमांद्ये ॥ दाहज्वरं नाशयतीतिनित्यं प्राज्ञाश्चवैद्यामधुकर्कटींच ॥ १४ ॥ मोचंस्वादुरसं विपाकमधुरंवीर्येण शीतंजडंपित्तघ्नंत्वनिलापहं गुरुतरं पथ्यंनमंदेऽनिले ॥ सद्यः शुक्रविवर्द्धनंक्रमिहरं तृष्णापहंशांतिदं दीप्ताग्नेः सुखदंकफामयकरंसंतर्प्पणंप्राणिनाम् ॥ १५ ॥ स्निग्धंस्वादुरसं विपाकम-

करता है दाहको शांत करता है भोजनसे अन्नको पकाता है सब प्रकारका अरोचकको नाशता है परिश्रमको हरता है वातको नाशताहै पुष्टिको देता है भोजन करकेभी खायाहुआ मनुष्योंके विकारको नहीं करता ॥ १२ ॥ नारंगीका उत्तम फल अल्परसवाला है मीठा है शीतल है खट्टा है कड़वा है वीर्यके प्रभावसे शमनहै दीपन और पाचन है पाकमें कफ पित्तको करताहै ऐसे कुशल वैद्य कहतेहै ॥ १३ ॥ मीठीकाकड़ी पाकमें सुंदरस्वाद है रसमें सुंदर है रक्तपित्तके कोपको नाशती है मंदता देती है दाह ज्वरको निरंतर नाशती है ऐसे वैद्य कहते है ॥ १४ ॥ केला रसमें स्वादु है पाकमें मीठा है वीर्यसे शीतल है जड है पित्त वातको नाशता है अत्यंत भारी है मंदाग्निमें पथ्य नहींहै वीर्यको शीघ्र बढाताहै क्रमि और तृषाको हरताहै शांतिको देताहै दीप्त अग्निवालाको सुख देताहै कफ-

धुरंहृद्यंजडंदुर्ज्जरंपित्तघ्नंकृमिवर्द्धनंमदकरंवातामयध्वंसनम् ॥ आमश्लेष्मविकोपनं प्रशमनंवह्नेःश्रमध्वंसनं कंदर्पस्यबलंददाति सततंतन्नालिकेरीफलम् ॥ १६ ॥ सुस्वादुवृष्यलघुदीपनरूक्षशीतं तद्वातपित्तहरबस्तिविशोधहेतुः ॥ स्यान्नालिकेरसलिलंशशिकांतिपथ्यं पित्तज्वरस्यविषहारिवदंतिवैद्याः ॥ १७ ॥ नालिकेरजलम् ॥ भव्यंभव्यतरं स्वादुकिंचिदम्लंसुरोचनम् ॥ वातघ्नं मुखवैरस्यनाशनंसुखदीपनम् ॥ १८ ॥ अम्लंपित्तकफापहं रुचिकरंशीतंकषायं तथाकिंचित्स्वादुरसंकषायमधुरंदोषत्रयध्वंसनम् ॥ मूत्रव्याधिहरंप्रमेहशमनं विष्टंभविच्छेदनं भुक्ताभुक्तहितं सदामृतरसंपथ्यंचधात्रीफलम् ॥ १९ ॥

के रोगको नाशता है मनुष्योंके तृप्ति करता है ॥ १५ ॥ नारियल चीकना है रसमें स्वादु है पाकमें मीठा है सुंदर है जड़ है दुःखसे जरता है पित्तको नाशता है कृमियोंको बढाता है मदको करता है वात रोगको नाशता है आम और कफको कोपता है अग्नीको नाशता है परिश्रमको नाशता है कामदेवको निरंतर बल देता है ॥ १६ ॥ नारियलका पानी सुंदर स्वाद है वीर्यमें हित है हलका है दीपन है रूषा है शीतल है वात पित्तको हरता है मूत्राशयको शोधता है चंद्रमासरीखी कांति देता है पित्तज्वरवालाको पथ्य है विषको हरता है ऐसे वैद्य कहते है ॥ १७॥ करोंदा उत्तम है अत्यंत सुंदर है स्वादु है कछुक खट्टा है सुंदर रुचीको देता है वातको नाशता है मुखके विरसपनाको नाशता है मुखको दीपता है ॥१८॥ आंवला खट्टा है पित्त कफको नाशता है रुचीको करता है शीत-

तिक्तंस्वादुकषायमम्लकटुकंस्निग्धंरसेरोचनंचक्षु-
ष्यंबलवर्णदंधृतिकरं वृष्यंचबुद्धिप्रदम् ॥ कंडूकु-
ष्ठविसर्जनंज्वरहरंतृड्दाहतापापहं जातंकिंबहुना
त्रिदोषशमनंधात्रीफलंप्राणिनाम् ॥ २० ॥ पा-
नीयामलकंस्वादुहृद्यंपित्तकफापहम् ॥ शीतलंवृ-
ष्यमायुष्यंदाहज्वरहरंपरम् ॥ २१ ॥ बालंपि-
त्तकफास्रवातजननं बद्धास्थिताहृग्विधंपक्वंस्वादु-
तरं त्रिदोषशमनं क्षीणांगपुष्टिप्रदम् ॥ धातोर्वृ-
द्धिकरं विपाकमधुरंसंतर्प्पणं कांतिदं तृष्णाशोष-
निवारणं रुचिकरमाम्रंफलेषूत्तमम् ॥ २२ ॥

ल है कसैला है कछुक स्वाद रस वाला है कसैलासहित मीठा है त्रिदोषको नाशता है मूत्ररोग और प्रमेहको नाशता है विष्टंभवाला है विशेषकर छेदन है भोजन करके भी भोजनमें हित है सब कालमें अमृत समान रसवाला है और पथ्य है ॥ १९ ॥ आंवला कड़वा है स्वाद है कसैला है खट्टा है रसमें चर्चरा है रोचन है नेत्रोंमें हित है बल और वर्णको देता है धैर्यको करता है वीर्यमें हित है बुद्धिको देता है खाज कुष्ठ ज्वर तृषा दाह ताप इन्होंको नाशता है मनुष्योंके बहुत दोषोंको नाशता है ॥ २० ॥ पानी आंवला स्वादु है सुंदर है पित्त कफको नाश-ता है शीतल है वीर्यमें हित है आयुमें हित है दाह ज्वरको हरता है ॥ २१ ॥ छोटा आंबका फल पित्त कफ रक्त वात इन्होंको उपजाता है बंधी हुई गुठलीवाला आंबमें भी येही गुण है पका हुआ आंबका फल अत्यंत स्वादू है त्रिदोषको शांत करता है क्षीणहुआ अंगवालोंको पुष्टि देता है धातुओंको बढाता है पाकमें मीठा है तृप्तिकारक है कांति-को देता है तृषा और शोषको दूरकरता है रुचीको करता है फलोंमें

संतर्प्पणोयःसकलेंद्रियाणां बलप्रदोवृष्यतमश्चहृ-
द्यः ॥ स्त्रीषुप्रहर्षंविपुलं ददातिफलाधिराजः सह-
कारएव ॥२३॥ आम्रंपाकस्यकालेमधुरमिहरसंही-
षदम्लंचहृद्यं रेतोवृद्धिंविधत्तेशमयतिपवनंपाचनं
दीपनंच ॥ आनंदंसंददातिप्रतिदिशतिबलंवीर्यतः
सुश्रुताद्या विख्याताः सर्वलोकैर्ब्रुतिजनितकफंदु-
र्ज्जरंकीर्त्तयंति ॥ २४ ॥ पक्वाम्रफलनिर्यासैधौता-
भ्रष्टगुडेनवा ॥ मृदवोबहवोदीर्घाःकेशास्युरतिसुं-
दराः ॥ २५ ॥ आमंकंठहरंकपित्थमधिकं जि-
ह्वाजडत्वप्रदं तद्दोषत्रयकोपनं विषहरं संग्राहकंरो-
चनम् ॥ पक्वंश्वासवमिक्रिमिश्रमतृषाहिक्कापनोदक्षमं
सर्वग्राहिविषापहंचकथितं सेव्यंततःसर्वदा ॥२६॥

उत्तम है ॥ २२ ॥ आंबका फल सब इंद्रियोंको तृप्तकरता है बलको
दता है वीर्यमें अत्यंत हित है सुंदर है स्त्रियोंमें बहुत आनंद देता है
फलोंका राजा है ॥ २३ ॥ पाक कालमें आंबका फल मीठा है कछुक
खट्टा है सुंदर है वीर्यको बढाता है वायुको शांत करता है पाचन और
दीपन है आनंद और बलको देता है सब लोकोंकरकै विख्यात हुये
सुश्रुत आदि वैद्य वीर्यसे कफकारक और दुर्जर कहते है ॥ २४ ॥
पकाहुआ आंबफलके रससे अथवा पकाया हुआ गुड़से धोये हुये
वाल कोमल लंबे और अत्यंत सुंदर हो जाते है ॥ २५ ॥ कच्चा कैथ-
फल कंठको हरता है जीभको जड करता है त्रिदोषको कोपता है विषको
हरता है मलको बांधता है रोचन है पकाहुआ कैथफल श्वास छर्दि
कृमि परिश्रम तृषा हुचकी इन्होंको नाशता है सब प्रकारसे मलको बांध-
ता है विषको नाशता है सब कालमें सेवितकरना उचित है ॥ ३६ ॥

दुर्जरोमधुराम्लश्चवातपित्तप्रणाशनः ॥ शीतः श्ले-
ष्मीचपनसोगुरुर्मंदाग्निकारकः ॥ २७॥ मधुराबृंहणी
वृष्यापित्तलात्वकृतृषाप्रदा ॥ पित्तघ्नीस्वादुहृद्या-
चमज्जाताद्दग्गुणोत्तमा ॥ २८ ॥ कषायोमधुरो
रूक्षः कटुकः श्लेष्मकारकः ॥ संग्राहीदुर्जरो जिह्वा-
जाड्यकारीजडोगुरुः ॥ करमर्द्दोतिमधुरः सुपक्वो-
म्लरसस्तथा ॥ वातपित्तप्रशमनः श्लेष्मक्रिमिवि-
नाशनः ॥ २९ ॥ अम्लिकायाः फलंपक्वंरक्तपि-
त्तकरंपरम् ॥ तृष्णाघ्नंस्यात्कषायोष्णंकफजंत्वानि-
लापहम् ॥ ३० ॥ भल्लातकस्यत्वङ्मांसबृंहणी
स्वादुशीतला ॥ तदस्थ्याग्निसमंमेध्यंकफवात-
हरंपरम् ॥ ३१ ॥ खर्जूरोरक्तपित्तं शमयातिम-

कटहलको फल दुःखसे जरता है मीठा और खट्टा है वातपित्तको शांत करता है शीतल है कफको करता है भारी है मंदाग्निको करता है ॥२७॥ चिरोंजीफल मीठा है पुष्टिकारक है वीर्यमें हित है पित्तको करता है त्वचारोग और तृषाको देता है पित्तको नाशता है स्वादू है सुंदर है इसकी मज्जा उत्तम गुणवाली है ॥ २८ ॥ ठींबरुफल कसैला है मीठा है रूखा है चर्चरा है कफकारक है मलको बांधता है दुःखसे जरता है जीभमें जड़पनाको करता है जड़ है भारी है ॥ २९ ॥ करोंदा विशेष अत्यंत मीठा है सुंदरपकाहुआ खट्टा रस वाला है वात पित्त कफ कृमि इन्होंको नाशता है ॥ २९ ॥ अमलीका पकाहुआ फल रक्तपित्तको करता है उत्तम है तृषाको नाशता है कसैला है गर्म है कफको उपजाता है वातको नाशता है ॥ ३० ॥ भिलावाकी छाल और गूदा पुष्टि करता है स्वादु है शीतल है भिलावाकी गिरी अग्नीके समान है बुद्धिमें हित है कफ वातको हरता है उत्तम है ॥ ३१ ॥ खजूरफल रक्तपित्तको शांत

धुरःस्वादुपाकोतिशीतस्तृष्णाशोषापहोवा विष-
मदरुजाश्वासहिक्कापनोदी ॥ स्निग्धोवृष्योबलासं
जनयतिनितरांवह्निमांद्यं विधत्तेकांतिवैंपुष्टियुक्ताव-
पुषिसमधिकं मूत्रकृच्छ्रंनिहंति ॥ ३२ ॥ पिंडखर्जू-
रमध्येतुतादृगेवनिगद्यते ॥ विशेषादूर्ध्वगेरक्तेदाहे
पित्तेचशस्यते ॥ ३३ ॥ पिंडखर्जूरः ॥
सिंदोलंकफवातपित्तशमनं रक्तातिसारापहं पांडू-
कुष्ठभगंदरप्रशमनं तीव्राश्मरीच्छेदनम् ॥ हृद्रो-
गेषुहितं सदाबलकरं कामाभिसंदीपनं कासक्षीण
विरेचनेज्वरमदेशस्तंचरंभाफलम् ॥३४॥ सौवर्णमो-
चाकफपित्तहारिणी विष्टंभिनी दीपनकारिणीच॥सु-
दुर्ज्जरादाहविघातिनीचरक्तंसपित्तं शमयेच्चनिश्चितम्
॥ ३५ ॥ सुवर्णकदलीफलम् ॥ ईषत्कषाया

करता है मीठा है पाकमें स्वादू है अत्यंत शीतल है तृषा और शोषको नाशता है विष मदरोग श्वास हुचकी इन्होंको दूर करता है चीकना है वीर्यमें हित है कफको करता है निरंतर मंदाग्नीको करता है शरीरमें कांति देता है मूत्रकृच्छ्रको नाशता है ॥ ३२ ॥ पिंडखजूरफलमें भी येही गुण है परंतु विशेषकर ऊर्ध्वगत रक्तपित्तमें और दाहमें श्रेष्ठ है ॥ ३३ ॥ सिंदोलकेला कफ वातपित्तको शांत करता है रक्तातीसार पांडु कुष्ठ भगंदर इन्होंको नाशता है तीव्र पथरीको छेदता है हृदयके रोगों-में हित है सब कालमें बलको करता है कामदेवको जगाता है खांसी क्षीण विरेचन ज्वर मद इन्होंमें श्रेष्ठ है ॥ ३४ ॥ पीला केलाका फल कफ पित्तको हरता है विष्टंभवाला है दीपनकरता है दुःखसे जरता है दाहको नाशता है रक्तपित्तको निश्चय शांत करता है ॥ ३५ ॥ खारिकी

मधुरावातपित्तनिबर्हणी ॥ बल्यावृष्याचहृद्याच विशेषादुन्नतातथा ॥ ३६ ॥ अश्वत्थवृक्षस्यफलानि पथ्यान्यतीवहृद्यानिसुशीतलानि ॥ निघ्नंतिपित्तं सहशोणितेन दाहंतृषाछर्दिमरोचकंच ॥ ३७ ॥ औदुंबरंफलमतीवसुशीतलंचसद्योनिवारयति शोणितपित्तमुग्रम् ॥ पथ्यंविषेविषमपित्ताशिरोविकारे नासाप्रवृत्तरुधिरेचविशेषतस्तु ॥ अपक्कंश्लेष्मजननंमलविष्टंभकारकम् ॥ ३८ ॥ तुंबीफलंश्लेष्मकरंचपित्तरक्तातिसारग्रहणीषुशस्तम् ॥ मूत्रावरोधं कुरुतेऽतितीव्रंविशेषतोरक्तसमीरणंच ॥३९॥ सराजकोशातकिपित्तहंत्री महागदेशोषमदात्यये च ॥ भ्रमक्लमेमेहभगंदरेचव्रणेषुपित्तेष्वपिनित्यपथ्यम् ॥ ४० ॥ महाकोशातकी पित्तशमनीक्षुत्तृ-

कछुक कसैली है मीठी है वातपितको दूर करती है बलमें हित है वीर्यमें हित है सुंदर है विशेषकर ऊंची है ॥ ३६ ॥ पीपल वृक्षके फल पथ्य हैं अत्यंत सुंदर हैं सुंदर शीतल हैं रक्त पित्त दाह दाहतृषा छर्दि अरोचक इन्होंको नाशते हैं ॥ ३७ ॥ गूलरकाफल अत्यंत शीतल है भयंकर रक्त पित्तको शीघ्र दूर करता है विषमें विषम ज्वर पित्तका शिरोरोग और विशेषकर नाकसे गिरता हुआ रक्तमें पथ्य है कच्चाफल श्लेमाको करता है मलको रोकता है ॥ ३८ ॥ तूंबीकाफल कफको करता है पित्त रक्तातिसार ग्रहणी रोग इन्होंमें श्रेष्ठ है मूत्रको बहुत रोकता है विशेषकर रक्त वातको करता है॥ ३९॥वनकी तूंबीका फल पित्तको नाशता है-महारोग शोष मदात्यय भ्रम ग्लानि प्रमेह भगंदर भ्रम पित्त इन्होंमें नित्य पथ्य है ॥ ४० ॥ बडीतूंबी पित्तको शांत

डर्दनी ॥ मेहेहितासदादाहेपित्तच्छर्दिविनाशिनी ॥ ॥४१॥ इत्यायुर्वेदेश्रीसुषेणरचितेफलवर्गः॥अथशाकान्युपदेक्ष्यामः ॥ फलंपर्यागतंशाकमशुष्कंतरुणंनवम् ॥ पत्रंपुष्पंफलंनालं कंदंसस्वेदजंतथा ॥ १ ॥ शाकंषड्विधमुद्दिष्टंसर्वविद्याद्यथोत्तरम् ॥ अन्यत्रवस्तुमध्यस्थकालशाकं पुनर्नवाः ॥ २ ॥ कालशाकः ॥ शीतोरूक्षोलघुरतितरां पित्तरक्तापहंतास्वादुःपाकेभवति च रसेस्वादुरेवातिहृद्यः ॥ हन्याद्व्याधिंविषमविषजंश्लेष्मवातप्रकोपंसद्योमज्जामयविघटनस्तंदुलीयोतिपथ्यः ॥ ३ ॥ रसेविपाकेमधुरोतिशीतोरूक्षो मदारोचकनाशनश्च ॥ सदाहपित्तंरुधिरंविषंचाविशेषतोहंति च तंदुलीयः ॥ ४ ॥ बिंबीफलंस्वादुशीतं स्तंभनंलेखनंगुरु ॥ पित्ता

करती है भूख और तृषाको नाशती है प्रमेहमें हित है दाहमें सदा हित है पित्तकी छर्दिको नाशती है ॥ ४१ ॥ यहां सुषेणका किया आयुर्वेद महोदधिमें फल वर्ग समाप्त हुआ—अब शाकोंको कहते है—फलको पर्यागत हुआ नहीं सूका तरुण—नया ऐसा शाक हित है पत्ता फूल फल नाल-कंद स्वेदज ऐसे शाक छः प्रकारके हैं इन्होंमें सब उत्तरोत्तर क्रमसे जानने काल शाक और सांठी अन्य वस्तुके मध्यमें स्थित हैं ॥ २ ॥ चौलाईका शाक शीतल है रूखा है अत्यंत हलका है पित्तरक्तको नाशता है पाकमें और रसमें स्वादू है अत्यंत सुंदर है विषमरोग विषजरोग कफ वातका कोप मज्जारोग इन्होंको नाशता है पथ्य है ॥ ३ ॥ चौलाई रसमें और पाकमें मीठा है अत्यंत शीतल है रूखा है अरोचकको नाशता है दाह पित्तरक्त विष इन्होंको विशेषसे नाशता है ॥ ४ ॥ बिंबीफल

स्त्रदाहशोफघ्नं वाताध्मानाविबंधकृत् ॥ ५ ॥
कर्कोटकफलंगुल्मशूलपित्तकफापहम् ॥ त्रिदो-
षकुष्ठमेहघ्नमीषन्मधुरतिक्तकम् ॥ कासश्वासज्वर
हरंमारुतघ्नंपरंलघु ॥ ६ ॥ वास्तूकोग्निकरोर
सेचमधुरः पित्तापहश्चाक्षुषः स्निग्धोवातविनाशनः
क्लमहरः कुष्ठादिदोषापहः ॥ वर्चोमूत्रविरोधनः
प्रथमतः श्लेष्मामयानांतथाशाकानामपिचोत्तमो
लघुतरः पथ्यःसदाप्राणिनाम् ॥ ७ ॥ वास्तु
केषुचसर्वेषुशस्यतेकंठवास्तुकम् ॥ चिल्लीवास्तु
कवज्ज्ञेयाततोन्यूनाचकिंचन ॥ ८ ॥ सक्षारःकृमि
जित्त्रिदोषशमनःसंदीपनः पाचनश्चक्षुष्योमधुरः
सदारुचिकरोविष्टंभशूलापहः ॥ वर्चोमूत्रविशो-

स्वादू है शीतल है लेखन है भारी है पित्तरक्त दाह शोजा इन्होंको नाशता है वात अफरा बंधा इन्होंको करता है ॥ ५ ॥ ककोड़ाफल गुल्म शूल पित्त कफ इन्होंको नाशता है त्रिदोष कुष्ठ प्रमेह इन्होंको नाशता है कछुक मीठा है कड़वा है खांसी श्वास ज्वर इन्होंको हरता है वातको नाशता है बहुत हलका है ॥ ६ ॥ वथुवा अग्निको करता है रसमें मीठा है पित्तको नाशता है नेत्रोंमें हित है वातको नाशता है ग्लानि और कुष्ठआदि दोषोंको नाशता है मलमूत्रको रोकता है कफके रोगोंको नाशता है सब शाकोंमें उत्तम है अत्यंत हलका है ॥ ७ ॥ सब प्रकारके वथुवोंमें कंठवथुवा उत्तम है चिल्ली शाकभी वथुवाकी तरह जानना उस्से कछुक न्यून है ॥८॥ वथुवा शाक खारसहित है कृमियोंको जीतता है त्रिदोषको शांत करता है दीपन है पाचन है नेत्रोंमें हित है मीठा है सब कालमें रुचीको करता है विष्टंभवाला है शूलको नाशता है

धनःस्वरकरः स्निग्धोविपाकेकटुर्वास्तूकः सकलामयप्रशमनश्चील्हीतदेवोत्तमा ॥ ९ ॥ कफस्यवातस्यशमंकरोति उष्णंचपित्तं कुरुतेऽग्निदीप्तिम् ॥ हृद्यंकृमिघ्नंचसुरोचकंचह्याध्मानविड्बंधविनाशनंच ॥ १० ॥ तिक्तंसुतीव्रंमधुरंचसाम्लं वातापहंपित्तविनाशनंच ॥ श्लेष्माकरंरेचनपाचनंच कोटीतिनामाग्निकरंनृणांच ॥ ॥ ११ ॥ राजिकाकफसमीरणहंत्रीरोचनाग्निजननी चहृद्धिता ॥ कंठहृत्कृमिविनाशनकर्त्रीउष्णवीर्यमपहंतिचशूलम् ॥१२ ॥ शतपुष्पामवातघ्नीशूलगुल्मोदरापहा ॥ दीपनीचविशेषेणकिंचित्पित्तप्रकोपनी ॥ १३ ॥ बल्यावृष्याचकंठ्याकफपवनहरास्यात्रिदोषेषुशस्तालघ्वी मूत्राभिघातप्रशमनगमनेस्या

मलमूत्रको शोधता है स्वरको करता है पाकमें चर्चरा है सब रोगोंको नाशता है इस्सेभी अधिक गुण चिल्ली शाकमें हैं ॥ ९ ॥ सहोंजना कफ वातको शांत करता है गर्म है पित्त और दीप्त अग्नीको करता है सुंदर है कृमिको नाशता है सुंदर रोचक है अफरा और मलका बंधाको नाशता है ॥ १० ॥ कोटी शाक कड़वा है बहुत तेज है मीठा है खट्टा है वात पित्तको नाशता है कफको करता है रेचन है पाचन है मद और अग्नीको करता है ॥ ११ ॥ राई कफ वातको नाशती है रुची और अग्नीको उपजाती है हृदयमें हित है कंठरोग हृदयरोग कृमि इन्होंको नाशती है वीर्यमें गर्म है शूलको नाशती है ॥ १२ ॥ सोंप आम वातको नाशती है शूल गुल्म पेटरोग इन्होंको नाशती है विशेषकर दीपन है कछुक पित्तको कोपतीहै ॥ १३ ॥ राजवेल बलमें हित है

त्तथाकृच्छ्रहंत्री ॥ पित्तोद्रेकेचरक्तेविषमविषहरीदी पनीशाकवर्गेश्रेष्ठासाराजवल्ली फलमलमचलंधातु वृद्धिंकरोति ॥ १४ ॥ दृष्टिप्रसादंकुरुतेविशेषा द्रुचिप्रदंदीप्तिकरंचवन्हेः॥ विण्मूत्रदोषापहरंमलाढ्यं कौसुंभशाकंप्रवरं वदंति ॥ १५ ॥ कुसुंभी ॥ अत्युष्णवीर्यं कुरुतेऽग्निदीप्तिरक्तस्यपित्तस्यचकंठ रोगम् ॥ अचाक्षुषंशुक्रकरं विदाहिनसार्षपंशाक मिदंहिपथ्यम् ॥ १६ ॥ सक्षारंकफवातहा रिबलकृद्वह्नेस्तुसंदीपनंतिक्तोष्णंमधुरंतथाकटुरसमी षत्तुपित्तप्रदम् ॥ हृद्यंरुच्यमतीवपथ्यमपितद्दृ ष्टेरपथ्यंपुनर्वार्त्ताकंपरिपूर्णजातसरसंबालं न पक्वंहि तम् ॥ १७ ॥ वार्त्ताकंकफवातघ्नंकिंचित्पित्तप्र

वीर्यमें हित है कंठमें हित है कफ वातको हरती है त्रिदोषमें उत्तम है हलकी है मूत्राभिघातको शांत करती है मूत्रकृच्छ्रको नाशती है पित्त-की अधिकता रक्त विषमरोग विष इन्होंको हरती है दीपन है शाक वर्गमें श्रेष्ठ है राजबेलका फल अचल है धातुओंको बढाता है ॥ १४ ॥ करड़का शाक नेत्रको साफ करता है विशेष कर रुची देता है अग्नीको दीप्त करता है मल मूत्र दोषको नाशता है मलसे युत है उत्तम है ॥ १५ ॥ सिरसमका शाक वीर्यमें अत्यंत गर्म है अग्नीको दीप्त करताहै रक्तपित्त और कंठरोगको करता है नेत्रोंमें हितनहीं है वीर्यको करता है दाह करता है पथ्य नहीं है ॥ १६ ॥ वैंगन खारसहित है कफ वातको हरता है बलको करता है अग्नीको दीपन करता है कड़वा है गर्म है मीठा है चर्चरा रसवाला है कछुकपित्तको देता है सुंदर है रुचीमें हित है अत्यंत पथ्य है नेत्रोंको अपथ्य है बहुतछोटा हित नहीं है पूर्णरसवाला हित है ॥ १७ ॥ वैंगन कफ वातको नाशता

कोपनम् ॥ सरलंमूत्रलंप्रोक्तंबलकृद्वालमेवतु ॥
॥ १८ ॥ लवणमरिचचूर्णैनावृतंरामठाद्यंदहनवहनप
क्वमंबुकांतंनितांतम् ॥ हरतिपवनसंघंश्लेष्महंतृप्र
सिद्धंजठरभरणभोज्यंचारुभोज्यंभरित्रम् ॥ १९ ॥
बिंबीफलंस्वादुशीतंस्तंभनंलेखनंगुरु ॥ पित्तास्त्र
दाहशोफघ्नंवाताध्मानविबंधकृत् ॥ २० ॥ तिक्तंसु
तीव्रंमधुरंरसाम्लंवातापहंपित्तविनाशनंच ॥ श्ले
ष्माकरंरेचनपाचनंचकोठीमडंचाग्निकरंनराणाम् ॥
॥ २१ ॥ कर्कोटकफलंगुल्मशूलपित्तकफापहम् ॥
त्रिदोषापहंकुष्ठघ्नमीषन्मधुरतिक्तकम् ॥ कासश्वास
ज्वरहरं मारुतघ्नंपरंलघु ॥ २२ ॥ किंचित्क्षारं
सतिक्तंकटुकरसयुतं मूत्रलंदोषहारिश्रेष्ठंगुल्मेक्षयेच

है कछुक पित्तको कोपता है कोमल बैंगन बलको करता है बालक बैंगन बलको करता है ॥ १८ ॥ नमक मिरच हींग इन्होंके चूर्णसे युत हुआ और अग्नीसे पकाया पानीसे रहित ऐसा बैंगनका भुर्ता वात समूहको नाशता है कफको हरताहै प्रसिद्ध है पेटको भरता है सुंदर भोजनको योग्य है ॥ १९ ॥ दूसरा बिंबीफल स्वादु है शीतल है स्तंभन है लेखन है भारी है पित्तरक्त दाह शोजा इन्होंको हरता है वात अफराबंधा इन्होंको करता है ॥ २० ॥ कोठीमड़ कड़वा है सुंदर तीव्र है मीठा है रसमें खट्टा है वात और पित्तको नाशता है कफको करता है रेचन है पाचन है ॥ २१ ॥ करेला गुल्म शूल पित्त कफ इन्होंको नाशता है त्रिदोषको हरता है कुष्ठको हरता है कछुक कडवा है खांसी श्वास वात इन्होंको हरताहै बहुत हलका है ॥ २२ ॥ मूली कछुक खारी है कडवी है चर्चरा रसवाली है मूत्रको देता है दोषको

प्रबलतरमहाश्वासकासामयेषु ॥ कंठेश्रेष्ठंस्वराणाम
पहरतिरुजंनेत्ररोगापहारिस्यादेवं बालमूलंमहदपि
चहितंस्निग्धपाकंसमीरे ॥ २३ ॥ रुच्योदीपनपा
चनः कृमिहरोमंदानलोद्दीपनोत्हद्यःश्लेष्महरोलघुर्ब
लकरोदुर्नामनिर्णाशनः ॥ क्षीणानामपिपाटवंप्रकु
रुते सश्वासकासापहश्चक्षुष्योपिचसूरणःस्मृतिक
रोत्हत्पार्श्वशूलापहः ॥ २४ ॥ भूकंदस्त्वतिवा
तलोबलकरः श्लेष्माणमत्यर्थकृद्विष्टंभीगुरुमेदसोऽपि
विषमोवातामयोद्दीपनः ॥ मेहंकुष्ठरुजंकरोति
सततं तद्वातरक्तंमहत्पिंडालुःक्रिमिकोष्ठकृच्छ्रलघुकृ
पित्तामयध्वंसकः ॥ २५ ॥ बालंह्यनार्त्तवंजीर्णं
व्याधितंकृमिभक्षितम् ॥ कंठंविसर्जयेत्सर्वंयो

हरता है गुल्म क्षय अत्यंत प्रबल महाश्वास खांसी रोग इन्होंमें श्रेष्ठ है कंठमें श्रेष्ठ है स्वरोंके रोगको हरताहै छोटी और बडी मूली हित है चीकना पाकवाली है वातमें हित है ॥ २३ ॥ जमीकंद रुचीमें हित है दीपन पाचन है कृमियोंको हरता है मंदाग्नीको दीपता है सुंदर है कफको हरता है हलका है बलको करता है बवाशीरको नाशता है क्षीण पुरुषोंको सुख देता है श्वास और खांसीको हरता है आंखोंमें हित है स्मृतिको करता है हृदयका और पसलीका शूलको नाशता है ॥ २४ ॥ जमीकंद अत्यंत वातको करता है बलकारक है कफको बहुत करता है विष्टंभी है भारी मेद वालाको विषम है वातरोगको जगाता है पिंडालू प्रमेह कुष्ठ रोग बडा वातरक्त इन्होंको करता है कृमि कोष्ठरोग मूत्र कृच्छ्र हलकापन इन्होंको करता है पित्तका रोगको नाशता है ॥ २५ ॥ बहुत छोटा विनासमय उपजा पुराना रोगसे युत कीडोंसे भक्षित

वासम्यङ्गनरोहति ॥ २६ ॥ कुमुदोत्पलपद्मानां कंदामारुतकोपनाः ॥ कषायाःपित्तशमनाविपाके मधुराहिमाः ॥ २७ ॥ हृद्याःकफहराःकंदाःकटुकारसपाचनाः ॥ मेहकुष्ठक्रिमिहरावृष्याबल्यारसायनाः ॥ २८ ॥ सर्वदोषकरंहृद्यंपथ्यंरेतोविकारिणाम् ॥ दृष्टिशुक्रक्षयकरंकालिंगंकफवातकृत्॥ २९ ॥ वृष्यंवर्णकरंबलोपजननंपित्तापहंवाताजिन्मूत्राघातहरंप्रमेहशमनं कृच्छ्राश्मरीच्छेदनम् ॥ विण्मूत्रग्लपनंतृषार्त्तिशमनं क्षीणांगपुष्टिप्रदंकूष्मांडंप्रवरंवदंतिभिषजोवल्लीफलानांपुनः ॥ ३० ॥ पक्वं पक्वापहंरूक्षं स्वादुहृद्यंरुचिप्रदम् ॥ त्वचावृतं

किया अथवा नहीं अच्छी तरह जामा हुआ ऐसा पिंडालू कंठमें रोगको करता है॥ २६ ॥ कुमोदनी सुपेद कमल इन्होंके कंद वातको कोपते हैं कसैले है पित्तको शांत करते है पाकमें मीठे और शीतल है ॥ २७ ॥ वाराही कंद आदि सब कंद सुंदर हैं कफको हरते हैं चर्चरे हैं रसको पकाते हैं प्रमेह कुष्ठ कृमि इन्होंको हरते हैं वीर्यमें हित हैं बलमें हित हैं रसायन हैं ॥ २८ ॥ तरबूज सब दोषोंको करता है सुंदर है वीर्यके विकार-वालोंको पथ्य है दृष्टि और वीर्यको क्षय करता है कफ और वातको करताहै ॥२९॥ कोहला वीर्यमें हित है वर्णको करता है बलको उपजाताहै पित्तको नाशता है वातको जीतता है मूत्राघातको हरता है प्रमेहको शांत करता है मूत्रकृच्छ्र और पथरीको छेदता है मल मूत्रको नाशता है तृषाको क्षीण अंगवालोंको पुष्टि देता है वल्लीफलोंमें वैद्य कोहलाको उत्तम कहते है ॥ ३० ॥ और पकाहुआ कोहला पका हुआ को नाशता है रूखा है स्वादु है सुंदर है रुचीको देता है नया और गोल कोहला त्रिदे

तुसक्षारंत्रिदोषशमनंपरम् ॥ ३१ ॥ मूत्रावरोधशमनोबहुमूत्रकारीकृच्छ्राश्मरीप्रमथनो विनिहंतिपित्तम् ॥पथ्यःसशोणितसमुल्बणपित्तरोगेतृष्णापहंत्रिपुशमंतमुदाहरंति ॥ ३२ ॥ एर्वारुकंपित्तहरं सुशीतलंमूत्रामयघ्नंरुचिकारकंच ॥ सश्वासदाहेप्रशमंप्रशस्तंपित्तेचरोगे कफरोगवर्ज्यम् ॥ ३३ ॥ आलुकानिचसर्वाणिदुर्जराणिगुरूणिच ॥ मंदाग्निं चप्रकुर्वंतिरक्तपित्तकराणिच ॥ ३४ ॥ आलुकः ॥ सिंधनीवातशमनी वृष्यामधुरशीतला ॥ रक्तपित्तेच दाहेचपित्ताग्नीनांप्रशस्यते ॥ ३५॥ सिंधणी ॥ शीतलंरक्तपित्तघ्नंदाहज्वरहरंपरम् ॥ मृणालनालंवृष्यंच तृष्णाछर्दिविनाशनम् ॥ ३६ ॥ कमलनालम् ॥

षको बहुत नाशता है ॥ ३१ ॥ घीया मूत्र के रुकने को शांत करता है बहुत मूत्रको उपजाता है मूत्रकृच्छ्र और पथरीको नाशता है पित्तको नाशता है रक्तपित्तमें पथ्य है तृषाकी नाशता है दोषको शांत करता है ऐसे वैद्य कहते हैं ॥ ३२ ॥ काकड़ी पित्तको हरती है सुंदर शीतल है मूत्र रोगको नाशती है रुचीको करती है श्वास और दाहको शांत करती है पित्त रोगमें श्रेष्ठ है कफ रोगमें वर्जित है ॥ ३३ ॥ सब प्रकारके आलू दुःखसे जरते हैं भारे हैं मंदाग्नीको करते हैं रक्तपित्तको करते हैं ॥ ३४ ॥ सींध ककरी वातको नाशती है दृष्टिमें हित है मीठी है शीतल है रक्तपित्त दाहपित्त अग्नि रोग इन्होंको श्रेष्ठ है ॥३५॥ कमलका नाल शीतल है रक्तपित्तको नाशता है दाह और ज्वरको हरता है कमलडंडीकी नाल वीर्यमें हित है तृषा और

शृंगाटकःशोणितपित्तहारीलघुः सरोवृष्यतमोवि-
शेषात् ॥ त्रिदोषतापभ्रमशोषहंता रुचिप्रदोमेहन-
दार्ढ्यहेतुः ॥ ३७ ॥ शींघोडा ॥ हंत्यम्लपित्त-
मरुचिंवमिमोहदाहं तृष्णासदक्लमहरंमधुरंचशीत-
म् ॥ कंठास्यशोषशमनं गुरुरक्तपित्तेक्षीणेचपित्त-
मनिवारिकसेरुकंस्यात् ॥ ३८ ॥ 'कसेरुकहेतांख-
रसूआं' ॥ चिल्लीवास्तुकदद्रुघ्नासंग्राहिगुरुवातला ॥
काचमाचीत्रिदोषघ्नीचांगेरी कफवातजित् ॥ ३९॥
वातहृद्दीपनीफंजीभारंगीनालिचव्यकौ ॥ मधुरौ
कफपित्तघ्नौकौसुंभंसर्वरोगकृत् ॥ ४० ॥ मूलकं
दोषकृच्चामं पक्वंवातकफापहम् ॥ राजिकापि-
त्तलावातकफघ्नास्तंदुलीयकाः ॥ ४१ ॥

छर्दिको नाशती है ॥ ३६ ॥ शिंघाड़ा रक्तपित्तको हरता है हलका है सर है विशेषकर वीर्यमें अत्यंत हित है त्रिदोष ताप भ्रम शोष इन्होंको नाशता है रुचीको देता है लिंगको दृढ करता है ॥ ३७ ॥ कसेरू अम्लपित्त अरुची छर्दि मोह दाह तृषा शिथिलता ग्लानि इन्होंको हरता है मीठा है शीतल है कंठरोग मुखशोष इन्होंको नाशता है रक्तपित्तमें और क्षीणमें पथ्य है ॥ ३८ ॥ चिल्लीवथुवा पुवाड़ ये मलको बांधते हैं भारी हैं वातको करते हैं काकमाची अर्थात् मकोह विशेष त्रिदोषको नाशती है चूकका शाक कफ वातको जीतता है ॥ ३९ ॥ फंजी वातको नाशती है दीपन है भारंगी और चव्य ये दोनों मीठेहै कफ पित्तको नाशते है कसूंभाका शाक सब रोगोंको करता है ॥ ४० ॥ कच्चीमूली दोषको करती है पकी हुई मूली वात कफको नाशती है राई

वर्षाभूर्वातपित्तघ्नी सिद्धार्थाकफवातहृत् ॥ कृमिपित्तकफध्वंसी दीपनःकासमर्दकः ॥ ४२ ॥ कर्कोटकं सवार्त्ताकं पटोलंकारवेल्लकम् ॥ कुष्ठमेहज्वरश्वासकासमेदःकफापहम्॥सर्वदोषहरंज्ञेयंकूष्मांडंबस्तिशोधनम् ॥ ४३ ॥ राजकोशातकीतूंबीफलमत्युग्रपित्तहृत् ॥ अल्पकंवालकंवातश्लेष्मलं पित्तनाशनम् ॥ ४४ ॥कालिंगंत्वल्पकंवातपित्तहृच्चकसेरुकम् ॥ शुंठीमरिचपिप्पल्यः कफवातहरामताः ॥ गुल्मशूलविबंधघ्नोहिंगुर्वातकफापहः ॥ ४५ ॥ यवानीधान्यकं जीरंवातपित्तकफापहम् ॥ सौवर्चलंविबंधघ्नं सैंधवंचात्रिदोषहृत् ॥ ४६ ॥ एतैः सुसंस्कृतं पक्वंभ्रष्टंव्यंजनसौरभम् ॥ पेयादिकंचकंठादीन्सर्व-

पित्तको करती है चौलाईकाशाक वात कफको नाशता है ॥ ४१ ॥सांठी वात पित्तको नाशती है सिरसम का शाककफ वातको हरता है कसोंदी काशाक कृमि पित्त कफ इन्होंको नाशता है दीपन है॥४२॥ ककोड़ा बैंगन परवल करेला ये कुष्ठ प्रमेह ज्वर श्वास खांसी मेद कफ इन्होंको नाशते हैं ॥ ४३॥ दुधिया तुरैया वनकी तूंबीकाफल अत्यंत भयंकर पित्तको हरता है खीरा छोटी ककड़ी वात कफको करती है पित्तको नाशती है ॥४४॥ छोटा तरबूज वातको हरता है कसेरू पित्तको हरता है सूंठ मिरच पीपल कफ वातको हरती है हींग गुल्म शूल बंधा वात कफ इन्होंको नाशती है ॥ ४५ ॥ अजमान धनियां जीरा वात पित्त कफको नाशते है काला नमक बंधाको नाशता है सेंधा नमक त्रिदोषको हरता है ॥ ४६ ॥ इन्होंसें संस्कारको प्राप्तकिया भूना हुआ और सुगंधित किया व्यंजन

दोषान्व्यपोहति ॥ ४७ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृतेफलशाकवर्गः ॥ ॥ अथेदानीं शिखरिणीकथ्यते ॥अद्धांढकंरुचिरपर्युषितस्यदध्नः खंडस्यषोडशपलानिशशिप्रभस्य ॥सर्पिःपलंमधुपलंमरिचंद्विकर्षं शुंठ्याःपलार्द्धमरिचार्द्धपलंचतुर्णाम्॥१॥ श्लक्ष्णेघटेललनयामृदुपाणिघृष्टे कर्पूरचूर्णसुरभीकृतभांडसंस्था ॥ एषावृकोदरकृतासुरसारसाला ह्यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥ २ ॥ त्रिंशत्पलानिदध्नश्चत्वगेलार्द्धपलंतथा ॥ मध्वाज्यस्यपलार्द्धंचमरिचानांपलार्द्धकम् ॥ ३ ॥ पलान्यष्टौचखंडस्य पटेशुद्धेचधारयेत्॥ कर्पूरवासितेभांडेछायायां स्थापयेदिदम् ॥ ४ ॥ एषाशिखरिणीत्युक्ताप्रदीप्ताबलव-

और पेया आदि कंठ आदिके सब दोषोंको दूर करता है ॥ ४७ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें फल शाक वर्ग समाप्त हुआ॥अब शिखरण कहते हैं–सुंदर और पहला दिनकी बासी दही १२८ तोले–सुपेद खांड ६४ तो०–घी ४ तो०–शहद ४ तो०–मिरच २ तो० सूंठ २ तो०–मिरच २ तो०–इन्होंका चूर्ण बना॥१॥ सुंदर घड़ामें घाल स्त्रीके कोमल हाथसे मर्दित करा पीछे कपूरके चूर्णसे सुगंधित किया पात्रमें घाल धरै, यह भीमसेनकी बनाई सुंदर रसवाली शिखरण श्रीकृष्ण भगवान्ने खाई है ॥२॥ दही १२० तोले– दालचीनी और इलायची दो दो तोले शहद २ तो०–घी २ तो० मिरच २ तो० ॥ ३ ॥ खांड ३२ तो०–इन्होंको शुद्ध कपरामें घाल छानै पीछे कपूरसे सुगंधित किया पात्रमें घाल छायामें धरै ॥ ४ ॥ यह शिख-

र्द्धिनी॥ सदापथ्यानियुंज्याच्चक्षीणेदेहेचपुष्टिदा॥५॥
आयुष्प्रवृद्धिजननी सर्वरोगप्रमर्दिनी॥ सास्यात्तृ-
ड्रुजास्थैर्यैनराणांसर्वदाहिता॥ ६॥ द्वितीयाशिख-
रिणी॥ सुजातंदधिभेद्यंचवस्त्रेबद्धासुपीडितम्॥ ना-
नापुष्पफलारंभं कुर्याद्दधिमनोहरम्॥ ७॥कपित्थ-
मातुलुंगैलासारिवार्द्रकबीजकैः॥ शर्कराशुंठिसा-
मुद्रमुद्गचूर्णैश्चसंयुतैः॥ ८॥ युक्तंदधिरसश्रे-
ष्ठं सघृतंशोधितेपटे॥ लवणेनसमंयुक्ताशिख-
रिण्यमृतोपमा॥ रसालासर्वरोगघ्नी रक्तपित्त-
निबर्हणी॥ ९॥ स्यान्मातुलुंगस्य दलंत्वगेला-
नारिंगपिप्पलिसमांसितयामधूकम्॥ व्योषंचगद्या-
णत्रिकेणयुक्तमर्द्धाढकंदधिसमांसितवस्त्रबद्धम्॥१०॥

रन कही अग्नीको दीपती है बलको बढाती है सब कालमें पथ्य है क्षीण शरीरवालाको देनी पुष्टि देती है॥५॥ आयुको बढाती है सब रोगोंको नाशती है तृषा रोग और स्थिर पनासे युत हुये मनुष्योंको सब कालमें हित है॥ ६॥ सुंदर उपजा दही भेदन है कपडामें बांध पीडित किया दही आयुको बढाता है और सुंदर है॥ ७॥ कैथ फल बिजौरा इलायची सरयाई अदरक खांड सूंठ सांभरनमक मूंगका चून॥ ८॥ इन्होंसें युत किया दही रसमें श्रेष्ठ है घी सहित उस दहीको शुद्ध कपडामें घाल युक्तिसे नमक मिला शिखरन बनावै यह अमृतके समान है रसाला सब रोगोंको नाशती है रक्त पित्तको नाशती है॥ ९॥ बिजौराके पत्ते दालचीनी इलायची नारंगी पीपल मिश्री महुआ सूंठ मिरच पीपल ये सब एक एक तो०—दही १२८ तो इसको सुपेद कपडामें बांध

कर्पूरवासमपितत्रतथैवपश्चाद्युक्त्याचसंमर्द्यकृतार-
साला ॥ एषाकृताशिखरिणी सुरसारसाला-
सुषेणदेवेनरघोश्चहेतोः ॥ ११ ॥ आस्वादि-
ताचप्रणयंप्रयाति दोषांश्चसर्वान्विनिहंतिचोग्रान् ॥
पित्तास्त्ररक्तानपिहंतिसर्वान्भोज्यानिसर्वाणिचजार-
यंती ॥ १२ ॥ अमृतप्रायानामशिखरिणी ॥
नारिंगदाडिमीस्यात्पलमधुकयुतं मातुलुंगस्य-
तोयंद्राक्षातोयंसमांशंगुडदधिसहितं शर्कराजा-
जिमिश्रम् ॥ श्रेष्ठपट्टेचघृष्यात्समरिचयुतं सैंध-
वैर्वाथतद्वान्निष्पीडयेंसर्वमेतत्कुरुशिखरिणींराजयो-
ग्यायतःस्यात् ॥ १३ ॥ मातुलुंगसिताजाजिमरि-
चार्द्रकनागरैः ॥ कर्पूरसहितैर्युक्तंदधि पर्युषितं
कृतम् ॥ १४ ॥ रसयोगेषुसर्वेषुबदरस्यसमस्यच ॥
नारिंगरससंमिश्रारसालैषामृतोपमा॥१५॥स्वच्छेपटे-

॥१०॥ पीछे कपूरकी वासना दे युक्तिसे मर्दित करी रसाला होती है यह सुंदर रसवाली शिखरन रघु राजाके लिये करी है ॥ ११ ॥ यह शिखरिणी खानेसें प्रीति उत्पन्न होती है, यह सर्व उग्र दोषोंको नाशती है पित्त, पित्तरक्त इन्होंको नाश करती है और सर्व भुक्त अन्नोंको पचाती है ॥१२॥नारंगी अनार महुआ ये सब चार चार तोले विजौराका रस दाखका रस ये बराबर ले गुड दही खांड जीरा ये मिला शुद्ध कपडामें बांध मिरच और सेंधानमक मिला पीडित करै यह शिखरन राजा लोगोंके योग्य है ॥ १३ ॥ विजौरा मिश्री जीरा मिरच अदरक सूंठ कपूर इन्होंसे युत करी दहीको एक दिन धरी रक्खै ॥ १४ ॥ सब रसोंके योगोंमें बेरकारस और नारंगीका रस समानमिला शिखरन बनावै यह अमृतके समा-

चसंघृष्टारक्तपित्तनिबर्हणी ॥ १६ ॥ चंद्रामृतस्रा-
विणीनामशिखरिणी ॥ मातुलुंगकपित्थाम्लतिं-
तिडीकाम्लदाडिमैः ॥ शर्करासहितैर्युक्तंदधिपि-
ष्टंशुचौपटे ॥ १७ ॥ योजितंमरिचाजाजी-
चातुर्जातकभूस्तृणैः ॥ सूक्ताद्रार्द्रकसंयुक्तारसा-
लामृतसंभवा ॥ १८ ॥ सर्वरोगप्रशमनीदाह-
पित्तनिबर्हणी ॥ रक्तोद्रेकहरीपथ्यासर्ववातानुलो-
मनी ॥ १९ ॥ एषाशिखरिणीप्रोक्तासुषेणेनाविनि-
र्मिता ॥ अग्र्यंदधिगुडाजाजीनागरार्द्रकयोजितम् ॥
॥२०॥ सचतुर्जातघृष्टाचरसालैषामृतोपमा॥सर्वकृ-
च्छ्रप्रशमनीसर्वातीसारनाशनी॥२१॥ पित्तोद्रेकहरी
पथ्यापित्तातीसारहारिणी ॥ सुषेणदेवेनकृतारसाला

न है ॥ १५ ॥ निर्मल कपडामें घाल मर्दित करी रक्त पित्तको दूर करती है ॥ १६ ॥ यह चंद्रामृतस्राविणी शिखरन है ॥ विजौरा कैथ अंबरक अमली खट्टा अनार खांड इन्होंसे युत किया दही शुद्ध कपडामें ॥१७॥ घाल मिरच जीरा दालचीनी तेजपत्ता नागकेसर इलायची भूतृण सूक्त अदरक इन्होंको मिलावै यह शिखरन अमृतसे उपजी है ॥ १८ ॥ सब रोगोंको शांत करती है दाह पित्तको दूर करती है अधिक रक्तको हरती है पथ्य है सब वातोंको अनुकूल रखती है ॥ १९ ॥ यह शिखरन श्रीसुषेणकी रची कही । सुंदर दही गुड जीरा सूंठ अदरक दालचीनी इलायची नागकेसर ॥ २० ॥ तेजपत्ता इन्होंको मिला मर्दित करी शिखरन अमृतके समान है सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र और सब अतीसारको नाशती है ॥२१॥ अधिक पित्तको हरती है पथ्य है पित्तके अतीसारको हरती है सुषेणदेवनें करी यह शिखरन अमृतके समान है ॥ २२ ॥ यहां

ह्यमृतोपमा ॥ २२ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणेनकृतेशिखरिणीवर्गः ॥ हिंगूषणाजाजिमहौषधंच चूर्णीकृतंतत्रिगुणंक्रमाच्च ॥ संदीपकंसूरणयूषमांसंरसप्रयोगेषुचनित्यमिष्टम् ॥ १ ॥ यवानी जीरकैस्तुल्यातयोर्द्विगुणसूरणम् ॥ ईषद्यूषसमायुक्तंततोव्यंजनसौरभम् ॥ सर्वरोगहरंपथ्यंवातदुर्नामनाशनम् ॥ २ ॥ शुंठीमरिचपिप्पल्यः सम भागविचूर्णिताः ॥ चव्यचित्रककापित्थंसारमुद्धृत्य यत्नवान् ॥३॥ सैंधवेनतथोपेतंतक्रंपथ्यंचयत्नतः ॥ एतद्वैव्यंजनंश्रेष्ठंसर्ववातनिवारणम् ॥ ४ ॥ आम वातप्रशमनंसर्वशूलनिवारणम् ॥ महागुल्मप्रशमनं सुषेणेनकृतंनृणाम् ॥ सर्ववातामयेशस्तंनृणांभेषज-

श्रीसुषेण वैद्यका किया आयुर्वेदमहोदधिमें शिखरन वर्ग समाप्त हुआ ॥ हींग मिरच जीरा सूंठ इन्होंका चूर्णकर इस्से तिगुनी अजमान जमीकंदका यूष और मांस इन्होंको मिला खावै रसके प्रयोगोंमें यह नित्य प्रति वांछित है ॥ १ ॥ अजमान और जीरा समान भाग और इन दोनोंके दूना जमीकंद और इसमें कछुक मिरचोंका चूर्ण मिलावै यह सुगंधित व्यंजन बनता है सब रोगोंको हरता है पथ्य है वातकी बवासीरको नाशता है ॥ २ ॥ सूंठ मिरच पीपल ये सब समान भागले चूर्ण करै; चव्य चीता कैथ इन्होंका सार निकास जतनसे ॥ ३ ॥ सेंधानमक और तक्र मिलावै यह व्यंजन श्रेष्ठ है सब वातोंको नाशता हैं ॥ ४ ॥ आमवातको शांत करता है सब शूलोंको दूर करता है बडा गुल्मको नाशता है मनुष्योंके हितके लियें श्रीसुषेणनें किया है सब वातके रोगोंमें

मुत्तमम् ॥ ५ ॥ मरीचंदीप्यकंशुंठीचव्यचित्रकमेवच॥पिप्पलीपिप्पलीमूलंधान्यकाजाजिसैंधवम्॥६॥ जरणंदाडिमंपथ्याह्यामलंह्यगंधकम् ॥ एतत्कल्कसमंमिश्रंपक्त्वातक्रंसपिंडकम् ॥ ७ ॥ वातश्लेष्महराह्येषापरमारुचिवर्द्धनी॥ आमातीसारशूलघ्नीवातगुल्मनिकृंतनी ॥ ८ ॥ कासश्वासहराचोक्तामंदाग्नेर्दीपनीपरा ॥ उक्ताचैवसदापथ्याह्युत्तमा कथिकास्मृता ॥ ९ ॥ कढ़ी ॥ मरिचजरणशुंठीपिप्पलीमूलचव्यंदहनरुचकधान्यंसैंधवंपिप्पलीनाम् ॥ अभयसमकपित्थं दाडिमाजाजिहिंगुयुवतिकरविपक्कं ह्यामलक्यंसुतक्रम् ॥१०॥ हरतिपवनसंघंश्लेष्मदोषं सकृच्छ्रंह्यरुचिजठरशूलं ह्यामवातातिसारम् ॥ विदितसकलविद्यावैद्यराजेनतेनरचितदहनदीप्तिंव्यंजनं-

श्रेष्ट है मनुष्योंको उत्तम औषध है ॥ ५ ॥ मिरच अजमान सूंठ चव्य चीता पीपल पीपलामूल धनियां जीरा सेंधानमक ॥ ६ ॥ मनयारी नमक अनार हरडै आंवला हींग इन्होंका कल्कके समान तक्र मिला पिंड सहित पकाकर ॥ ७ ॥ कढी बनावै यह वात कफको हरती है सुंदर है बहुत रुचीको बढाती है आमातीसार शूल वात गुल्म इन्होंको नाशती है ॥ ८ ॥ खांसी और श्वासको हरती है मंदाग्नीको बहुत जगाती है सब कालमें पथ्य है उत्तम कही है॥९॥ मिरच कालानमक सूंठ मिरच पीपलामूल चव्य चीता मनयारीनमक धनियां सेंधानमक पीपल हरडै कैथफल अनारदाना जीरा हींग आंवला इन्होंके चूर्णसे युतकिया सुंदर तक्र युवतिस्त्रीनें पकाना ॥ १० ॥ वातका समूह कफदोष मूत्रकृच्छ्र

राजयोग्यम् ॥११॥ त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरकंच कपित्थगिरिसमं स्याच्चित्रकं पिप्पलीजम्॥समधृतवि- धिचूर्णंतक्रसंयोजितव्यं कथितमिहसमानंचार्द्धभा- गोनयुक्तम् ॥ १२ ॥ कृतलवणसुधान्यं मातुलिंगस्य सारं कफपवनविकारेसर्वदाव्यंजनंस्यात् ॥ वाता- श्रितेशिखिनिपार्श्वशूलेसगृध्रसींहंति चिरप्रवृद्धम् ॥ ॥१३॥ सुषेणदेवेनकृतारसालासुसौरभारोगहरातिप- थ्या॥१४॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेव्यंजनव र्गः॥इदानींमांसगुणाः कथ्यंते॥मांसंस्वादुमतंवरं सुब- लकृत्स्नेहाधिकं देहिनांनित्यंधातुषुसाम्यकृच्चकथि- तंत्वग्वर्णकृद्बृंहणम् ॥ भुक्तंप्रीतिकरंचकामकरणं वातादिदोषान्हरेत्तस्मादांगिकदोषशांतिकृतयेभुंजीत

अरुचि पेटशूल आम वात अतिसार इन्होंको नाशता है सब विद्या- ओंके जाननेंवाला वैद्यराज सुषेणने राजा लोगोंके योग्य और अग्नीको दीप्त करने वाला यह व्यंजन रचा है ॥ ११ ॥ सूंठ मिरच पीपल अज- मोद सेंधानमक जीरा कैथफलकी गिरी चीता पीपल इन्होंका चूर्ण बरा- बर भाग तक्रमें योजित करना यहां समान भाग है अर्द्ध भागयुक्त नहीं है ॥ १२ ॥ नमक धनिया बिजौराका सार इन्होंका व्यंजन कफ वातके विकारमें सदा हित है वातसे आश्रित हुआ अग्निमें पसली शूलमें हित है बहुत पुरानी गृध्रसीको नाशता है ॥ १३ ॥ रस वाले सुगंधित अत्यंतपथ्य और रोगनाशक ऐसे व्यंजन श्रीसुषेणनें किये हैं—यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें व्यंजनवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब मांसके गुण कहे जाते हैं—मांस स्वादू है उत्तम है सुंदर बलको करता है,

मासंसदा ॥ १ ॥ लावाहिमस्वादुकषाययुक्तावृष्या
ग्निकृत्स्निग्धलघुप्रहृद्याः ॥ संग्राहिकावैकटुपाकिन
श्च ते सन्निपातेषुहितासमस्ताः ॥ २ ॥ लावडूः ॥
ईषद्गुरूष्णोमधुरोतिवृष्योमेधाग्निसंवर्द्धनकारकश्च॥ब
ल्योनिहन्यात्सकफज्वरांश्चवातामयाढ्यानथतित्ति-
रिश्च॥३॥कृष्णतित्तिरिः॥गौरस्तित्तिरिरग्निकृत्कफ-
हरोवृष्योतिपित्तापहः ॥ श्लेष्माणंविनिहंति संश्रुति-
बलाद्रक्तं चपित्तंजयेत् ॥ ४ ॥ तित्तिरिः ॥ असृ-
क्पित्तहरोतिशीतलकरोबल्योतिवृष्यः सदा वाते
स्यान्मृदुकुष्ठहृत्क्रिमिहरोमेहामयध्वंसनः ॥ क्षीणे
रेतसिमेदहाऽग्निजननः कापिंजलः शस्यतेवातासृ-

है अधिक स्नेह वाला है मनुष्योंके धातुओंको समान रखता है खाल और वर्णको करता है पुष्टि कारक है भोजन किया प्रीति करता है काम देवको करता है वात आदि दोषोंको हरता है तिस कारणसे अंगका शरीरके दोषकी शांतिके लियें सब कालमें मांसको खावै॥ १॥वटेरका मांस शीतल है स्वाद है कसैला है वीर्यमें हित है अग्नीको करता है चीकना है हलका है सुंदर है मलको बांधता है पाकमें चर्चरा है सन्निपातमें सब हित हैं ॥ २ ॥ कालातीतर कछुक भारी है गर्म है मीठा है वीर्यमें अत्यंत हित है बुद्धि और अग्नीको बढाता है बलमें हित है कफज्वर वात रोग इन्होंको हरता है ॥ ३ ॥ सुपेद तीतर अग्नीको करता है कफके हरता है वीर्यमें अत्यंत हित है पित्तको हरता है कफको बलसे रक्त पित्तको जीतता है ॥ ४ ॥ कांपिंजलतीतर रक्त पित्तको हरता है शीतल है बलमें हित है सब काल वीर्यमें अत्यंत हित है वातमें हित है कोमल कुष्ठ छार्दि प्रमेद इन्होंको नाशता है क्षण हुआ वीर्यमें मेद और अग्नीको

ग्रूविलयंकरोतितरसापित्तामयध्वंसकः ॥ ५ ॥ पांडुप्रमेहपिटिकाकृमिसंभवेषुरोगेषुवातबहुलेषु च शस्यतेच ॥ वातास्रपित्तकफजान्वानिहंतिकीलान्गुल्माग्निमांद्यमरुचिंलघुवार्त्तकंच ॥६॥ लघुश्चवृष्याच बलोपबृंहणीहृद्यातथा रक्तकरोपकारिका॥ ७॥ कापायंकटुकातिवृष्यजनकंसुस्वादुकेश्यंतथासक्षारं रुचिकारकंविषहरंमंदानलध्वंसकम्॥स्वर्यंमेध्यमतीवदृष्टिजनकं श्रोत्रेंद्रियेदार्ढ्यकृत्स्निग्धोष्मानिलहास्रपित्तशमनं मायूरमांसंसदा॥ ८ ॥ हेमंतकालेशिशिरेवसंते सेव्यंहिमायूरमुशंतिमांसम् ॥वर्षासुभक्ष्यंत्वतिभक्षणाच्चतथाशरद्ग्रीष्ममुखेष्वपथ्यम् ॥ ९ ॥ ॥ मयूरः ॥ उष्णः स्नेहकरोबलस्वरकरोवृष्यः

उपजाता है वात रक्तको और पित्त रोगको वेगसे नाशता है ॥ ५ ॥ बत्तकका मांस पांडु प्रमेह पिटिका कृमि इन्होंसे उपजे और अधिक वात वाले रोगोंमें श्रेष्ठ है वात रक्त पित्त कफ इन्होंसे उपजे कीलोंको गुल्म मंदाग्नि अरुचि इन्होंको हरता है हलका है ॥ ६ ॥ चकवीका मांस हलका है वीर्यमें हित है बलको देता है पुष्टिको करता है सुंदर है रक्तको करता है ॥ ७ ॥ मोरका मांस कसैला है चर्चरा है वीर्यमें अत्यंत हित है सुंदर स्वादू है बालोंमें हित है खारा रुचीको करता है विषको हरता है मंदाग्नीको नाशता है स्वरमें हित है बुद्धिमें हित है अत्यंत दृष्टिको उपजाता है कानइंद्रियमें दृढपना करता है चीकना है गर्म है वातको नाशता है रक्तपित्तको शांत करता है ॥८॥ हेमंत शिशिर वसंत इन ऋतुओंमें मोरका मांससेवना उचित है वर्षा ऋतुमें अत्यंत भक्षणसे शरद् और ग्रीष्म ऋतुमें अपथ्य है ॥ ९ ॥ मुर्गाका मांस गर्म है

सदाबृंहणःपाकेस्निग्धतरोमहाबलकरोमेदःकफाल-
स्यकृत् ॥ आयुष्यं कुरुतेक्षयेषुविषमेमेहेवमौशस्य-
ते प्रोक्तःकुक्कुटकोहिदोषशमनः सर्वामयध्वंस-
कः॥ १० ॥ कपोतपारावतभृंगराजजटीकुलिंगंगृह-
जंपिकश्च ॥ भेदाशिडंडीशुकसारिकाश्चवल्गूरिका
खंजरीटाहरीताः ॥ ११ ॥ कषायामधुरारूक्षाफला
हारामरुत्कराः ॥ पित्तश्लेष्महराः शीतावद्धमूत्राल्प-
वर्चसः ॥ १२ ॥ सर्वदोषहरास्तेषां भेदाशीमल-
दूषकः ॥ १३ ॥ काषायालवणा हिमाः कफहरा
वृष्याःसदादुर्ज्जराविष्टंभंजनयंति मूत्रबहुलंपित्तंस-
दाहंकिल ॥ पामाध्मानकरास्त्रिदोषशमनामोहा-
स्यवैरस्यकाः कृच्छ्राग्नेर्बलकारकाःश्रमहरादौर्ग-

स्नेहको करता है बल और स्वरको करता है वीर्यमें हित है सबकाल पुष्टि कारक है पाकमें अत्यंत चीकना है बहुत बलको करता है मेद कफ आलस्य इन्होंको करता है आयुको करता है क्षय विषमरोग प्रमेह छार्दि इन्होंमें श्रेष्ठ है दोषको शांत करता है सब प्रकारके रोगोंको नाशता है ॥ १० ॥ कबूतर परेवा भोरा चिड़ा कोयल भेदाशी डंडी तोता मैना वल्गूरिक खंजना हरीत॥११॥येसब कसैले हैं मीठे हैं रूखे हैं फलको भोजन करते है वातको करते है पित्त कफको हरते है शीतल है मूत्र मलको अल्प करते है ॥१२॥ सब दोषोंको हरतेहै तिन्होंमें भेदाशी मलको दूषित करता है ॥ १३ ॥ येसब कसैले है सलोने है शीतल है कफको हरते है वीर्यमें हित है सदादुःखसे जरते है विष्टंभको उपजाते है मूत्रको बहुत उपजाते है पित्त दाहको करते है परम अफरा इनको करते है त्रिदोषको शांत करते है मोह और मुखमें विरस पनाको करते है मूत्र

ध्यकृत्श्लेष्मलाः ॥ १४ ॥ एतेप्रावृषिसेविताः प्रतिदिनं दोषव्रजघ्नाःखलु ॥ आकाशगामिनः सर्वेबल्या वृष्यासुदुर्ज्जराः ॥ १५ ॥ चक्षुष्योमधुरो विपाककटुकोगुर्वीचपारावतः कालिंगोमधुरोऽतिवृष्यकफहृच्छुक्राश्मरीच्छेदनः ॥ पित्तास्रातिहरोऽतिशुक्रजननः स्निग्धश्चमाधुर्यकृद्बल्यो मारुतनाशनः क्रिमिहरोवीर्योष्णनेत्रामयी ॥ दुर्नामप्रशमीविशेषपवनध्वंसीसदादुर्ज्जरः ॥ १६ ॥ कुलिंगः ॥ वेश्मकुलिंगः ॥ ग्राम्यावातहराः सर्वेबृंहणाः कफपित्तलाः ॥ मधुरारसपाकाभ्यांदीपनाबलवर्द्धनाः ॥ १७ ॥ कापोतःस्याद्गुरुरतिहिमःस्निग्धमांद्यप्रकोपीश्लेष्मा पित्तेप्रणयतिजरां जर्जरत्वंचदंतान् ॥ रेतःक्षीणेमद-

कृच्छ्र अग्नि बल इन्होंको करते है परिश्रमको हरते है दुर्गंधपनाको और कफको करते है ॥ १४ ॥ वर्षा ऋतुमें सेवित किये येसब दोषके समूहको करते है—आकाशमें गमन करनें वाले सब पक्षी बलमें हित है वीर्यमें हित है सुंदर दुःखसे जरते है ॥ १५ ॥ परेवाका मांस आंखोमें हित है मीठा है पाकमें चर्चरा है भारीहै घरका चिडियाका मांस मीठा है वीर्यमें अत्यंत हित है कफ शुक्राश्मरी इन्होंको छेदता है पित्तरक्तको अत्यंत हरता है वीर्यको अत्यंत उपजाता है चीकना है मधुरपनाको करता है बलमें हित है वातको नाशता है क्रिमिको हरता है वीर्यमें गर्म है आखोंमें रोग करता है बवासीरको शांत करता है विशेष कर वातको नाशता है सब कालमें दुःखसे जरता है ॥ १६ ॥ गांवमें रहनें वाले सब वातको हरते हैं पुष्टिको करते हैं कफ पित्तको उपजाते हैं रस और पाकमें मीठे हैं दीपन हैं बलको बढाते हैं ॥ १७ ॥ कबूतर भारी है अत्यंत शीतल है

हरजनेकृच्छ्रमूत्रेनिदाघेमेहे योज्यःसभवति नृणां कामकारीबलाढ्यः ॥ १८ ॥ छागलंचत्रिदोषघ्नंगुरु पीनसनाशनम्॥लघुपाकंनातिशीतंनातिस्निग्धमदाहिच ॥ १९ ॥ शरीरधातुसामान्यादनभिष्यंदिबृंहणम् ॥ बृंहणंमांसमौरभ्रं पित्तश्लेष्मापहंगुरु ॥२०॥ ऐणंमांसंचहृद्यंबलकरमपितात्पित्तरक्तंनिहंतिपांडुक्षीणेसदाहेकफपवनरुजो नाशयत्याशुकीलान् ॥ प्लीहानाहौविबंधज्वरहरणपरंमेदशांतिंकरोतिरेतःक्षीणेषुयोज्यंरुचिकरलघुतच्छ्वासकासंछिनत्ति॥२१॥मध्यंपुच्छोद्भवंस्यात्कफपवनहरंकांतिदंपुष्टिदंस्याद्वातासृक्पित्तहारि मदहरविषहृच्छ्वासकासौछिनत्ति॥ बल्याभिष्यंदितत्स्याज्ज्वरहरणपरंक्षीणरेतःप्रधा-

चीकना है मंदाग्नीको कोपता है कफ पित्तको कोपता है बुढापाको देता है दांतोंको जर्जर करता है वीर्यके क्षीणपनेमें मदमें मूत्रकृच्छ्र गर्म समय प्रमेह इन्होंमें योजित करना मनुष्योंको काम करता है बलदेता है ॥ १८ ॥ बकराका मांस त्रिदोषको हरताहै भारी है पीनसको नाशता है पाकमें हलका है अत्यंत शीतल नहीं है अत्यंत चीकना नहीं है दाहको नहीं करता है ॥ १९ ॥ शरीर और धातुओंके समानपनेमें अभिष्यंदी नहीं है पुष्टिकारक है दूमाका मांस पुष्टिकारक है कफ पित्तको हरता है भारी है ॥ २० ॥ मृगका मांस सुंदर है बलको करता है पित्त रक्तको नाशता है पांडु क्षीण दाह कफ रोग वात रोग कील तिल्लीरोग अनाह बंधा ज्वर इन्होंको हरता है मेदको शांत करता है वीर्यसे क्षीण हुओंमें योजित करना रुचिकारक है हलका है श्वास और खांसीको नाशता है ॥ २१ ॥ शशा आदिका मांस कफ वातको

नंशस्तंवातामयानां शशकरगृहजंहंतिकुष्ठामयांश्च
॥ २२ ॥ शशकादिमांसम्॥कुरभ्रवत्सलवणं मांसमे-
कशफोद्भवम् ॥ अल्पाभिष्यंदिवर्गोयंजांगलः समु-
दाहृतः ॥ २३ ॥ दूरेजनांतनिलयाद्दूरपानीयगो-
चराः ॥ येमृगाश्चविहंगाश्चतेऽल्पाभिष्यंदिनोमताः
॥ २४ ॥ अतीवासन्ननिलयासमीपोदकगोचराः ॥
येमृगाश्चविहंगाश्चमहाभिष्यंदिनोमताः ॥ २५ ॥
माधुर्यागुरवोतिवृक्षसततंस्निग्धाश्चकाश्यापहाःश्रेष्ठा
मूत्रपुरीषलाबलकराकासार्शनाशप्रदाः ॥ वातं-
पित्तरुजोनिहंतिसततंस्निग्धाश्चकाश्यापहाः सर्वेते-
वनचारिणः क्षयहरामेहेहिताः सर्वदा ॥ २६ ॥

हरता है कांति और पुष्टिको देता है वात रक्त और पित्तको हरता है मद विष श्वास खांसी इन्होंको काटता है बलमें हित है अभिष्यंदी है ज्वरको हरता है क्षीण वीर्यवालाको उत्तम है वातरोगियोंको उत्तम है और कुष्ठरोगोंको नाशता है ॥ २२ ॥ एक खुरवालोंका मांस दूमाका मांसके समान है सलौना है अल्पअभिष्यंदी है यह जांगल वर्ग कहा ॥ २३ ॥ मनुष्योंसे दूर रहनेवाले और पानीसे दूर रहनेवाले जो मृग और पक्षी है वे सब अल्पअभिष्यंदी माने हैं ॥ २४ ॥ मनुष्योंके अत्यंत समीप रहनेवाले और पानीके समीप रहनेवाले ऐसे मृग और पक्षी बहुत अभिष्यंदी हैं ॥ २५ ॥ वनमें विचरनेवाले सब मीठे हैं भारे हैं निरंतर चीकने हैं कृशपनाको हरते है मूत्र और मलमें श्रेष्ठ हैं बलको करते हैं खांसी बवाशीर वात पित्त इन्होंको हरते है चीकने है निरंतर कृशपनाको हरते है क्षयको हरते है सबकाल प्रमेहमें हित है ॥ २६ ॥

नादेयागुरवोमध्येमतानूनंमनीषिभिः ॥ सरस्तडागजानांतुविशेषेण शिरोलघु ॥ २७ ॥ अदूरागोचरायस्मात्तस्मादुत्सेधयानजाः॥ किंचिन्मुक्ताशिरोदेशमत्यर्थंगुरुवस्तुते।२८।अधस्ताद्गुरवोज्ञेयामत्स्याः सरसिजास्मृताः॥ उरोविचक्षणात्तेषांपूर्वमंगंलघुस्मृतम् ॥ २९ ॥ शिरस्कंधंकटीपृष्ठंसक्थिनीचात्मसंज्ञया ॥गुरुपूर्वंविजानीयाल्लघवस्तुयथोत्तरम् ॥३०॥ सर्वेषांप्राणिनांदेहेमध्येगुरुरुदाहृतः ॥ पूर्वभागोगुरुः पुंसामधोभागस्तुयोषिताम्॥३१॥उरोग्रीवंविहंगानां विशेषेणगुरुस्मृतम् ॥ पक्षेक्षेपात्समोदृष्टोमध्यभागस्तुपक्षिणाम् ॥३२॥ अतीवमांसंरूक्षंचविहंगानांफलाशिनाम् ॥ बृहणंमांसमत्यर्थंखगानां पिशिताशिनाम् ॥ ३३ ॥ मत्स्याशिनांपित्तकरं वातघ्नं

नदीके जीव मध्यमें भारे वैद्योंनें माने हैं; सरोवर और तलावसे उपजे जीवोंका शिर विशेषकर हलका है ॥ २७ ॥ मनुष्योंके समीप रहनेवाले जो जलके जीव है उन्होंका कछुक शिरका देशको छोड वे अत्यंत भारे है ॥ २८ ॥ सरोवरकी मछली नीचाके अंगोंमें भारी कही है छातीके विचक्षण पनेसे पूर्व अंग हलका कहा है ॥ २९ ॥ शिरकंधा कटी पीठ सांथल ये सब भारे हैं अन्य अंग हलके हैं ॥ ३० ॥ सब प्राणियोंका देह मध्यमें भारी कहा है पुरुषोंका ऊपरला भाग भारीहै स्त्रियोंका नीचरला भाग भारी है ॥ ३१ ॥ पक्षियोंकी छाती और ग्रीवा विशेषकर भारे कहे हैं पांखोंके फरकानेंसे पक्षियोंका मध्यभाग समान माना है ॥३२॥ फलको खानेवाले पक्षियोंका मांस अत्यंत रूखा है मांसको खानेंवाले पक्षियोंका मांस अत्यंत पुष्टि करता है ॥ ३३ ॥ मछलीको खानेवाले

धान्यचारिणाम् ॥ जलजाऽनूपजाग्राम्याक्रव्यादैक-
शफास्तथा॥ ३४॥प्रसहाबिलवासाश्चतथाजंघालसं-
ज्ञिताः ॥ प्रतुदाविष्किराश्चैवलघवःस्युर्यथोत्तरम्॥
॥ ३५ ॥ दुर्नामाऽनिलदोषहंक्रुमिहरंरुच्यंगदार्ढ्यप्र-
दं स्निग्धंस्वेदनवृष्यशीतबलकृद्धृद्रोगसंवर्द्धकम् ॥
कासश्वासहरं प्रमेहशमनं हिक्कानलध्वंसकंचक्षु-
ष्यंत्वविदाहिचश्रमहरं वाराहमांसंसदा ॥ ३६ ॥
शंखकूर्मादयः स्वादुरसपाकामरुत्तुदः ॥ स्निग्धाः
शीताहिताःपित्तेवर्चःश्लेष्मविवर्द्धनाः॥३७॥ कृष्ण-
कर्कोटकस्तेषांबल्यः कोष्णोऽनिलापहः ॥ शुक्र-

पक्षियोंका मांस पित्तको करता है अन्नको खानेवाले पक्षियोंका मांस वातको नाशता है पानीसे उपजे अनूपदेशके गाममें रहनेवाले मांस खानेंवाले एक खुरवाले ॥ ३४ ॥ प्रसह संज्ञक बिलमें वसनेंवाले जंघाल संज्ञक प्रतुद विष्किर ये सब पक्षी उत्तरोत्तर क्रमसे हलके हैं ॥ ३५॥ शूरका मांस बवाशीर वातदोष कृमिरोग इन्होंको हरता है रुचीमें हित है अंगोंका दृढपना देता है चीकना है पसीना देता है वीर्यमें हित है शतिल है बलको करता है हृद्रोगको बढाता है खांसी और श्वासको हरता है प्रमेहको नाशता है हुचकी और अग्नीको नाशता है नेत्रोंमें हित है दाहको नहीं करता हैं सदा परिश्रमको हरता है ॥ ३६ ॥ शंख कछुवा आदि रसपाकमें स्वादू हैं वातको नाशते हैं चीकने है शीतल हैं पित्तमें हित हैं मल और कफको बढाते हैं ॥ ३७ ॥ इन्होंमें काला कर्कोटक बलमें हित है अल्प गर्म है वातको नाशता है

संधानकृत्सृष्टविण्मूत्रोनिलपित्तहा ॥ ३८ ॥ नादेयामधुरामत्स्यागुरवोमारुतापहाः ॥ रक्तपित्तकराः सोष्णावृष्याःस्निग्धाऽल्पवर्चसः ॥ ३९ ॥ कषायानुरसस्तेषां शष्पशैवलभोजनः ॥ रोहितोमारुतहरो नात्यर्थंपित्तकोपनः ॥ ४० ॥ मत्स्याद्वेधास्वादुपट्वंबुजातास्तस्मात्पूर्वंपंचधाकल्पनीयाः ॥ नाद्याःकौपाःसारसावै ह्रदोत्थास्ताडागोत्थाःसागरोत्थास्तथा स्युः॥ ४१ ॥ ऋतौमधौनिर्झरिणीषुजातामत्स्याहितात्रीष्मऋतौचचौंड्याः ॥ तडागजाःप्रावृषिसर्वएव स्निग्धाबलिष्ठाश्चसृजंतिदोषान् ॥ शरत्सुतेनिर्झरजाश्चकूपजाहिमाहिमर्त्तौशिशिरेब्धिजाताः॥ ४२ ॥ शष्कुलोनंदकावर्त्तौग्राही लघुतरःस्मृतः ॥ सरस्त-

वीर्य और संधानको करता है मल मूत्रको उपजाता है वात्त पित्तको नाशता है ॥ ३८ ॥ नदीके मत्स्य मीठे है भारे है वातको नाशते है रक्त पित्तको करते गर्म है वीर्यमें हित है अल्पमलवाले है ॥ ३९ ॥ बालतृण और शिवालको भोजन करनेवाला मत्स्य पीछे कसैला रसवाला है रोहित मत्स्य वातको हरता है पितको अत्यंत कुपित नहीं करता है ॥ ४० ॥ मच्छ दो प्रकारके है जो स्वाद पानीसे उपजते है उससे पहले पांच प्रकारके कल्पित करने—नदीके कूवाके सरोवरके कुंडके तलावके और समुद्रके ऐसे मच्छ हैं ॥ ४१ ॥ वसंत ऋतुमें झिरनाके पानीमें उपजी मछली ग्रीष्म ऋतुमें चौंड्य पानीमें उपजी मछली वर्षा ऋतुमें तलावसे उपजी मछली शरद् ऋतुमें झिरनासे उपजी मछली हेमंत ऋतुमें कूवामें उपजी मछली शिशिर ऋतुमें समुद्रकी मछली ऐसे उत्तम हैं बलको देती हैं खानेंसे चीकनी हैं सब दोषोंको नाशती हैं ॥ ४२ ॥ शष्कुल नंदकावर्त इन नामोंवाली मछली मलको बांधती

डागसंभूताः स्निग्धाःस्वादुरसाः स्मृताः ॥ ४३ ॥ कौप्यावृष्यावातहृच्छ्लेष्मलाश्चगुल्माष्ठीलानाहकुष्ठ-प्रदाःस्युः ॥ तडागमत्स्योगुरुर्बृंहणीयास्तथा सुशीतोवृषदोऽतिमूत्रः ॥ ४४ ॥ तडागवन्निर्झरजाश्चमेध्याश्चक्षुश्चिरायुष्यबलप्रदाश्च ॥ महाह्रदेषुबलिनः स्वल्पांभःस्वबला मताः ॥ ४५ ॥ सामुद्रो गुरुरुष्णरूक्षमधुरः सश्लेष्मलोवातहास्यात्स्नेहाभिविवर्द्धनोबलकरोविष्टंभकाध्मानकृत् ॥ पित्तोद्रिक्तकफाश्रयेष्वविहितो मेध्योतिहृद्यः सदाविष्टंभजनयेच्चशीतपवनं व्यापादयत्यग्रतः ॥ ४६ ॥ त्रिदोषशमनोहृद्यः पित्तघ्नःपवनापहः ॥ सामुद्रोरोहितःश-

है अत्यंत हलकी कही है सरोवर और तलावसे उपजी मछली चीकनी है स्वाद रसवाली कही है ॥ ४३ ॥ कूवाकी मछली वीर्यमें हित है वातको नाशती है कफको करती है गुल्म अष्ठीला आनाह कुष्ठ इन्होंको देती है तलावकी मछली भारी है पुष्टिमें हित है सुंदर शीतल है वीर्यको देती है बहुत मूत्रको उपजाती है ॥ ४४ ॥ तलावकी मछलीकी तरह झिरनाका पानीकी मछली बुद्धिमें हित है नेत्रोंमें हित है बहुत आयु और बलको देती है; बडा कुंडमें उपजी मछली बलवाली है स्वल्पपानीमें उपजी मछली सुंदर बलवाली मानी है ॥ ४५ ॥ समुद्रकी मछली भारी है गर्म है रूखी है मीठी है कफको करती है वातको नाशती है स्नेहको बढाती है बलको करती है विष्टंभ और अफराको करती है अधिक पित्त और कफ रोगमें हित है वीर्यमें हित है सुंदर है विष्टंभको उपजाती है शीतवातको नाशती है ॥ ४६ ॥ समुद्र और रोहित मछली त्रिदोषको शांत करती है सुंदर है पित्त और कफको

स्तःसर्वरोगेषुदीपनः ॥४७॥ सामुद्रागुरवः स्निग्धामधुरानातिपित्तलाः॥ उष्णावातहरावृष्यावर्चस्याःश्लेष्मवर्द्धनाः ॥ ४८ ॥ बलावहाविशेषेणमांसाशित्वात्समुद्रजाः ॥ सामुद्रजेभ्योनादेयाः बंहणत्वाद्गुणोत्तराः ॥ ४९ ॥ तेषामप्यनिलघ्नत्वाच्चौंढ्यकौप्यगुणोत्तरौ ॥ स्निग्धत्वात्स्वादुपाकत्वात्तयोर्वाप्यागुणाधिकाः ॥ ५० ॥ विष्टंभाध्मानमेहघ्नः कुलीरः कफवातहृत् ॥ मेदःश्लेष्मानिलहरोहिक्काध्मानविसर्पहा ॥ ५१ ॥ प्रवरोरोहितोमत्स्यः पित्तघ्नःपवनापहः॥ बृंहणाध्मानशमनोरोगघ्नोदीपनोलघुः ॥ ५२ ॥ मत्स्यानांचगुरुः श्रेष्ठोदीपनोवातनाशनः ॥ रुचिप्रदःशुक्रकरश्चाश्मरीदोष-

नाशती है श्रेष्ठ है सब रोगोंमें दीपन है ॥ ४७ ॥ सामुद्र मछली भारी है चीकनी है मीठी है अत्यंत पित्तको नहीं करती है गर्म है वातको हरती है वीर्यमें हित है मल और कफको बढाती है ॥ ४८ ॥ मांसको खानें पनेंसे सामुद्रमछली विशेषकर बलको देती है समुद्रकी मछलियोंसे नदीकी मछली पुष्टपनासे उत्तम गुणोंवाली है ॥ ४९ ॥ उन्होंमें भी वातको नाशनेंसे चौंढ्य और कूप्य मछली उत्तम गुणोंवाली है स्निग्धपनासे और स्वादुपाकपनासे उन दोनोंसे बावड़ीकी मछली उत्तम गुणोंवाली है ॥ ५० ॥ कुकर मछली विष्टंभ अफरा प्रमेह इन्होंको नाशती है कफ वातको हरती है मेद कफ वातको हरती है हुचकी अफरा विसर्प इन्होंको नाशती है॥ ५१ ॥ रोहित मछली उत्तम है पित्त वातको नाशती है पुष्टिकारक है अफराको नाशती है दीपन है हलकी है ॥ ५२ ॥ मछलियों में भारी मछली श्रेष्ठ है दीपन है वातको नाशती है रुचीको देती है वीर्यको

नाशनः ॥५३॥ गुरुमत्स्याः ॥ शृंगीवातविनाशनो रुचिकरोवृष्यः कफघ्नोमतः कंटाकोविषदोवृषोनलकरोवातेकफेपूजितः ॥ पाठीनोबलवृष्यशुक्रजननः श्लेष्माकरो नित्यशःशस्तोरोहितकोहितोबलकरोवातात्मकःश्लेष्मकः ॥ ५४ ॥ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृतेमांसवर्गः ॥ ॥ अथव्यायामोद्वर्त्तनगुणाः कथ्यंते ॥ ॥ श्रीनारायणबालचंपकजपातैलेनचान्येनवा कार्यंमर्द्दनकोविदैरसभुजांमल्लैःसदामर्द्दनम् ॥ चातुर्जातलवंगकुंकुमनिशामुस्तासुमांसीभवैःश्चूर्णैर्भृष्टमसूरमुद्गसयवैरुद्वर्त्तनंकारयेत् ॥ १ ॥ वातघ्नौषधिसिद्धेनतैलेनाभ्यंगमर्द्दनम् ॥ नरूक्षमर्दनंकुर्यात्तद्धिवातप्रकोपनम् ॥ २ ॥

करती है पथरी दोषको नाशती है ॥ ५३ ॥ शृंगी मछली वातको नाशती है रुचीको करती है वीर्यमें हित है कफनाशक मानी है कांटा मछली विषको देती है अग्नीको करती है वात कफमें पूजित है पाठीनमछली बल पुष्टि वीर्य इन्होंको करती है नित्य प्रति कफको करती है रोहित मछली उत्तम है बलको करती है वात कफको करती है ॥५४॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें मांसवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब व्यायाम और उद्वर्तनके गुण कहे जाते हैं—श्रीनारायण तेल चमेली तेल अरनी तेल इन्होंसे अथवा अन्य किसी तेलसे कुशल मल्लोंनें रस खानें वालोंनें मर्दन करना; दालचीनी इलायची नागकेसर तेजपत्ता लौंगकेसर हलदी नागरमोथा जटामांसी इन्होंके चूर्णोंसे और भुने हुये मसूर मूग जव इन्होंसे उवटना करै वातनाशक औषधियोंमें सिद्धकिया तेलसे अभ्यंग और मर्दन करना रूखा मर्दन नहीं करना वह वातको कोपता है॥२॥

अधिगतसुखनिद्रःसुप्रसन्नेंद्रियात्मासलघुजठरवृत्ति-
र्भुक्तपक्तिंदधानः ॥ श्रमभरपरिखिन्नः स्नेहसंमर्दि-
तांगः सवनगृहमुपेयाद्भूपतिर्मर्दनाय ॥ ३ ॥
अभ्यंगः श्रमवातहाबलकरः कायस्यदार्ढ्यावहः
स्यादुद्वर्त्तनमंगकांतिकरणंमेदःकफालस्यजित् ॥
आयुष्यंहृदयप्रसादिवपुषः कंडूक्लमच्छर्दिहृत्स्नाना
देवयथातुसेवितमिदंशीतैरशीतैर्जलैः ॥ ४ ॥
सामर्थ्यंसकलक्रियासुलघुतामंगेषुदीप्तिंपरामग्नेः पा-
टवमिन्द्रियेषुलघुतांछेदंपरंमेदसः ॥ उत्साहंमनसः
शरीरदृढतांशांतिंबलाढ्यापदांव्यायामःशिशिरेव-
संतसमयेकुर्याद्धिमेसेवनम् ॥ ५ ॥ वातामयः
पित्तरुजान्वितश्चबालोतिवृद्धोतिकृशोतिजीर्णः ॥

सुखपूर्वक प्राप्त हुई नींदवाला सुंदर प्रसन्न इंद्रिय और आत्मा-वाला हलका पेटवाला भोजनके पाकको धारता हुआ परि-श्रमसे खिन्न हुआ स्नेहसे मर्दित हुये अंगोंवाला ऐसा राजा बगीचा-वाले घरमें मर्दनके लियें प्राप्त हो ॥ ३ ॥ अभ्यंग परि-श्रम और वातको नाशता है बलको करता है शरीरको दृढ करता है उवटना अंगोंमें कांति करता है कपोलके मेदको जीतता है शीतल और गर्म पानीसे किया स्नान आयुमें हित है हृदयको प्रसन्न करता है शरी-रकी खाज ग्लानि छर्दि इन्होंको दूर करता है ॥ ४ ॥ व्यायाम अर्थात् कसरत करना सब कामोंमें सामर्थ्य अंगोंमें बहुत दीप्ति अग्नीकी उत्तमता इंद्रियोंमें हलकापना मेदका नाश मनका उत्साह शरीरका दृढपना दुःखकी शांति इन्होंको करता है शिशिर और वसन्त ऋतुमें सेवन करना हित है ॥ ५ ॥ वातरोगी पित्तरोगी बालक अत्यन्त बूढा कृश-

मंदानलः स्निग्धरसान्नवर्ज्योऽव्यायामकालेषुविवर्ज्जनी-
याः ॥ ६ ॥ स्थाल्यांयथानावरणाननायांनघट्टिता-
यांनचसाधुपाकः ॥ अनाप्तनिद्रस्यतथानरेंद्रव्याया-
महीनस्यनचान्नपाकः ॥ ७ ॥ वातव्याधिहरंकफप्र-
शमनं कांतिप्रसादावहं त्वग्वैवर्ण्यविनाशनंरुचिकरं
सर्वांगदार्ढ्यप्रदम् ॥ अग्नेर्दीप्तिकरंबलोपजननं प्रस्वे-
दमेदोपहं पद्भ्यांमर्द्दनमुद्दिशंतिमुनयः श्रेष्ठंसदाप्रा-
णिनाम् ॥ ८ ॥ सुकुमारस्यमंदाग्नेःकिंचित्क्षीणबल-
स्यच ॥ पित्तलस्यापिनोकार्यं कदाचित्पादमर्द्द-
नम् ॥९॥ व्यायामखिन्नगात्रस्यपद्भ्यामुद्वर्त्तितस्य
च ॥ व्याधयोनोपसर्पंतिवैनतेयमिवोरगाः ॥ १० ॥
सुवर्णवर्णंकुरुतेशरीरंदृढत्वमंगेषुददातिसद्यः॥सर्वक्रि-

अत्यन्त जीर्ण हुआ मन्दाग्निवाला चीकनारस और अन्नसे वर्जित हुआ ये सब कसरत नहीं करै ॥ ६ ॥ जैसे टोकनी आदि पात्रके मुखको नहीं ढकै और करछीसे नहीं घट्टित करै तब अन्न सुन्दर नहीं पकता है तैसेही हे राजन् नहीं प्राप्त हुई नींदवाला और कसरतसे बर्जित हुआ के अन्नकापाक नहीं होता ॥ ७ ॥ पैरोंका मर्दन करना वात व्याधिको हरता है कफको शांत करता है कांति और प्रसन्नताको देता है त्वचा रोग वर्णका बदलना इन्होंको नाशता है रुचीको करता है सब अंगोंको दृढ करता है अग्नीको दीपन करता है बलको उपजाता है पसीना और प्रमेहको देता है मनुष्यों को उत्तम है ऐसे मुनियोंनें श्रेष्ठ कहा है ॥ ८ ॥ सुकुमार मंदाग्निवाला कछुक क्षीणबलवाला और पित्तवाला के कभीभी पैरोंका मर्दन नहीं करना ॥ ९ ॥ कसरतसे खिन्न हुआ शरीरवाला के और पैरोंसे मर्दित हुआ के व्याधि नहीं पीड़ित करती जैसे गरुड़जीको सर्प ॥ १० ॥ मल्ल पुरुषोंको हाथोंसे किया

याला घवमातनोतिसंमर्द्दनं मल्लकरैः कृतंयत् ॥११॥ वातव्याधिंहरतिकुरुतेसर्वगात्रेषुपुष्टिंदृष्टिंमंदामपि- वितनुतेवैनतेयोपमांच ॥ निद्रासौख्यंजनयतिजरां हंति शक्तिंविधत्ते धत्तेकांतिंकनकसदृशींनित्यम- भ्यंगयोगात् ॥ १२ ॥ दृष्टिंनिर्मलतारकां प्रकुरु- तेहन्याच्चमूर्द्धामयान् केशान्नीलसमाधिकुंचितघ- नस्निग्धातिदीर्घाकृतीन्॥ सद्यःसंविदधातिलाघवकरं मूर्धौजडत्वापहं यूकालिक्षमलापनोदनपटुश्रेष्ठंशि- रोभ्यंजनम् ॥ १३ ॥ कषायमधुरैस्स्निग्धैर्मनोहारैः सकोमलैः ॥ उद्वर्त्तनंततःकुर्य्यात्सुपिष्टैश्वसुगंधि- भिः ॥१४॥ मेदोदोषहरंमलापजननंदौर्गंध्यनिर्णाश- नं प्राणांस्तर्पणकंबलोपजननंश्लेष्मामयध्वंसकम् ॥

मर्दन सोना सरीखा शरीर बनाता है अंगोंमें दृढपनाको शीघ्र देता है सब कामोंमें हलकापनको करता है ॥ ११ ॥ नित्य प्रति अभ्यंग करनेंसे मनुष्य वात व्याधिको हरता है सब अंगोंमें पुष्टि करता है गरुड़जी सरीखी दृष्टिको धारण करता है नींदके सुखको उपजाता है बुढापाको नाशता है शक्तिको धारता है सोना सरीखी कांतिको धारता है ॥ १२ ॥ शिरमें अभ्यंग करना निर्मल तारावाली दृष्टिको करता है शिरके रोगोंको नाशता है नीलसमान अधिकुंचित अत्यन्त चीकने लंबी आकृतिवाले ऐसे बालोंको शीघ्र धारता है हलकापनको करता है माथाके जड़पनाको हरता है जूम लीख मल इन्होंको नाशता है श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥ कसैले मीठे चीकने मनोहर कोमल सुन्दरपिसे हुये और सुन्दर गन्धवाले ऐसे पदार्थोंसे उबटना करै ॥ १४ ॥ मेददोषको हरता है मलको दूर करता है दुर्गंधपनाको नाशता है प्राणोंको तृप्त

व्यायामश्रमशांतिकारकमितिस्वच्छंदनिद्रासुखंचू-
र्णोद्वर्त्तनमुद्दिशंतिमुनयःश्रेष्ठंसुपिष्टंजलैः ॥ १५ ॥
नैर्मल्यंवपुषः करोतिकुरुतेनिष्पापमूर्त्तिपरां पुण्यं
वर्द्धयतित्वचंरचयतेवर्णप्रभांकोमलाम् ॥ कंडूंहंति
रतिश्रमंविघटयत्यंगेषुसौख्यप्रदं शुक्रौजोबलवर्द्धनं
रतिकरंस्नानंसुखोष्णांभसा ॥१६॥ शिरःस्नानमनु-
ष्णेनजननेंद्रियबोधनम्॥ केशवृद्धिकरंशैत्यात्संतर्प-
णमिहोच्यते ॥ १७ ॥ शिरोवर्ज्यमथांगानिक्षालये-
दुष्णवारिणा ॥ बलवर्णदृढांगत्वमंगानां तेन जायते
॥१८॥ईषदम्लेनकर्त्तव्याकांजिकेनखलिःपुनः॥श्ल-
क्ष्णगोधूमचूर्णेन सहितापाचिताग्निना ॥ १९ ॥

करता है बलको उपजाता है कफके रोगको नाशता है कसरत और परिश्रमको शांत करता है आनंदसे नींदके सुखको देता है पानीसे सुंदर पिसा उबटनाको ऐसे मुनि कहते हैं ॥ १५ ॥ सुखपूर्वक गर्मपानीसे किया स्नान शरीरको निर्मल करता है शरीरको पापसे रहित करता है पुण्यको बढाता है खालको रचता है वर्ण कांति कोमलता इन्होंको बढ़ाता है खाजको नाशता है रतिके श्रमको दूर करता है अंगोंमें सुख देता है वीर्य ओज बल इन्होंको बढ़ाता है रतिको करता है ॥ १६ ॥ नहीं गर्म किया पानीसे शिरका स्नान इंद्रियोंको जगाता है शीतलपनासे बालोंको बढाता है अच्छी तरह तृप्ति-कारक कहाता है ॥ १७ ॥ गर्म पानीसे सब अंगोंको धोवै परंतु शिरको नहीं धोवै तिस करके बल वर्ण और अंगोंका दृढपना ये होते हैं ॥ १८ ॥ कछुक खट्टी कांजी और मिहीन गोहूंका चूनसे

अत्यम्लचिंचादिफलैर्विपक्कांकुर्यात्खलिं साखलुदृ-
ष्टिमांद्यम् ॥ कंडूश्चतापंशिरसिप्रकुर्यात्पतंतिकेशा-
श्चतदम्लभावात् ॥ २० ॥ तस्मान्नचाम्लं मधुरं
नचापि तैलापनोदायखलिप्रकारम् ॥ कुर्य्याच्चरा-
ज्ञोभिषगप्रमत्तः केश्याश्चये नेत्रबलेचतस्य ॥ २१ ॥
सौवर्णरूप्यभांडस्थैर्वारिभिर्वस्त्रगालितैः ॥ स्वच्छैः
सुनिर्मलैः शीतैर्नदीवेगप्रवाहिभिः ॥२२॥ अथ गंभी-
रवापीनांनतुकूपतडागयोः ॥ प्रसन्नैर्मधुरास्वादैर्लघु-
भिःस्निग्धकांतिभिः ॥ २३ ॥ हितोपनीतैस्त-
त्कालमन्येनास्वादितैरपि ॥ तत्कालिकैर्जलैः स्नानं
कुरुतेनृपतिःसदा ॥ २४ ॥ सक्षारंजंतुजुष्टंबहुम-
लकलुषंदुर्ज्जरंकृष्णवर्णपीतंरक्तंविवर्णह्यरुचिरसमतो

खलि बना अग्निसे पकावै ॥ १९ ॥ अत्यंत खट्टे अमली आदि फलोंसे युत होकै पकी खलि दृष्टिका मंदपना खाज शिरमें ताप इन्होंको करती है उसके अम्लपनेंसे बाल गिरजाते हैं ॥ २० ॥ तिस कारणसे नअम्लहो और न मीठाहो ऐसी खलिके प्रकारको राजाके लियें कुशल वैद्यकरै उस राजाके बाल और नेत्रोंमें बल रहता है ॥ २१॥ सोना और चांदीके पात्रमें स्थित हुये पानीको कपड़ासे छाने साफ निर्मल शीतल और नदीका बेगसे वहनें वाले ऐसे पानियोंसे स्नान करै ॥ २२ ॥ गंभीर बावड़ी कूवा तलाव इन्होंके निर्मल मीठे हलके चीकनी कांति-वाले ॥ २३ ॥ मित्र सेवकोंनें प्राप्तकिये और अन्य मनुष्यनें स्वादित किये ऐसे तत्कालके पानियोंसे सबकाल राजा स्नान करै ॥ २४ ॥ खारा कीड़ोंसेयुत हुआ बहुत मैलसे मैला दुःखसे जरने-

नीरसंपूतिगंधम् ॥ स्वादेतिक्तंकषायंकटुलवणरसं स्याज्जलंचाप्यथाम्लं यच्चात्युष्णातिशीतं नखलु नरपतेर्मज्जनंतेनकुर्यात् ॥ २५ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेमर्दनाभ्यंगनीरगुणाः ॥ ॥ अथेदानींभोजनविधिःकथ्यते ॥ स्नानंविधायविधिवत्कृतदेवकार्यसंतर्पितातिथिजनः सुमनाःसुकार्यः ॥ आप्तैर्वृतोहरतिभोजनकृच्च सात्म्यात्सायंतथाभवति भुक्तिकरोभिलाषः ॥ १ ॥ नित्याचारपवित्रनिर्मलतनुर्धौतप्रसन्नांबरोहृष्टोभोजनवेश्मनिस्थिरतरेमृद्वासनेसंविशेत् ॥ पुत्रैःसंततिभिस्तथापरिजनैराप्तैर्वृतःसर्वतः सद्वैद्यैश्चनियोगिभिः सुचरितैस्तंत्रोपयु-

वाला कालावर्णवाला पीला लाल बिगडावर्णवाला रुचीके अयोग्य रसबाला रससे रहित दुष्टगंधवाला स्वादमें कड़वा कसैला चर्चरा सलौना नहीं खट्टा अत्यंत गर्भ अत्यंत शीतल ऐसा पानीसे राजा स्नान न करै ॥ २५ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदाधिमें मर्दन अभ्यंग आर स्नानका पानीके गुण समाप्त हुये ॥ इसके अनंतर अब भोजनकी विधि कही जाती है— विधिपूर्वक स्नान और देवकर्म्म कर अतिथि मनुष्योंको तृप्तकर सुंदर मनवाला और सुंदर कार्यवाला और शिष्ट पुरुषोंसे वृत हुआ राजा प्रकृतिके योग्य भोजन करै परंतु ऐसा भोजन करै कि सायंकालमें भोजनकी इच्छा बनी रहै ॥ १ ॥ नित्यका आचार करकै पवित्र और निर्मल शरीरवाला धोये हुये साफ कपड़ोंवाला प्रसन्न हुआ पुत्र पुत्री सेवक मित्र शिष्ट उत्तम वैद्य सुंदर चारितवाले तांत्रिक इन्होंसे परिवृत हुआ राजा भोजनके स्थानमें अत्यंत स्थिर

स्कैर्नृपः ॥२॥सद्यःशालेयमन्नंशशिकरनिकरप्रोज्ज्वलं सिद्धसारं भ्राम्यद्बाष्पच्छलेन त्रिदशपुरसुधाध्येय-माधुर्यतत्त्वम् ॥ अन्योन्यंनैवलग्नं परिमलभरिता-गारवेदीविभागंसंप्राप्नोतिप्रसन्नंप्रथमपरिदृढोयस्यपुं-सांवरस्य ॥ ३ ॥ उष्णौदनंभ्रममदात्ययरक्तपित्तमे-हप्रदः कृमिहरः कसनार्त्तिनिघ्नः ॥ आध्मानगुल्मक्ष-तकासहिक्काश्वासापहःपवनकृल्लघुदीपनश्च ॥ ४ ॥ शीतौदनंशीतलमग्निसादश्वासप्रसेकानिलविड्विबंधा-न् ॥ कुर्यादसृक्पित्तहरश्चमेहमूर्च्छाभ्रमच्छर्दिमदा-त्ययघ्नः ॥५॥ रसौदनोज्वरहरोबल्योवातनिबर्हणः॥ घोलंभुक्तंहिमंस्वादुहृद्यंदीपनपाचनम्॥६॥ आमशू-लग्रहण्यर्शोहरं पुष्टिरुचिप्रदम् ॥ मुद्गौदनः कषाय-श्च मधुरः पित्तनाशनः ॥ श्रेष्ठः शोणितपित्ताना-

और कोमल ऐसा आसनपै बैठै ॥ २ ॥ चंद्रमाके किरनोंके समान प्रकाशित सिद्ध सारवाला भ्रमता हुआ बांफके छलसे अमृतके समान चिंतवन किया मधुरपनासे युत आपसमें नहीं लगा अत्यंत साफ ऐसा शालि चावलको खावै ॥ ३ ॥ गर्म भात्त भ्रम मदात्यय रक्त पित्त प्रमेह इन्होंको देता है कृमियोंको हरता है खांसीको हरता है अफरा गुल्म क्षतकी खांसी हुचकी श्वास इन्होंको नाशता है वातको करता है हलका है दीपन है ॥ ४ ॥ ठंढा भात शीतल है मंदाग्नि श्वास प्रसेक वात मलका बंधा इन्होंको करता है रक्त पित्त प्रमेह मूर्छा भ्रम छर्दि मदात्यय इन्हों-को नाशताहै ॥ ५ ॥ मांसका रस सहित भात ज्वरको हरता है बलमें हित है वातको दूरकरता है भोजन किया घोल शीतल है स्वाद है सुंदरहै

मरोचकविनाशनः ॥७॥ आजानुस्थापनीयं कन-
कमयमथोरौप्यमग्रेसुपात्रंस्फारं तस्योपरिष्टात्कन-
कविरचितावाटिकामंडलिन्यः ॥ भक्तंसोष्णंसबाष्पं
शशिकरधवलं कुंदिकाकुड्मलाभं मध्येस्थाप्यंसुरू-
पंबहुसुरभिघृतं दक्षिणेस्वर्णपात्रे ॥ ८ ॥ भ्रष्टंतैला-
ज्यपक्कंबहुविधरचनाकल्पितैः सूपकारैरन्योन्यंसा-
भिमानैस्तदपिचसकलं जांगलानूपमांसैः ॥ स-
द्यस्तत्रैवपार्श्वेसुरभिरुचिकरंदक्षिणेवामभागे लेह्यं
चोष्यंचपेयंभवतिचकठिनोभक्ष्यवर्गःपुरस्तात्॥९॥
आदौघृतंचसूपंचतथाकूर्याद्यथापिबेत् ॥ घृते-
नसंप्लुतंह्यन्नंपाचनंसुखकारिच ॥ १० ॥

दीपन है पाचन है ॥ ६ ॥ आम शूल ग्रहणी बवाशीर इन्होंको हरता है पुष्टि और रुचीको देता है—मूंगों सहित भात कसैला है मीठा है पित्तको नाशता है रक्त पित्तवालोंको श्रेष्ठ है अरोचकको नाशता है ॥ ७ ॥ गोडों पर्यंत सोनाका अथवा चांदीका सुंदर पात्र स्थापित करना उसके ऊपर मंडलोंवाली सोनासे बनी ऐसी वाटिका धरै उसमें गर्म बाफसहित चंद्रमाके किरनोंके समान सुपेद कुंदका फूलकी कली सरीखा मध्यमें स्थापित करना और दाहिने तर्फ सोनाके पात्रमें बहुत सुगंधित घी स्थापन करना ॥ ८ ॥ भुना हुआ तेल और घीसे पकाया बहुत प्रकारकी रचनासे कल्पित आपसमें अभिमानवाले रसोइदारोंनें कल्पित किया जांगल और अनूपदेशका मांससे युत ऐसा भोजनधरै तहांही पासमें मदिरा धरै दहिने तर्फ तथा वामे तर्फ सुगंधित और रुचिकारक लेह्य चोष्य पेयये धरने कठोर पदार्थको पहलें खावै ॥ ९ ॥ आदिमें घी और दालको तल कर जैसे पीवै; घीसे भिगोया अन्न पाचन है और सुखको करता है॥१०॥

नारायणोनिशिनिमिः पुनरस्तकालेमध्यंदिनेहिधिष-
णश्चरकःप्रभाते ॥ भुक्तेजगादनृपतेर्ममचैषसर्गस्त-
स्मात्सएवसमयः क्षुधितःसदैव॥११॥चकोरवन्महा-
कामीसनक्तंभोक्तुमर्हति ॥ संभोक्तावासरेयश्चरात्रौ
रेतश्चकोरवत् ॥ १२ ॥ हृन्नाभिपद्मसंकोचश्चंडरोचे
रपायतः ॥ अतोनक्तंनभोक्तव्यं वैद्यविद्याविदांवरैः
॥ १३ ॥ देवार्चाभोजनंनिद्रामाकाशेनप्रकल्पयेत् ॥
नांधकारेनसंध्यायांनाविताने वितानके ॥१४॥ भुक्तौ
स्वापेमलोत्सर्गेयःसंबाधासमाकुलः॥निःशंकत्वात्प्रया-
तस्यकेकेनस्युर्महामयाः॥१५॥विवर्णां स्विन्नांविक्लिन्नां
विगंधिविरसांस्थिति ॥ अतिजीर्णमसात्म्यंचनाद्या-
दन्नंचाविलम् ॥ १६ ॥ कामकोपौतथायासयान-

रात्रिमें नारायण अस्तकालमें निमि दुपहरमें बृहस्पति प्रभातमें चरक ऐसे राजाको भोजनकरना कहते है परंतु जब भूख लगै उसी समय राजा भोजन करै ॥ ११ ॥ जो चकोरकी तरह महाकामी हो वह राजा रत्रिमें भोजन करसक्ता है रात्रिमें चकोरके समान वीर्यवाला राजा दिनमें भोजन करसक्ता है ॥ १२ ॥ हृदयं नाभिमें होनेंवाला कमल सूर्यकी किरनोंके अभावसे बुझ जाता है इसलियें उत्तम वैद्योंनें रात्रिमें भोजन नहीं करना ॥ १३ ॥ देवताकी पूजा भोजन नींद इन्होंको अंधेरा संध्या समय सबके सन्मुख और अत्यंत एकांत इन्होंमें नहीं करै ॥ १४ ॥ भोजन सोवना मलको त्यागना इन्होंमें जो पीड़ासे युत हो उसके निःशंकपनासे प्रहोरा किसीके हेतुसे महा रोग होते है ॥ १५ ॥ विगड़ा हुआ नहीं पका विशेष गीला बुरी गंधवाला विगत हुआ रसवाला अत्यन्त पुराना प्रकृतिके अयोग्य और मैला ऐसा अन्नको नहीं खावै ॥ १६ ॥ हितकी इच्छावालाने भोजनके

वाहनवह्नयः ॥ भोजनानंतरंसेव्यानजातुहितमिच्छ-
ता ॥ १७ ॥ हितंपरमितंपक्वंनेत्रनासारसाप्रियम् ॥
परीक्षितंचभुंजीतनद्दतं न विलंबितम् ॥ १८ ॥
अत्याशनमध्यशनं समशनमशनंचसंत्याज्यम् ॥
कुर्याद्यथोक्तमशनं बलजीवितपेशलंक्रमशः ॥१९॥
आदौस्वादुस्निग्धंतन्मध्ये लवणमम्लमुपभोज्यम् ॥
रूक्षंद्रव्यंचपश्चान्नचभुक्तेभक्षयेत्किंचित् ॥ २० ॥
मंदस्तीक्ष्णोविषमः समश्चवह्निश्चतुर्विधःपुंसाम् ॥
लघुमंदेगुरुतीक्ष्णेस्निग्धं विषमेसमेसमंस्यात्॥२१॥
ध्वांक्षस्वरान् विकुरुतेऽत्रपिकात्मजश्चबभ्रुः शिखंडि-
तनयश्चभवेत्प्रहृष्टः॥ क्रौंचःप्रमोदयतिविरौतिचता-
म्रचूडः नृत्यंशुकःप्रतनुते वदतेपिकश्च ॥ २२ ॥

अनन्तर काम कोप परिश्रम सवारी वाहन अग्नि ये कभीभी नहीं सेवने ॥ १७ ॥ हित परिमितपका हुआ नेत्र और नाकमें रससे प्रिय परीक्षा किया हुआ नष्ट नहीं हो और विलंब न हो ऐसा अन्नको भोजन करै ॥ १८ ॥ अत्यन्तभोजन भोजन पै भोजन सम्यक् प्रकारसे भोजन ये त्यागने बल और जीवको देनेंवाला यथोक्त भोजन करना ॥ १९ ॥ आदिमें स्वाद और चीकना मध्यमें सलौना और खट्टा अन्तमें रूखा ऐसे द्रव्यको भोजन करै भोजन कियें पीछे कुछभी नहीं भोजन करना ॥ २० ॥ मनुष्योंके मन्द तीक्ष्ण विषम और सम ऐसे अग्नि चार प्रकारका है मन्दाग्निमें हलका तीक्ष्णाग्निमें भारी विषमाग्निमें चीकना समाग्निमें सम ऐसा भोजन देना ॥ २१ ॥ विषसे मिला भोजनसे काक और कोयलका बच्चा बुरी तरह पुकारते है नौला और मोर प्रसन्न होते है कुंज आनंदित होता है मुर्गा रोनें लगता है तोता विस्ता-

विरज्येतेचकोरस्य लोचनेविषदर्शनात् ॥ गतौ स्खलतिहंसोपिलीयंतेचात्रमक्षिकाः ॥ २३ ॥ यथालवणसंपर्कात्स्फुटंस्फुटतिपावकः ॥ विष दूष्यान्नसंपर्कात्तथावस्तुमहीपते ॥ २४ ॥ पुनरुष्णीकृतं सर्वंसर्वंधान्यंविरूढजम् ॥ दशरात्रोषितं नाद्यात्कांस्येचनिहितंघृतम् ॥ २५ ॥ दधितक्राभ्यांकदलीं क्षीरंलवणेनशष्कुलीकलमाः ॥ मधुपिप्पलीसमरिचैः सार्धंसेव्यंनकाकमाचीच ॥ २६ ॥ भुंजीतमाषसूपंमूलकसहितं नजातुहितकामः ॥ दधिचद्विष्टंनाद्यादशनेतैलंतिलविकारंच ॥ २७ ॥ ऋतेघृतांबुभक्षेभ्यः सर्वंपर्युषितंत्यजेत् ॥ दध्नापरिप्लुतं नाद्याद्विशुष्कंपयसानच ॥ केशकीटक-

रको प्राप्त होता है कोयल बोलता है ॥ २२ ॥ विषको देखनेसे चकोरके नेत्र लाल हो जाते है हंसका गमन शिथिल हो जाता है और माखी मरती है ॥ २३ ॥ जैसे नमकके सम्पर्कसे अग्नि स्फुटित फटता है तैसे हे राजन् विषसे दूषित हुआ अन्नसे वस्तु फटता है ॥ २४ ॥ सब प्रकारका कृतान्न फिर गर्म किया, अंकुरवाला, सब अन्न, कांसीके पात्रमें दश दिन धरा घी इन्होंको नहीं खावै ॥ २५ ॥ दही और तक्रसे केला नमकसे दूध कलम चावलोंसे पूरी शहदसे पीपल मिरचोंसे मकोह ॥ २६ ॥ मूलीसे उड़दकी दाल इन्होंको हितकी कामनावाला कभीभी नहीं खावे बुरा दहीको नहीं खावै भोजनमें तेल और तिलोंका विकारको नहीं खावै ॥ २७ ॥ भूखवालोंको घीके विना कुछभी पर्य्युषित अर्थात् वासी पदार्थ नहीं देवै वासी पदार्थको दहीसे लपेट-

संसृष्टंपुनरार्द्रंच वर्जयेत् ॥ २८ ॥ भोजनादौस-
दावायुःप्रकुप्यत्यनिलोमहान् ॥ घृतप्लुतेनचान्नेन
तस्मात्संतर्प्पयेच्चतम् ॥ २९ ॥ घृतादिपक्वंमधुरंच
सर्वंदेवप्रधानं प्रथमंविदध्यात् ॥ ततःपरं भोजन
मादिशंतिकट्वम्लयुक्तं मधुरंचपथ्यम् ॥३०॥ तिक्तं
कषायंकटुकंतथांतेभुंजीतसर्वंसुबहुद्रवंच ॥ एवंहि
कुर्वन्नृपातिःसदैव दैर्घ्यायुरारोग्यतनुश्चभूयात्॥३१॥
कश्चिद्वायुं शमयतिरसः कोपिपित्तंकरोतिकश्चित्सो
मंशमयतितरांकोपितस्यप्रकोपम् ॥ कश्चित्पित्त-
प्रशमनमतः कोपितत्कोपकारीनित्यंतस्मात्सकल-
रसभुग्भूमिपालश्चिरायुः ॥ ३२ ॥ यस्मिनृतौये

नहीं खावै सूका पदार्थको दूधसे नहीं खावै वाल और कीड़ासे युत हुआ फिर गीला किया ऐसा पदार्थको वर्ज्जै ॥ २८ ॥ भोजनकी आदिमें सब काल महान् वायु प्रकुपित होता है तिस कारणसे उसको घीसे युत किया अन्नसे तृप्त करै ॥ २९ ॥ घी आदिसे पका हुआ सब मधुर पदार्थ प्रथम देवके भोग लगाके देवै तिसके अनन्तर नमक खट्टा मधुर और पथ्य ऐसा भोजन करै ॥ ३० ॥ अन्तमें कड़वा कसैला चर्चरा और बहुत पतला ऐसा पदार्थको खावै ऐसे करनेवाला राजा सब काल दीर्घ आयु आरोग्य इन्होंसे युतहुआ शरीरवाला मनुष्य होता है ॥ ३१ ॥ कोईक रस वायुको शांत करता है कोईक रस पित्तको करता है कोईक रस कफको अत्यन्त शान्त करता है कोईक रस कफके कोपको करता है कोईक रस पित्तको शांत करता है कोईक रस पित्तके कोपको करता है तिस कारणसे नित्य प्रति सब रसोंको खानेवाला राजा बहुत आयुवाला होता है ॥ ३२ ॥ जिस

चरसाबलिष्ठाःसेव्यास्तुतेतत्रविशेषतोऽपि ॥ अयंवि-
शेषोनचसर्वदैवभोज्यंनृपेणैकरसप्रधानम् ॥ ३३ ॥
भक्तंससूपंसघृतंसमांसं भुक्त्वाथपूर्वैकवलैःकियद्भिः॥
पिबेज्जलंशीततरंहिहृद्यंहृत्कंठशुद्धिर्भवतीश्वराणाम्
॥३४॥एकव्यंजनमासाद्यततः प्रक्षालयेद्भृशम्॥करं-
चपुनरन्यच्चभुंजीतनृपतिःसुखम् ॥३५॥ एवमन्नंचभुं-
जानःस्वादुत्वंजनयेद्भृशम् ॥ पुष्टिंचमहतींकुर्याद्वि-
चित्रंविधिनाकृतम् ॥३६ ॥ पानीयपात्राणिसुशीतला
निसौवर्णरूप्यादिविनिर्मितानि॥ सुधौतवस्त्रैरधिवेष्टि-
तानिवामेविधेयान्यथदक्षिणेच ॥ ३७ ॥ एत
द्गृहद्वयंकार्यंवामदक्षिणपार्श्वयोः ॥ चकोरशिखिहंसा-
दीन्पक्षिणोविनिवेशयेत् ॥ ३८ ॥ शृंगाररससं

ऋतुमें जो रस अत्यंत बलवाले हैं वे सब विशेषकर सेवित करने यह विशेष सब काल नहीं है कि राजानें प्रधानतासे एक रस भोजन करना ॥ ३३ ॥ दाल घी मांस इन्हों सहित भातको प्रथम कितनेंक ग्रासोंसे खाके अत्यंत शीतल सुंदर ऐसा पानीको पीवै राजाओंके हृदय और कंठकी शुद्धि होती है ॥ ३४ ॥ एक व्यंजनको खाके पीछे हाथको अत्यंत धोकै फिर राजा सुखरूप अन्य भोजनको खावै ॥ ३५ ॥ ऐसे अन्नको खाता हुआ स्वादुपनाको अत्यंत उपजाता है उचित प्रकारसें किया हुआ विचित्र अन्न बडी पुष्टिको करता है ॥ ३६ ॥ सोना चांदी आदिसे रचे हुये सुंदर शीतल और सुंदर धोये हुये वस्त्रोंसे वेष्टित किये ऐसे पानीके पात्र वामें तर्फ तथा दाहिनें तर्फ धरने ॥ ३७ ॥ दाहिनें वामें तर्फ दो घर बनाने उन्होंमें चकोर मोर हंस आदि पक्षियोंको बसावै ॥ ३८ ॥ शृंगार

बद्धांशृणुयाच्चकथांशुभाम् ॥ तेनहर्षोभवेत्तस्य भुं-
जानोनृपतिःसुखी ॥ ३९ ॥ भुंजानोनबहुब्रूयान्निंदे-
तान्नंकदापिन ॥ जुगुप्सितांकथांचैवनब्रूयाच्छृणुया-
न्नच॥४०॥लेह्यभक्ष्यादिकंसर्वंभुक्त्वातंतुयथासुखम्
॥शेषमांसरसंपीत्वाक्षीरं वा तक्रमेवच ॥४१॥ यथा
सात्म्यंततःकुर्यात्सम्यगाचामयेन्नृपः ॥ प्रक्षालये
त्करौसोष्णैर्जलैःस्नेहंचशोधयेत् ॥ ४२ ॥ चूर्णेनहृद्य
गंधेनमसुरादिकृतेनच ॥ ततोरूक्षकवोष्णेनजले-
नक्षालयेत्करौ ॥ ४३ ॥ गंडूषाञ्छीतलान्कुर्या-
च्चंदनागुरुकल्पितान् ॥ ४४ ॥ गंडूषैर्ब-
हुभिःसुशोधितमुखः श्रीचंदनोन्मिश्रितैः धूपेनाथसु-
गंधिनाथवदनं घ्राणंकरौधूपयेत् ॥ मृद्नीयात्तदनु
प्रसन्नसुरभिश्रीचंदनेनावृतौ पाणीवक्रमपिप्रसन्नवि-

रससे युत हुई और शुभ ऐसी कथाको सुनै उस करकै उसको आनंद होता है भोजन करनेंवाला राजा सुखी रहता है ॥ ३९ ॥ भोजन करता हुआ बहुत नहीं बोलै अन्नकी निंदा कभी भी नहीं करै निंदित कथाको न कहै और न सुनै ॥ ४० ॥ लेह्य भक्ष्य आदि सबको सुखपूर्वक भोजन कर पीछे मांसका रसको पीकै दूध अथवा तक्र पीना ॥ ४१ ॥ जैसी प्रकृति हो उसके अनुसार भोजन कर पीछे राजा अच्छी तरह आचमन करै गर्मपानीसे हाथोंको धोवै पानी और स्नेहको शोधै ॥ ४२ ॥ सुंदर गंधवाला और मसूर आदिसे किया ऐसा चूर्ण हाथोंके मसल पीछे रूखा और अल्प गर्म पानीसे धोवै ॥ ४३ ॥ चंदन और अगरसे कल्पित किये शीतल गरारे अर्थात् कुल्ले करै ॥ ४४ ॥ चंदनसे युत किया पानीसे किये कुल्लोंकरकै सुंदर शोधित मुखवाला होकै पीछे

लसत्कर्पूरगर्भमुदा ॥ ४५ ॥ भुक्तोपरिसमाच
म्यमार्ज्जयित्वाक्षिणीकरौ॥पुनर्दक्षिणहस्तेनमार्ज्जयेदु
दरंसुधीः ॥ ४६ ॥ ततः प्रसन्नेंद्रियचित्तवृत्तिरुत्सा
दयित्वाचशतंपदानि ॥ सुकोमलेकल्पितचारुतल्पे
सुखं विशेद्वामकटिर्नरेंद्रः ॥ ४७ ॥ विदग्धवाग्भिः
सहस्त्रीभिस्तिष्ठेद्गोष्ठींसमाचरेत्॥ निद्रासात्म्येथवानि
द्रांनृपः कुर्याद्यथासुखम् ॥ ४८॥ अम्लेनकेचिद्वि
हितामनुष्यामाधुर्ययोगेप्रणयीभवंति ॥ अथाम्लयो
गेमधुरेणतृप्तिस्तेषांयथेष्टं प्रवदंतिपथ्यम् ॥ ४९ ॥
शीतोष्णतोयासवमद्ययूषफलाम्लधान्याम्लपयोरसा
नाम् ॥ अस्यानुपानंविहितंभवेद्यत्तस्मैप्रदेयं सहमा

सुगंधित धूपसे नाक और हाथको धूपित करै पीछे प्रसन्न गंधवाला होकै चंदनसे युत हुये हाथ प्रसन्न प्रकाशित कपूरसे गर्भित ऐसा मुखको मलै ॥ ४५ ॥ भोजनके ऊपर अच्छी तरह आचमन कर आंख और हाथोंको धोकै फिर दाहिना हाथसे बुद्धिमान् पेटको शुद्ध करै ॥ ४६ ॥ पीछे प्रसन्न हुये इंद्रिय और चित्तकी वृत्तिवाला होकै १०० पैर चलकै सुंदर कोमल सुंदर ऐसी पलंग पै बामीकरवट होकै राजा सुख पूर्वक स्थित होवै ॥ ४७ ॥ सुंदर वाणीवाली स्त्रियोंके साथ स्थित होकै सभा करै अथवा नींद आती हो तो राजा सुखपूर्वक सोवै ॥ ४८ ॥ अम्ल रससे युत हुये कितनेंक मनुष्य मधुरपनाके योगमें प्रणय होते है इसके अनंतर अम्लके योगमें मधुर पदार्थसे तृप्ति होती है उन्होको मनोवांछित पथ्य कहते है ॥ ४९ ॥ शीतल पानी गर्म पानी आसव मदिरा यूष फलोंकी कांजी अन्नकी कांजी दूध मांसका रस इन्हों मांहसे जो अनुपान हित

त्रयाच ॥ ५० ॥ व्याधिंचकालंच विभाव्यधीरैर्दे
यानिभोज्यानिचतानितानि ॥ सर्वान्नपानादिपरं व-
दंतिमेध्यंयदंभः शुचिभाजनस्थम् ॥ ५१ ॥ लोक-
स्यजन्मप्रभृतिप्रशस्तंतोयात्मकाःसर्वरसाश्चसृष्टाः॥
संक्षेपएषोविहितोऽनुपानेह्यन्यैश्चतैर्विस्तारितंसमस्तम्
॥ ५२ ॥ पिष्टान्नेंबुहिमंपयश्चतिलजेतक्रं शुभंमा
षजेगोधूमेषुचकर्कटीचसततं मांसाशनेकांजिकम् ॥
नालीकेरफलेषुतंदुलकणान्सर्पिस्तुमोचाफलेनारिं
गंगुरुभक्षणेचसततं पिंडालुकेकोद्रवान् ॥ ५३ ॥
मयासुषेणेनकृतंहितायप्राणिप्रसादं जनयेच्चशीघ्रम्
॥ ५४ ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेभोजना
नुपानवर्गः ॥ ॥ अथातस्तांबूलगुणाः कथ्यंते ॥

हो वह उसको मात्रासे देना ॥ ५० ॥ रोग और कालको विचारकर धीर मनुष्योंनें अनेक प्रकारके भोजन देने शुद्ध और पवित्र पात्रमें स्थित किया पानी सब अन्नपानोंसे उत्तम कहाता है ॥ ५१ ॥ संसारका जन्मसे लैके पानी उत्तम है सब रस पानीसे रचे जाते है अनुपानमें यह संक्षेप कहा अन्य तिस तिस पदार्थसे विस्तरित संपूर्ण कहा ॥ ५२ ॥ पीठी अन्न पै शीतल पानी तिलोंके पदार्थ पै दूध उड़दके पदार्थपै तक्र गीहुंके पदार्थ पै काकड़ी मांसका भोजनपै कांजी नारियलके फलों पै चावलोंके कणके केला फल पै घी नारिंगी फल पै भारी भक्षण पिंडालुक पै कोद्रूय अनुपान शुभ है ॥ ५३ ॥ मै सुषेणनें हितके लिये यह किया है मनुष्योंको सुख शीघ्र देता है ॥ ५४ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेद महोदधिमें भोजनका अनुपानवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब नागरपानके

कर्पूरकंकोलवंगपूगजातीफलैर्नागरखंडपर्णैः॥शुद्धा
श्मचूर्णखदिरस्यसारं कस्तूरिकाचंदनचूर्णमिश्रम् ॥
तांबूलमेतत्प्रवदंतिवैद्याः॥१॥सौभाग्यदंकांतिसुखप्र
दंचह्यारोग्यमेधास्मृतिबुद्धिवृद्धिम् ॥ करोतिवह्नेरपि
दीपनंचह्यनंगसंदीपनभोगमध्ये ॥ २ ॥ प्रधानमे
तत्समुदाहरंतिह्यतोहिसर्वेसुखिनोमनुष्याः ॥ अह
र्निशंप्रीतिकरंभजंतेतांबूलपत्राणिहरंतिवातम् ॥३॥
पूगीफलंहंतिकफंसुहृद्यंचूर्णनिहन्यात्कफवातमुच्चैः॥
हन्याच्चपित्तंखादिरस्यसार इत्थंहितांबूलमुदाहरंति ॥
दोषत्रयस्यापिनिवारणाय ततोऽत्रसेवेन्नकथंतदेतत्
॥ ४ ॥ ननेत्ररोगेनचपित्तरक्ते क्षतेनवातेनविषेनशो
षे॥मदात्ययेनापिनमोहमूर्च्छाश्वासेषुतांबूलमुशंति
वैद्याः ॥ ५ ॥ भुक्त्वान्नंसलिलंपीत्वा गृहीत्वा

गुण कहे जाते है—कपूर कंकोल लौंग सुपारी जायफल सूंठ नागरपान शुद्ध चूना कत्था कस्तूरी चंदनका बुरादा इन सबोंको मिला वैद्य तांबूल-कहते है ॥१॥ तांबूल सौभाग्यको देता है कांति और सुखको देता है आरोग्य शुद्धबुद्धि स्मृतिबुद्धि इन्होंको बढाता है अग्नीको जगाताहै कामदेवको निश्च-य जगाता है॥ २ ॥ इसको प्रधान कहते है इस्से सब मनुष्य सुखी रहते है दिन रात्रि प्रीति कारक तांबूलको मनुष्य सेवते है यह वातको नाशता है ॥ ३ ॥ सुपारी कफको हरती है चूना कफ वातको हरता है कत्था पित्तको हरता है ऐसे तांबूलको कहते है ।त्रि दोषको दूर करनेंके लियें तांबूलको सेवता रहै ॥४॥ नेत्ररोग पित्तरक्त क्षतरोग वात विष शोष मदा-त्यय मोह मूर्छा श्वास इन्होंमें तांबूल खाना वैद्य नहीं कहते हैं ॥ ५ ॥ भोजन करकै पानी पीकै बहुत औषधको लेकै एकघड़ी देखकै मनुष्य

बहुभेषजम् ॥ प्रतीक्ष्यघटिकामेकां तांबूलंभक्षये-
न्नरः ॥ ६ ॥ गायत्रीगुटिकाचूर्णपूगनागलताद-
लम् ॥ यथोत्तरंयथास्वादमधिकांगेनयोजितम्॥७॥
समपत्रफलेरागोविरागस्तुफलाधिके ॥ चूर्णाधिकेतु
दुर्गंधिःपत्राधिक्येसुगंधता ॥ ८ ॥ प्रातःपूगाधिकं
कुर्याच्चूर्णाधिक्यंतुमध्यमे ॥ रात्रौपत्राधिकंकुर्या-
त्तांबूलस्येतिलक्षणम् ॥ ९ ॥ तदेवभूयःखदिरेण
युक्तंकुर्यादरोगंविशदंचवक्रम् ॥ आमोदनंरोचनदी-
पनंचप्रमेहमूत्रामयनाशनंच ॥ १० ॥ आलस्य
विद्रध्युपजिव्हिकानांसुतालुदंतार्बुदशोणितानाम् ॥
गलास्यगंडापचितालुशोषश्लेष्मामयानांचभृशंप्रश-
स्तम् ॥ ११ ॥ आद्यंतात्पिक्ककंत्याज्यंमहादोषक-

तांबूलको खावै ॥ ६ ॥ कत्थाकी गोली चूना सुपारी नागर पान य उत्तरोत्तर क्रमसे अधिक युक्त किये बहुत स्वाद देते है ॥ ७ ॥ नागर पान और सुपारी समान हों तो राग अर्थात् प्रीति होती है सुपारी अधिक होनेमें राग नहीं होता चूना अधिक होनेमें दुर्गंधि होती है नागर पान अधिक होनेमें सुगंधपना होती है ॥ ८ ॥ प्रभात विषे तांबूलमें सुपारी अधिक देनी दुपहरमें चूना अधिक देना रात्रिमें नागर पानका पत्ता अधिक देना तांबूलकायह लक्षण है ॥ ९ ॥ फिर कत्थासे युक्त किया वह रोगसे रहित सुन्दर ऐसा मुखको करता है आनंद देता है रोचन है दीपन है प्रमेह और मूत्र रोगको नाशता है ॥ १० ॥ आलस्य विद्रधि उपजिह्विका तालुरोग दंतार्बुद दन्तरक्त गलरोग मुखरोग गलगंड अपची तालुशोष कफके रोग इन रोगवालोंको अत्यन्त उत्तम है ॥ ११ ॥ तांबूलका

रंयतः॥द्वितीयंदुर्जरंभेदितृतीयाद्यमृतोपमम्॥१२॥
पर्णस्यमूलंहरतियशोऽव्याधिंकरोतिच॥मध्यंलक्ष्मी-
हरंचाग्रमनायुष्यंचपापकृत् ॥ १३ ॥ शिराबु-
द्धिंहरेच्चूर्णंपर्णंलक्ष्मीहरंपरम् ॥ तांबूलंनैवसेवेत
क्षीरंपीत्वातुमानवः ॥ १४ ॥ यावत्तत्पच्यते
क्षीरंमुहूर्ताद्वापिशस्यते ॥ दंतदौर्बल्यपांडुत्वनेत्र-
रोगबलक्षयान् ॥ तनोतिपार्श्वरोगांश्च तांबूलम
तिसेवितम् ॥ १५ ॥ वातश्लेष्मप्रशमनंहृद्यंवन्हेश्च
दीपनम्॥मुखवैरस्यहरणंकंकोलंभुक्तपाचनम्॥१६॥
जातीफलंरोचनदीप्तिकृच्चकफापहंकंठरुजापहंच ॥
रसेकटुश्रेष्ठमजीर्णनाशंनिहंतिशुक्रंकुरुतेचपित्तम्१७

पहला पीक त्यागना यह महादोषको करता है दूसरा पीक दुःखसे जरता है भेदन है तीसरा आदि पीक अमृतके समान है ॥ १२ ॥ पानकी जड यशको नाशती है रोगको करती है पानका मध्य भाग लक्ष्मीको हरता है पानका अग्रभाग आयुमें हित नहीं है पापको करता है ॥ १३ ॥ पानकी नाड़ी बुद्धिको हरती है पानका चूर्ण लक्ष्मीको हरता है दूधको पीकै मनुष्य तांबूलको नहीं सेवै ॥ १४ ॥ जबतक वह दूध पकै तबतक अथवा दो घड़ीतक तांबूल वर्जना अत्यन्तसेवित किया तांबूल दन्तोंकी दुर्बलता पांडुरोग बलक्षय और पसलीशूल इन्होंको करता है ॥ १५ ॥ कंकोल वात कफको शांत करता है सुन्दर है अग्नीको दीपता है मुखका विरसपनाको हरता है भोजनको पकाता है ॥ १६ ॥ जायफल रुची और कांतिको करता है कफको नाशता है कंठके रोगको नाशता है रसमें चर्चरा है श्रेष्ठ है अजीर्णको नाशता है

कंकोलजातीफलवल्लवंगांविशेषतश्छार्दिहरंविषघ्नम् ॥
स्वरक्षयेचापिमुखस्यपाकेत्वजीर्णबाधासुचपथ्यमे-
तत् ॥ १८ ॥ एलाद्वयञ्छर्दिषुमूत्रकृ-
च्छ्रेमंदानलेपित्तगदेऽरुचौच ॥ स्वादुःसुशीतो
मधुरश्चपाकेह्यरोचकंहंतिचजातिकोशः ॥ १९ ॥
तांबूलयोग्यंक्रमुकंचतज्ज्ञामासत्रयादूर्ध्वमुदाहरंति॥
मासेव्यतीतेतु भवंतिपूर्णान्यतीवहृद्यानिमनोहरा-
णि ॥ २० ॥ आर्द्रंतुगुर्वभिष्यंदिहृष्टयाग्निवधकृत्प-
रम् ॥ शुष्कंतुवातलं स्निग्धंत्रिदोषशमनंपरम् ॥
स्विन्नपूगंत्रिदोषघ्नंपक्वं शुष्कंतुवातलम् ॥ २१ ॥
पक्वार्द्रंगुर्वभिष्यंदिबालार्द्रंकफपित्तहृत् ॥ पूगंस्या

वीर्यको नाशता है और पित्तको करता है ॥ १७ ॥ लौंग कंकोल और जायफलके समान गुणोंवाला है विशेषकर छर्दि और विषको हरता है स्वरक्षय मुखका पाक और अजीर्णकी पीडा इन्होंमें पथ्य है ॥ १८ ॥ दोनों इलायची छर्दि मूत्रकृच्छ्र मंदाग्नि पित्तरोग अरुचि इन्होंमें हित है सुन्दर स्वादु है और पाकमें मीठा है जातिकोश अरोचकको नाशता है ॥ १९ ॥ सुपारी तीन महीनोंसे उपरांत तांबूलके योग्य होती है एक महीना व्यतीत होनेमें पूर्ण सुंदर और मनोहर ऐसी सुपारी हो जाती है ॥ २० ॥ गीली सुपारी भारी है अभिष्यंदी है दृष्टि और अग्नीको नाशती है सूकी सुपारी वातको करती है चीकनी है त्रिदोषको हरती है सिजाई हुई सुपारी त्रिदोषको नाशती है पकीहुई और सूकी सुपारी वातको करती हैं ॥ २१ ॥ पकी हुई गीली सुपारी अभिष्यंदी है कच्ची और गीली सुपारी कफ पित्तको

हृठमध्यंयच्छ्रेष्ठं नानाविधंहितत् ॥ २२ ॥ पाकदे-
शाभिदेशेन चिक्कणंसर्वदोषहृत् ॥ पूगगुणाः ॥
स्थूलक्रमुकतांबूलंश्लेष्मलंकृमिवर्धनम् ॥ तदेवशु-
भ्रवर्णाढ्यं श्लेष्मघ्नंकृमिनाशनम् ॥ २३ ॥ तीक्ष्णो-
ष्णःपरिणामशीतलतरः कंडूप्रमेहापहोनानास्रावं-
जलाधिकः कृमिहरस्तृड्दाहपाकंजयेत् ॥ श्लेष्म-
घ्नश्चगलग्रहापहरणः संसुप्तजिह्वाग्रजित्कर्पूरःखलु
दिव्यसौरभगुणः पीताश्रयःस्फाटिकः ॥ २४ ॥
गलग्रहेसुप्तजिह्वेनानास्रावजलाधिके ॥ श्लेष्ममोहं
कृमीन्हंतिकर्पूरश्चाक्षुषःपरः ॥ २५ ॥ कर्पूरःकफ-
संभेदीतीक्ष्णोष्णःशीतलःपरः ॥ प्रमेहतृड्विदाहघ्नो
लक्ष्मीसौभाग्यवर्धनः ॥ २६ ॥ कस्तूरीसौरभाढ्या

हरती है मध्यमें करड़ी सुपारी श्रेष्ठ है और अनेक प्रकारकी है ॥ २२ ॥ पाकमें देशके अनुसार चीकनी सुपारी सब दोषोंको हरती है मोटी सुपारीसे युत किया तांबूल कफको करता है कृमियोंको बढाता है सुपेद वर्णवाली सुपारी कफको और कृमि रोगको नाशती है ॥ २३ ॥ कपूर तीक्ष्ण है गर्म है परिणाममें अत्यंत शीतल है खाज और प्रमेहको नाशता है अनेक स्राव और पानीको अधिक करता है कृमिरोगको हरता है तृषा दाह पाक इन्होंको जीतता है कफको हरता है गलग्रहको हरता है सुप्तजिह्वा रोगको जीतता है दिव्य सुगंधि गुणवाला है पीला यह स्फाटिक है ॥ २४ ॥ गलग्रह सुप्तजिह्वा अनेक स्राव और पानीकी अधिकतामें हित है कफ मोह कृमि रोग इन्होंको हरताहै नेत्रोंमें हित है ॥ २५ ॥ कपूर कफको भेदता है तीक्ष्ण है गर्म है बहुत शीतल है प्रमेह तृषा दाह इन्होंको नाशता है लक्ष्मी और सौभाग्यको बढाता है ॥ २६ ॥ कस्तूरी सुंगधवाली है चर्चरा रसवाली है भारी है खारी है कड़वी है

कटुकरसगुरुःक्षारतिक्तोष्णयुक्ता शीतारोगापहंत्री कफपवनहरापित्तकृच्छुक्रलाच ॥ संतप्तोल्लासहेतुर्वमथुविषहरागात्रदौर्गंध्यहंत्री क्षुण्णापित्तप्रकोपंप्रशमयतिभृशंहंतिशोषंविषंच ॥ २७ ॥ यागंधंकेतकीनांवहतिभृशतरंवर्णतः पिंगलाभास्वादेतिक्ता कटूष्णालघुपरितुलितामर्दितांचैवसास्यात् ॥ दग्धा नोयातिभूतिंचिमिचिमिकुरुनेचर्मगंधंहुतांतेसाशुद्धा शोभनीया मृगवरतनुजा राजयोग्याप्रदिष्टा ॥ ॥ २८ ॥ करतलजलमध्येस्थापनीयामहद्भिः पुनरपितदवश्यंचिंतनीयामुहूर्तम् ॥ यदिभवतिचरक्तं तज्जलंपीतवर्णं नभवतिमृगनाभिः कृत्रिमोयंवि-

गर्म है शीतके रोगको नाशती है कफ वातको हरती है पित्त और वीर्यको करती है गर्माईका हेतु है छर्दि और विषको हरती है शरीरके दुर्गंधपनाको हरती है पित्तके कोपको शांत करती है शोष और विषको अत्यंत नाशती है ॥ २७ ॥ जो केतकीके गंधको अत्यंत प्राप्त होती है वर्णमें पिंगलकांतिवाली है स्वादमें कड़वी है चर्चरा है हलकी है मर्दित की गंधको देती है जलानेमें राखको प्राप्त नहीं होती चिमिचिमि करती है जलनेमें चाम सरीखा गंध देती है ऐसी कस्तूरी शुद्ध और शोभनके योग्य है यह उत्तम राजोंके योग्य कही है ॥ २८ ॥ बडे पुरुषोंनें हाथके तलुआमें स्थित किया पानीमें स्थापन करनी योग्य है फिरभी वह निश्चय दो घड़ीतक चिंतवन करनी योग्य है जो वह पानी लाल और पीला वर्णवाला हो तब वह कस्तूरी नहीं जाननी किंतु

कारः॥२९॥चंदनंरक्तपित्तघ्नंदाहमूर्च्छातिसारनुत् ॥ शीतलंश्लेष्मलंहृद्यंकिंचिद्वातप्रकोपनम्॥३०॥पित्तास्रंहरतेसदाहपवनंव्यापादयेत्सर्वदामूर्च्छामोहतृषास्यशोषशमनो दुर्गंधिनिर्णाशकः ॥ कंडूकुष्ठभगंदरस्यशमनः पूर्तींछिनत्तिध्रुवंमेहंकृच्छ्रमतीवदुर्धरतरं निर्णाशयेद्वैहठात् ॥ ३१ ॥ शीतंपित्तविनाशनं समधुरंकिंचित्सतिक्तंतथा कंडूशोषविषापहं कृमिहरं सौभाग्यकांतिप्रदम् ॥ सौगंध्यंकुरुतेकिमप्यभिनवंगात्रेषुपुष्टिप्रदं संतोषंविदधातिचेतसिपरंस्निग्धंचकृष्णागुरु ॥ ३२ ॥ स्निग्धच्छायोष्णतीक्ष्णंकटुसुरभिगुणंकुंकुमंवातरक्तंरक्तादीनूर्ध्वगात्रेप्रबलबहुरुजोनाशयेज्जाड्यहारी ॥ त्वग्जाकंडूतिपामामुख

कृत्रिम कस्तूरी है ॥ २९ ॥ चंदन रक्तपित्तको नाशता है दाह मूर्छा और अतिसारको दूर करता है शीतल है कफको करता है सुंदर है कछुक वातको कोपता है ॥ ३० ॥ पित्तरक्तको हरता है दाह वात मूर्छा मोह तृषा मुखशोष इन्होंको शांत करता है दुर्गंधिको नाशता है खाज कुष्ठ भगंदर इन्होको शांत करता है दुर्गंधको काटता है प्रमेह और अत्यंत कष्टसाध्य मूत्रकृच्छ्रको हठसे नाशता है ॥ ३१ ॥ काला अगर शीतल है पित्तको नाशता है मीठा है कछुक कड़वा है खाज शोष विष कृमि इन्होंको हरता है सौभाग्य और कांतिको देता है ॥ नया काला अगर सुगंधपनाको करता है अंगोंमें पुष्टि देता है चित्तमें संतोषको करता है॥३२॥और चीकेकेसर चीकनाहै गर्म है तीक्ष्ण है चर्चरा है सुगंधित गुणोंवाला है वात रक्त शरीरके ऊपरले भागमें स्थित हुआ रक्त आदि बहुत पीडाको नाशता है जडपनाको हरता है त्वचा रोग खाज

विषमभवान्ध्वंसयत्युग्ररोगान्सौवर्णींकांतिमंगे वित्त
रतिसततंभाग्यसौभाग्ययोगान् ॥ ३३ ॥ केसर-
कुंकुममत्रपवित्रंमर्दनचारुवपुः कुरुतेच ॥ सौरभ-
देहकरंचसुकांतं पुण्यवधूतिलकेषुचशस्तम् ॥३४॥
ऋतुषुऋतुषुयोज्यंचंदनं कुंकुमंवामृगमदघनलेपः
कार्यतेसर्वदैव ॥ सुरभिकुसुमदामस्फारकर्पूरचूर्णो
विमलधवलवासंसर्वकालोपयोज्यम् ॥ ३५ ॥ जीर्य-
त्यन्नंसुखंभुक्तमेकवारंयदृच्छया ॥ द्विकालमपिभुं
जीतसमाग्निस्त्वर्धमात्रया ॥ ३६ ॥ कठिनंदुर्जरं
यच्चयच्चदाहकरंभवेत् ॥ तत्सर्वंनिशिवर्ज्यंस्याद्भव्यंल
घुचशीलयेत् ॥ ३७॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेण
कृतेअनुलेपनवर्गः ॥ अथातोवस्त्रगुणाःकथ्यंते ॥

रोग पाम मुखरोग विषम रोग इन्होंको नाशता है अंगमें सोना सरीखा वर्णको देता है भाग्य और सौभाग्यके योगोंको निरंतर देता है ॥ ३३ ॥ केसर पवित्र है मर्दनसे शरीरको सुंदर करता है शरीरको प्रकाशित और सुगंधको देता है पवित्र वधूओंके तिलकोंमें उत्तम है ॥ ३४ ॥ चंदन अथवा केसर ऋतु ऋतुके योग्य योजित करना कस्तूरीका करड़ा लेप सब कालमेंही करना सुगंधित फूल निर्मल और सुपेद कपडा सब काल धारण करना ॥ ३५ ॥ एक वार सुखसे भोजन किया अन्न सुख पूर्वक जरता है समान अग्निवाला मनुष्य आधी मात्रासे दो काल भी भोजन करै ॥ ३६ ॥ कठोर दुर्जर और दाह कारक ऐसा भोजन रात्रिमें वर्जित करना और हलका भोजनसेवना ॥ ३७ ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें अनुलेपनवर्ग समाप्त हुआ ॥ अब

वस्त्राणामुपभोगोयमधुनापरिकीर्त्यते॥ अश्विनीवस्त्र-
दाप्रोक्ताभरणीधनवर्धनी॥ १॥पुनर्वसौवसुप्राप्तिःपुष्ये
सौख्यंप्रवर्तते॥उत्तरायांयशोलाभोहस्तेसिद्धिस्तुक-
र्मणाम् ॥ २ ॥ चित्रायांशुभसंप्राप्तिः स्वात्यांसौभा-
ग्यसंपदः ॥ विशाखायांजनेप्रीतिर्मैत्रेमित्रसमागमः
॥ ३ ॥ पुष्टिःस्यादुत्तराषाढेधनिष्ठाधान्यपूरणी ॥
उत्तरायांशुभप्राप्तीरेवतीत्वाभिवृद्धिकृत् ॥ ४ ॥
एवमृक्षगुणाःप्रोक्तानवीनांबरधारणे ॥ गृहोत्सवेवि-
विवाहेचपरभूपालसंगमे ॥ ५ ॥ उत्सवेषुचसर्वेषु
गीतनृत्यविनोदने ॥ देवकर्मणियज्ञेचतथायुद्धम-
होत्सवे ॥ ६ ॥ जयेनवांबरंधार्यंनदुष्यतिकदाचन ॥
कृतानुलेपोराजेंद्रो वस्त्रभांडाधिकारिणः ॥ ७ ॥

वस्त्रके गुण कहते है–वस्त्रोंको धारण करना अब कहते है अश्विनी वस्त्र देनेंवाली कही है भरणी धनको बढाती है पुनर्वसुमें धनकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ पुष्यमें सुख बढता है उत्तरा फाल्गुनीमें यशकी प्राप्ति होती है हस्तमें कार्योंकी सिद्धि होती है ॥ २ ॥ चित्रामें शुभकी प्राप्ति होती है स्वातीमें सौभाग्य और संपद् मिलती है विशाखामें मनुष्योंमें प्रीति होती है अनुराधामे मित्रसे समागम होताहै ॥३॥ उत्तराषाढमें पुष्टि होती है धनिष्ठामें अन्नकी प्राप्ति होती है उत्तराभाद्रपदमें शुभकी प्राप्ति होती है रेवती सब तर्फसे वृद्धि देती है ॥ ४ ॥ नया वस्त्र धारनेमें नक्षत्रोंके गुण ये कहते है घरका उत्सव विवाह उत्तम राजाका समागम ॥ ५ ॥ सब प्रकारके उत्सव गाना नाचना आनंद देवकर्म यज्ञ युद्धका महोत्सव ॥ ६ ॥ और जय इन्होंमें नया वस्त्र धारन करना कभीभी दूषित नहीं है किया

आनेतुमादिशेद्वस्त्राण्युत्तमानिबहूनिच ॥ पंचपट्टन-जातानि दोषादिशमनानिच ॥ ८ ॥ चीनजातानि दिव्यानिमहाचीनभवानिच ॥ कलिंगदेशजातानि पीतानिहरितानिच ॥९॥ नीलानिचतथाप्रांतेपल्लवे-षुसितानिच ॥एतदव्यग्रचित्तानिशितिरेखामयानिच ॥ १० ॥ नानावर्णसुरेखाणिपंचवर्णाचलानिच ॥ उत्तरीयाभिरेखाणिमध्येसूक्ष्मसुरेखया ॥ ११ ॥ अंगुल्यायुतरेखाणि सूक्ष्मरेखाणिमध्यतः ॥ अंगु-लीद्वयरेखाणिवृत्तरेखाणिकुत्रचित् ॥ १२ ॥ चतुः कर्णसुरेखाणिक्कचिद्बिंदुयुतानिच ॥ सुश्लक्ष्णानि सुसूक्ष्माणिघनानिविरलानिच ॥ १३ ॥ बहूनिबहु मूल्यानिगुरूणिसुदृढानिच ॥ प्रवालाधिकरंगाणि

हुआ अनुलेपवाला राजेंद्र वस्त्रभांडके अधिकारीको ॥ ७ ॥ उत्तम और बहुतसे वस्त्र लानेंकी आज्ञा करै पंचपट्टनमें बनाये दोष आदिको शांत करनेवाले ॥ ८ ॥ चीनमें रचे हुये दिव्य महाचीनमें रचेहुये कलिंग देशमें रचेहुये पीले और हरे ॥९॥ प्रांतमें नीले और पल्लवोंमें सुपेद ऐसे अविनाशी रूप रचे हुये काली रेखाओंवाले ॥ १० ॥ अनेक वर्ण वाली सुंदर रेखाओंवाले पांचवर्णोंसे अचल हुये उत्तरीय वस्त्रके सब तर्फ रेखावाले मध्यमें सूक्ष्म सुन्दर रेखा करकै ॥ ११ ॥ अंगुलीसे युत हुई रेखा करकै मध्यमें सूक्ष्म रेखावाले दो अंगुलीयों सरीखी रेखावाले कहींक गोल रेखावाले ॥ १२ ॥ चार कानरूपी सुन्दर रेखाओंवाले कहींक बिंदुओंसे युत सुन्दर श्लक्ष्ण सुंदर मिहीन घनरूप और विरल ॥ १३ ॥ बहुतसे बहुत मोल

रंजितानिचयंत्रकैः ॥ १४ ॥ तरुबंधसुरक्तानिना-
नावर्णाकृतीनिच ॥ मंजिष्ठारागरक्तानि लाक्षाराग-
युतानिच ॥ १५ ॥ कुसुंभरसलिप्तानिसिंदूरार्कयु-
तानिच ॥ हरिद्रारागमिश्राणिनीलीरागोद्भवानिच
॥ १६ ॥ अभयारसकृष्णानिपलाशहरितानिच ॥
चातकपुच्छवर्णानिहंसतुंडमयानिच ॥ १७ ॥
शुकपिच्छलवर्णानिकेकिकंठच्छवीनिच ॥ ची-
रस्फटिकसिल्हाकप्रच्छदैश्चयुतानिच ॥ १८ ॥
पट्टिकाचपुटीपट्टपट्टाश्चविविधाः शुभाः ॥ अं-
गिकाचतथोष्णीषं टोपिकाविविधाकृतिः ॥ १९ ॥
प्रचाराविविधाकारादर्शितावस्त्रधारिभिः ॥ विचि-
त्रवर्णवस्त्राणिपट्टसूत्रमयानिच ॥ २० ॥

वाले भारे सुंदर दृढरूप मूंगाके समान अधिक रंगों वाले यंत्रोंसे रंगे हुये ॥ १४ ॥ वृक्षोंके बंधसे रंगे हुये अनेक प्रकारका वर्ण और आकृति-वाले मंजीठका रंगसे रंगे हुये लाखका रंगसे रंगे हुये ॥ १५ ॥ कसूंभा-का रससे लिपे हुये सिंदूरका अर्कसे युत हुये हलदीका रंगसे मिले हुये नीलका रंगसे उपजे हुये ॥ १६ ॥ हरड़ैका रससे काले हुये पलाश अर्थात् ढाकके समान हरे पपैयाकी पुच्छके समान वर्णवाले हंसका तुंड सरीखे ॥ १७ ॥ तोताकी तरह सब जगह पिच्छल हुये मोरका कंठके समान कांतिवाले चीर स्फटिक और सिल्हाक इन्होंके वस्त्रोंसे युत हुये ऐसे वस्त्र होने चाहिये ॥ १८ ॥ पट्टिका चपुटी पट्ट इन्होंके बने अनेक प्रकारके शुभ वस्त्र हों अंगरखा पगड़ी अनेक प्रकार आकृ-तियोंवाली टोपी ये सब होने चाहिये ॥ १९ ॥ वस्त्रोंको धारन करनें-वालोंनें दिखाये अनेक प्रकारके आकारोंवाले प्रचार होने चाहिये, पाटका-

वसंतेबिभृयाद्राजाक्षौमकार्पासजानिच ॥ सुश्लक्ष्णानिमनोज्ञानिसूक्ष्माणिविरलानिच ॥ २१ ॥ निदाघेधारयेद्राजासितानिवसनानिच ॥ रोमजानिसुसूक्ष्माणिश्लक्ष्णानिविविधानिच ॥ २२ ॥ मंजिष्ठानिचरक्तानिप्रावृट्कालेविधारयेत् ॥ पाटलान्याक्षिरोमाणिधूम्राणिमधुराणिच ॥ २३ ॥ शरत्कालेच सूक्ष्माणिवसनानिचधारयेत् ॥ कौसुंभानिसुभव्यानिलाक्षकाणिघनानिच ॥ २४ ॥ अंगिकाःपट्टिका जाताः शीतकालेभिधन्नृपः ॥ ऋतूनामनुसारेण शृंगारस्यानुरागतः ॥ २५ ॥ एवंयद्बिभृयाद्वस्त्रं वस्त्रभोगःप्रकीर्तितः ॥ श्वेतंदुकूलमम्लानमोजोवीर्यविवर्धनम् ॥ २६ ॥ कफकृत्पित्तशमनंश्रमतृड्दाहनाशनम् ॥ मांजिष्ठंदाहकात्युष्णंकफवातानु-

सूतसे बने विचित्र वर्णके वस्त्र होने चाहिये॥२०॥वसंत ऋतुमें राजा रेशमी और रूईके वस्त्रोंको धारै सुंदर मनोहर मिहीन निर्मल ॥२१॥और सुपेद ऐसे वस्त्रोंको राजा ग्रीष्म ऋतुमें धारै– रोमोंसे बने सुन्दर सूक्ष्म मिले हुये घन ॥ २२ ॥ मंजीठसे रंगे और लाल रंगवाले ऐसे वस्त्रोंको वर्षाकालमें धारै सुपेद आंखके रोमोंसे बने धूम्रवर्णवाले और मधुर ऐसे ॥ २३ ॥ वस्त्रोंको शरदृऋतुमें धारै कसूंभासे रंगे सुन्दर मंगलीक लाखसे रंगे हुये घन रूप॥२४॥ ऐसे अंगरखा आदि और पट्टिकासे बने वस्त्रोंको राजा शीतकालमें धारै ऋतुओंके अनुसार और शृंगारकी प्रीतिसे ॥ २५ ॥ इस प्रकार जो वस्त्र धारै वह वस्त्रभोग कहा है– सुपेद वस्त्र मनको प्रसन्न करता है बल और वीर्य बढाता है ॥ २६ ॥ कफको करता है पित्तको शांत करता है परिश्रम तृषा और दाहको

लोमनम्॥पट्टसूत्रमयंवस्त्रंत्रिदोषशमनंविदुः ॥२७॥
सुश्वेतंचदुकूलमत्रबलकृत्पित्तप्रशांतिप्रदमोजोवीर्य-
विवर्द्धनंरतिकरंममीतिदाहच्छिदम् ॥ तृष्णाशोषवि-
भेदनंधृतिकरंकांतिप्रदंश्लेष्मलं क्षौमंशुक्लमतीवहृद्य-
ममलंपित्तामयध्वंसकम् ॥ २८ ॥ मांजिष्ठं
चविदाहितत्कफहरंपथ्यं च वातामयध्वंसेचारुतरं
सुखंचकुरुतेश्लेष्मप्रकोपंजयेत् ॥ पुष्टिंशीतविघा-
तकंमलहरंसश्लेष्मवातापहं विद्यादेवगुणंमहामयहरं
मांजिष्ठवस्त्रंसदा ॥ २९ ॥ पट्टसूत्रमयन्त्रिदोषशमनं
वातामयध्वंसनंरक्तासृग्विनिहंतिपित्तपवनंव्यापाद-
येत्तत्सदा ॥ मेहंकृच्छ्रमदात्ययंचगरजिद्वाता-
नुलोमंसदासर्वश्रेष्ठतमंचपथ्यसततंश्रीरामयोग्यंमह-

नाशता है मंजीठसे रंगा वस्त्र दाहको करता है गर्म है कफ वातको अनुकूल करता है ॥ पाटके सूतसे बना वस्त्र त्रिदोषको शांत करनेवाला कहा है ॥ २७ ॥ सुन्दर सुपेद वस्त्र बलको करता है पित्तको शांत करता है पराक्रम और वीर्यको बढाता है रतिको करता है मर्मोंके अत्यन्त दाहको नाशता है तृषा और शोषको नाशता है धैर्यको करता है कांतिको देता है कफवाला है सुपेद रेशमी वस्त्र सुन्दर और मलसे रहित हो वह पित्तके रोगको नाशता है ॥ २८ ॥ मंजीठसे रंगा वस्त्र विशेष दाहको करता है कफको हरता है वातके रोगमें पथ्य है क्षयमें अत्यन्त सुन्दर है सुखको करता है कफके कोपको जीतता है पुष्टिको देता है शीतको नाशता है मलको हरता है कफ वातको नाशता है बडारोगको नाशता है ऐसे गुणोंवाला जानना ॥ २९ ॥ सूतका वस्त्र त्रिदोषको शांत करता है वातरोगको नाशता है रक्तके रोगको नाशता

त् ॥ ३० ॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृते वस्त्राधिकारः ॥ ॥ अथमुखवासः ॥ लवंगजातीमृगजाशशीनांभागद्वयंजातिफलंत्रयञ्च ॥ वल्लद्वयंत्वक्चतमालपत्रंकंकोलमुस्ताइहतुर्यवल्लाः॥ खैरस्यसारस्यतथाष्टभागंभागद्वयंसाधुसुचंदनस्य ॥१॥कृष्णागुरुश्चारुतथैकभागएलाचवल्लद्वयमुक्तचूर्णम् ॥ षड्भागकंकुंकुमकेसराणामालोडयेत्पुष्परसेनयुक्तम् ॥ ॥ २ ॥ मासप्रयोगेणसशुष्ककासंवटीचबद्धाच्चणकप्रमाणा ॥ एषास्यवैरस्यहरातिपथ्याहंत्यन्नजीर्णजठरेषुजातम् ॥ वातामयंहंतिसदानृपाणांतांबूलरागंकुरुतेऽतिरम्यम् ॥ ३ ॥ खिरगुटिका ॥ एलागद्याणकार्द्धात्वगपिद्विगुणितासार्द्धगद्याप्ययुक्तायो-

है पित्तरोग वातरोग प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मदात्यय इन्होंको नाशता है कृत्रिम विषको जीतता है सब काल वातमें अनुकूल है सबोंमें उत्तम श्रेष्ठ है निरंतर पथ्य है श्रीरामके योग्य है बडा है ॥ ३० ॥ यहां श्रीसुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें वस्त्राधिकार समाप्त हुआ ॥ लौंग जावित्री कस्तूरी कपूर ये २ भाग जायफल ३ भाग दालचीनी और तेजपत्ता चार चार रत्ती कंकोल और नागरमोथा ये आठ आठ रत्ती खैरसार ८ भाग सुन्दर चन्दन २ भाग ॥ १ ॥ सुन्दर कालाअगर १ भाग इलायची ४ रत्ती केशर छः भाग इन्होंको फूलोंके रससे आलोडित करै ॥ २ ॥ चनाके समान गोली बांध महीनाभर सेवै सूकी खांसीको नांशती है यह विरसपनाको हरती है अत्यन्त पथ्य है भोजनको जराती है पेटमें उपजा वातरोग इन्होंको नाशती है राजाओंको तांबूलका राजके समान अत्यन्त रमण करता है ॥ ३ ॥ इलायची

गाजातीफलानांलकुचदलपृथग्जातिपत्रीदलंच ॥
शाणौद्वौनागपुष्पाफलजनितामितिश्चंदनाद्द्वौचकर्षौ
तिक्तामुष्टिश्चकार्या द्विपलमितियुते चंद्रकस्तूरि-
केच ॥ ४ ॥ द्वौभागौभागमेकंत्विवतिसकलमिदं
चूर्णितंवस्त्रपूतंराज्ञाश्चित्तायययोग्यंसकलसुखकरंसर्वरो-
गघ्नमेतत् ॥ आस्येसंधार्ययत्नात्सकलमुखगदान्
हंतिनित्यंनृपाणां तांबूलस्यैवरागंजनयतिच शुभं
पक्वबिंबाधरोष्ठम् ॥ ५ ॥ मुखवासः ॥ मांसी
शैलेयकंस्यात्क्रमुकफलयुतं क्वाथतांबूलपत्रंजाती
पत्र्यासमांशंकुसुममलयजंकोष्ठकंकोलकंच॥ द्वौभा-
गौसैलुवालुंसमघृतमखरंचूर्णयित्वासमस्तंवासं द-
त्त्वानुपुष्पैःसुरभिपरिमलंराजयोग्यंचवासम् ॥ ६ ॥
एलालवंगफलजातिसकोलकंचकुष्ठं च खादिरसमांश-

आधा भाग दालचीनी १ भाग जायफल १ भाग लीचूके पत्ते जावि-
त्रीके पत्ते ये आठ आठ मासे नागकेसर ४ तोले दोनों चन्दन २ तोले
कुटकी ४ तोले कपूर और कस्तूरी ८ तोले ॥ ४ ॥ दो भाग अथवा
एक भाग इस सम्पूर्ण चूर्णको कपडासे छान वर्तैं राजा लोगोंके योग्य
है सब सुखको करता है सब रोगोंको नाशता है यतनसे राजाओंको
मुखमें नित्य धारना मुखके सब रोगोंको नाशता है तांबूलका रंगकी
तरह पका हुआ बिंबीफलके समान अधर होठको करता है ॥ ५ ॥
जटा मांसी शिलाजीत सुपारी नागरपान जावित्री चमेलीके फूल मल-
यागिरचन्दन कूट कंकोल ये सव समान भाग एलवा २ भाग इन्होंमें
बरावर भाग घी मिला कोमल चूर्णकर सुगंधित फूलोंका वास देनेसे
राजाओंके योग्य मुखवास बनता है ॥ ६ ॥ इलायची लौंग जायफल

सचंदनंच ॥ मुस्तासवालककचोरकपूगचूर्णं मांस्ये
कभागार्द्धकपत्रकंच॥सर्वंविचूर्ण्यवसनेनविगालितंच
राज्ञश्चयोग्यमुखवासमुखामयघ्नः ॥ ७ ॥ एलाक-
चूरकंकुष्ठंनागकेसरचंदनम् ॥ खादिरंयुगचूर्णंच
मुखवासोविधीयते ॥ ८ ॥ कर्पूरचूर्णस्यचभाग-
मेकं कस्तूरिभागार्द्धकचोरभागम् ॥ भागद्वयं
स्यात्क्रमुकस्यचूर्णंखैरस्यसारस्यपलद्वयंच ॥ ९ ॥
गद्याणमेकंचतमालपत्रंलवंगजातीफलभागमेकम् ॥
श्रीखंडचूर्णस्यचभागमेकमेकीकृतंसर्वमतीवहृद्यम्
॥ १० ॥ चूर्णंचभांडेविनिहत्यसर्ववासोऽपिदद्या-
त्सितपुष्करेण ॥ जात्याश्चपुष्पस्यचकेतकीनां
भूयोऽतियोग्योमुखवास एषः ॥ ११ ॥ सुषेण-
देवेनकृतःसमस्तोमुखामयघ्नोगदनाशनश्च ॥ इ-

कंकोल कूट खैर सार चन्दन नागरमोथा नेत्रवाला कचूर सुपारी ये समान भाग ले जटामांसी १ भाग तेजपत्ता आधाभाग सबोंका चूर्णकर कपडासे छानै यह मुखवास राजाओंके योग्य है मुखके रोगको नाशता है ॥७॥ इलायची कचूर मुर्दाशिंग नागकेसर चन्दन ये समान भाग और कत्था ४ भाग इन्होंका मुखवास बनता है ॥ ८ ॥ कपूरका चूर्ण १ भाग कस्तूरी १ भाग कचूर आधा भाग सुपारीका चूर्ण २ भाग खैरसार ८ तोले ॥९॥ तेजपत्ता १ भाग लौंग और जायफल १ भाग चंदनका चूर्ण १ भाग इन सबोंको मिला यह चूर्ण अत्यंत सुंदर है ॥ १० ॥ संपूर्ण चूर्णको पात्रमें घाल सुपेद-कमलके फूलोंसे वास देना चमेलीके फूल और केतकीके फूलोंका फिर वास देना यह मुखवास राजाओंके योग्य है ॥ ११ ॥ सुषेण देवनें मुखरोगनाशक और रोग नाशक मुखवास किया ॥ यहां श्रीसुषेणका

त्यायुर्वेदमहोदधौ श्रीसुषेणकृतेमुखवासाधिकारः ॥ अथधूपाधिकारः ॥ मांसीचंदनशैलजेनसहितं पथ्यावचापत्रकंकोष्ठं सर्ज्जरसान्वितंचतगरं लाक्षा-गुडंपत्रकम् ॥ कंकोलं घनचोरकंचसहितं ए-लासवालानखंधूपोयंचसुरांगनाभिकथितोनाम्नाम-दोविह्वलः ॥ १ ॥ षड्भागकोष्ठंद्विगुणंगुडस्य लाक्षात्रयं पंचनखस्यभागौ ॥ हरीतकीसर्ज्जरसं चमांसीभागैकमेकंहिसशैलजस्य ॥ घनस्यचत्वा-रिपुरस्यचैकं धूपोदशांगः कथितोनृपाणाम् ॥ २ ॥ षट्कोष्ठस्यनखस्यपंचचमतामुस्ताचलाक्षोद्भवंभा-गैकंत्वभयागुडद्विदशकंरालस्यभागैककम् ॥ देव-द्रोर्वसुसंख्ययासकलकंशैलेयकंचात्रिभिर्धूपःस्यात्सुर-दुर्लभोरतिकरोदिव्यांगनादर्पहा॥३॥ऐंद्रंयवंवचाको-

किया आयुर्वेदमहोदधिमें मुखवासाधिकार समाप्त हुआ ॥ अब धूपा-धिकार है—जटामासी चंदन शिलाजीत अथवा लोबान हरडे दालचीनी तेजपात कूट राल तगर लाख गुड़ तालीशपत्ता नागरमोथा गठौना इला-यची नेत्रवाला नख इन्होंका धूप बनावै; यह धूप मदविह्वल नामसे विख्यात देवतोंकी स्त्रियोंनें रचा है ॥ १ ॥ कूठ ६ भाग गुड़ १२ भाग लाख ३ भाग नख ५ भाग हरडै राल जटामांसी लोबान ये एक भाग नागरमोथा ४ भाग गूगल १ भाग यह दशांग धूप राजाओंके लियें कहा है ॥ २ ॥ कूट ६ भाग नख ५ भाग नागरमोथ और लाख १ भाग हरडै और गुड़ १२ भाग राल १ भाग देवदारु १६ भाग लोबान ३ भाग इन्होंका धूप देवतोंको दुर्लभ है रतिको करता है देवतोंकी स्त्रियोंके गर्वको हरता है ॥ ३ ॥ इंद्रजव वच कूठ तगर सुपेद

ष्ठंतगरंश्वेतसर्षपः॥ एलासर्ज्जरसंधूपंनागकेसरामिश्रि-
तम्॥४॥ विक्रीयंतेचपण्यानांसर्वेवाणिज्यकर्मिणः ॥
वंध्यानार्याभवेत्पुत्रोदुर्भगासुभगाभवेत् ॥ ५ ॥ इ-
त्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणकृतेधूपाधिकारः ॥ ॥
अथवाजीकरणाधिकारः ॥ ॥ यामादूर्द्ध्वंनिशायाश्च
पीनोन्नतकुचाःस्त्रियः ॥ संसेवेत्कामतः कामीतृप्त्या
वाजीकृतः सदा ॥ १ ॥ पुष्टधातुःसमाग्निश्च निश्चि-
तोनीरुजः सुखी ॥ नित्यंसेवेतयुवतींयथाशास्त्रं
तदोपरि ॥ २ ॥ अहोरात्रात्परंकेचित्षडहादपरे
परे ॥ मासेनयातिशुक्रत्वमन्नंपाकक्रमादिति ॥ ३ ॥
वदंतिकेचिन्मुनयः कामशास्त्रविचक्षणाः॥ वृष्यान्न-

सिरसम इलायची राल नागकेसर इन्होंके धूपको ॥ ४ ॥ बाजारमें सब विजय कर्म्मवाले वेचते है इसके प्रभावसे वंध्यानारीके पुत्र होता है दुष्ट भाग्यवाली स्त्री सुंदर भाग्यवाली हो जाती है ॥ ५ ॥ यहां श्री सुषेणका किया आयुर्वेदमहोदधिमें धूपाधिकार समाप्त हुआ ॥ अब वाजीकरण अधिकार कहते हैं—एक पहर रात्रि व्यतीत हुआ पीछे पुष्ट और ऊंची चूंचियोंवाली स्त्रियोंको कामदेववाला सब काल वाजीकरण पदार्थोंसे तृप्त हुआ मनुष्य इच्छासे सम्यक् प्रकार सेवै ॥ १ ॥ पुष्ट हुये धातुवोंवाला सम अग्निवाला चिंतासे रहित रोगसे रहित सुखी ऐसा पुरुष शास्त्रके अनुसार जवान स्त्रीको नित्य सेवै ॥ २ ॥ कितनेक वैद्य कहते हैं एकदिन रात्रिसे परे स्त्रीको सेवै कितनेक वैद्य कहते हैं छः दिनोंमें स्त्रीको सेवै क्योंकि पाकके क्रमसे अन्नका १ महीनामें वीर्य होता है ॥ ३ ॥ कामशास्त्रमें चतुर कितनेक वैद्य कहते हैं कि पुष्टि

पानयोगेनसद्यः शुक्रंप्रवर्द्धते ॥ ४ ॥ विचार्यैवंनृपः
सम्यग्विचार्यादौचरेतसः॥ कुर्वीतिरागंनारीणामन्यथा
रोगसंभवः ॥ ५ ॥ निजप्रस्यूतिमात्रंतुनराणांशुक्र-
मुच्यते ॥ कदाचित्क्षीयतेतत्रकदाचित्प्रतिवर्द्धते ॥
॥६॥द्वादशांगेस्थितंकेचित्सर्वांगेष्वितिकेचन ॥ म-
न्यंतेकेचिदाचार्याबस्तिदक्षिणपार्श्वतः ॥७॥ अत्य-
म्लकटुरूक्षोष्णविदाहिद्रव्यसेवया ॥ स्त्रीणांचातिप्र-
संगेनह्यप्रसंगेनवापुनः ॥८॥ अजीर्णाहारवैषम्यात्प्र-
कोपाद्वातपित्तयोः ॥ क्षीणेकफेचमंदाग्नौचिंताशोक-
विषादिभिः ॥ ९ ॥ विषरोगज्वराच्चैवह्यभिघाता-
त्क्षयादपि ॥ शुक्रंयातिक्षयंनॄणांतेनधातुक्षयोभवेत्
॥ १० ॥ सर्वेषामेवधातूनांप्रधानंशुक्रमुच्यते ॥

और वीर्यकारक अन्नपानके योगसे शीघ्रही वीर्य बढता है ॥ ४ ॥ आ-
दिमें राजा वीर्यको अच्छीतरह विचार कर स्त्रियोंसे प्रीति करते हैं
विपरीत करनेमें रोग उपजता है ॥ ५ ॥ मनुष्योंका वीर्य आप
झिरना मात्र कहाता है कभीक क्षयको प्राप्त होता है कि और
कभीक बढता है ॥ ६ ॥ कितनेंक वैद्य कहते हैं कि वीर्य बारहों
अंगोंमें स्थित है और कितनेंक कहते हैं कि सब अंगोंमें वीर्य स्थित
है कितनेंक वैद्य मानते हैं कि वीर्य दाहिना पसवाड़ासे झिरता
है ॥ ७ ॥ अत्यंत खट्टा चर्चरा रूषा गर्भ और विशेष दाहकारक ऐसे
द्रव्योंको सेवनेंसे स्त्रियोंके अत्यंत प्रसंगसे अथवा फिर नहीं प्रसंगसे
॥ ८ ॥ अजीर्ण भोजनका विषमपनासे वात पित्तके कोपसे कफको
क्षीण होनेमें मंदाग्निमें चिंता शोक और बिष आदिसे ॥ ९ ॥ विष रोग
और ज्वरसे अभिघातसे और क्षयसे पुरुषोंका वीर्य क्षय होता है उसक-
रकै धातुओंका क्षय होता है ॥ १० ॥ सबधातुओंमें प्रधान शुक्र

तस्मिन्क्षीणेक्षयंयांतिमांसरक्तरसादयः ॥ ११ ॥ तेनांगंशुष्यतेनॄणां बलक्षीणाश्चमानवाः ॥ नभवेत्कर्मसामर्थ्यंस्त्रीषुहर्षोनजायते ॥ १२ ॥ शीतंसंतर्प्पणंहृद्यंसेवयित्वापुनः पुनः ॥ शुक्रप्रवृत्तिःसंभोगेमेहनंचदृढंभवेत् ॥१३॥ वायौप्रवर्त्तितेचैवगात्रभंगं शिरोव्यथा ॥ शून्यत्वंचैवमनसोविषादीक्रोधएवच॥ संतापः परमंशोषंतृषास्वप्नविपर्ययः ॥ १४ ॥ तत्र शीतंगुरुस्निग्धंमधुरं बृंहणंतथा ॥ शीतंसंतर्प्पणं हृद्यंसेव्यमन्नादिकंनरैः॥मनसोहर्षणंयद्यत्तत्सर्वंवृष्यमुच्यते ॥ १५ ॥ ॥ इतिवाजीकरणाध्यायः ॥ ॥ अथयान्युक्तानिचौषधानिवृष्याणि ॥ सेव्यानितानिकुर्य्याद्विशेषतः पुरुषोजानीयात् ॥ १ ॥

धातु है उसको क्षीण होनेमें मांस रक्त और रस आदि सब धातु क्षीण होते हैं ॥ ११ ॥ तिस करकै मनुष्योंका अंग क्षीण होजाता है मनुष्य बलसे क्षीण होजातेहै कार्य करनेमें सामर्थ्य नहीं रहता स्त्रियोंमें आनंद नहीं होता है ॥ १२ ॥ शीतल तृप्तिकारक और सुंदर पदार्थको वारंवार सेवन कर वीर्यकी प्रकृतिके भोगसे लिंगभी दृढ होजाता है ॥ १३ ॥ वायु प्रवृत्त होनेमें अंग भंग शिरमें पीड़ा मनका शून्यपना विषाद क्रोध संताप बहुत शोष तृषा नीदका विपरीतपना ये होजाते हैं ॥ १४ ॥ तहां शीतल तृप्तिकारक और सुंदर ऐसा अन्न आदि मनुष्योंनें सेवित करना उचित है मनको जोजो आनंद देनेंवालाहो वह सब वृष्य अर्थात् वीर्यवर्द्धक कहाता है ॥ १५ ॥ यहां वाजीकरणाध्याय समाप्त हुआ ॥ जो औषध वीर्यवर्द्धक है वे सेवित करने उन्होंको विशेष कर पुरुष

सर्प्पिर्गुडैर्वाक्षयरोगयुक्तंरसायनंवाच्यवनाभिधानम्॥ कूष्मांडकंवान्यरसायनंवाकुर्याद्यदीच्छेच्चिरजीवितंतु ॥२॥माषक्काथोन्मिश्रितंगव्यदुग्धंगव्यंसर्पिःशर्कराचूर्णमिश्रं॥यामेयामेसप्तसप्तैववारान्स्त्रीव्यापारं याति चातिप्रमोदः ॥३॥ रक्ताश्वत्थत्वग्विपक्कंपयोवायष्टीचूर्णैर्मिश्रितंशर्कराढ्यम्॥पीत्वासद्यः सप्तवारान्व्रजेद्वानिर्वीर्योवैनिश्चयंस्तब्धमेढ्रः ॥४॥ संशोध्यमाषविदलादिघृतेनिवेश्यक्षीरेणपायसमिदंमहिषीभवेन ॥ सिद्धंघृतेनसहितंबहुशर्कराढ्यंसंभक्षयेन्निशितरांपरिहीनरेताः॥५॥नालिकेरनववारिभावितैर्माषचूर्णवटकैर्घृतप्लुतैः ॥भक्षयन्पिबतियोगवांपयोयात्यपूर्वमपियोषितांशतम् ॥ ६ ॥ धात्रीफलानांस्वरसेन

जानै ॥ १ ॥ क्षय रोगमें कहा घी गुड़ अथवा च्यवनका कहा रसायन कूष्मांडअवलेह अथवा अन्य रसायन इन्होंको करै जो बहुत कालपर्य्यंत जीवनेंकी इच्छा होतो ॥२॥ उडदोंके क्काथसे युतकिया गौका दूध तथा गौका घीमें युतकरी खांड इन्होंको पहर पहरमें सात सात बार लेवै इस करकै आनंदित हुआ पुरुष स्त्रियोंको प्रसन्न करता है ॥ ३ ॥ लाल पीपलकी छालसे पकाया दूध अथवा मुलहटीका चूर्ण और खांडसे युत किया दूधको पानकर तत्कालही वीर्यसे रहित हुआ पुरुष कठोर लिंगवाला होके स्त्रियोंको सातवार भोगसक्ता है ॥ ४ ॥ उडदोंकी दाल आदिको संशोधित कर घीमें पकाय भैंसके दूधसे खीर बनावै पीछेघी और खांड़ मिला रात्रिमें हीनवीर्यवाला पुरुष खावै ॥ ५ ॥ नया नारियलके रसमें उडदोंके चूर्णको भिगोय बडे बना घीसे लपेट खावै और गौवोंके दूधको पीवै वह १०० स्त्रियोंको भोग सक्ता ॥ ६ ॥ आंवलाके फलोंके स्वरसमें आंवलाके चूर्णको वारंवार भावित और वासि-

चूर्णमुहुर्मुहुर्भावितवासितंतत् ॥ घृतेनदुग्धेनसश-र्करेणापिबेत्सहस्रप्रमदाप्रभूतः ॥ ७ ॥ अश्वगंधा-बलानागतिलमाषगुडौयवाः ॥ बलंकुर्यात्पलंभुक्तं मत्तवारणचारणम् ॥ ८ ॥ कालिंदीसुफलोदरेवि-निहितंहेमंघनारोचनं कृष्णोन्मत्तकबीजतारसहितंशु-क्लंशरापुंखजम्॥ ईषत्सूतकमिश्रितंवटिकृतंवक्त्रांबुजे धारयेच्छुक्रस्तंभमिदं दधातिवनितामोहायपाशांकु-शः ॥ ९ ॥ गच्छेत्ततःकठिनपीनघनस्तनाढ्याः प्रौढाःस्त्रियोविविधकामकलास्वभिज्ञाः॥रेतोददात्य-तिरतिंलभतेसकामीदार्ढ्यंददातिनवमेहनमस्यपुंसः ॥१०॥ इक्षुरगोक्षुरमर्कटिबीजं मुशलिशतावरिशा-ल्मलिडीकम् ॥ महिषीपयसाचयुतंप्रपिबेद्यस्यगृ-हेप्रमदाशतमास्ति ॥ ११ ॥ शुद्धैर्निस्तुषमाषशुष्क

तकर घी दूध खांड इन्होंके साथ पीवै तो हजार स्त्रियोंको भोग सक्ता है ॥ ७ ॥ आस्कंद बला नागकेशर तिल उडद गुड और जव ये सब ४ तोले लेकर भक्षण करनेसे हाथीके समान बल देते हैं ॥ ८ ॥ कालिंदी फलके पेटमें अथवा बैंगनके पेटमें सोना नागरमोथा वंशलोचन कालाधतूराके बीज चांदी शरपुंखाका सुपेद फूल कछुक पारा ये सब घाल गोली बना मुखमें धारै यह वीर्यका स्तंभ करै और स्त्रियोंको मोहनेके लियें पाशांकुश है ॥ ९ ॥ पीछे कठोर और पुष्ट चूंचियोंवाली युवति अनेक प्रकारके कामकलाओंमें अभिज्ञ ऐसी स्त्रियोंको भोग सक्ता है वीर्य देता है वह कामी रतिको प्राप्त होता है इस पुरुषको लिंग दृढ और नया हो जाता है ॥ १० ॥ तालमखाना गोखरू कौंचके बीज मुशली शतावरी मोच रस इन्होंके चूर्णको भैंसका दूधमें मिला जिसके घरें १०० स्त्रियें हो वह पीवै ॥ ११ ॥ शुद्ध तुष रहित और

विदलैः श्रीनालिकेरांबुभिः क्लिन्नैर्गोपयसाततोघन-
तमैः पिष्टैः सितासंयुतैः ।। दत्त्वामोचरसंवरीरसयुतं
तत्पाणिनामर्दितंकृत्वावैवटिकांविपाच्यहविषासंभ-
क्षयेत्सर्पिषा ।। १२ ।। वृद्धोपिप्रमदाशतेनसहसाग-
च्छेद्युवेवातुरस्तृप्तिंगच्छतिनैवनापिलभतेलिंगं क्व-
चिन्मंदताम् ।।तस्यान्तस्यबलक्षयोऽपिनमहानुत्सा-
हभंगोभवेद्रेतोनष्टमपिप्रयातिचतथावृद्धिंबलंजायते
।। १३ ।। विदार्यामलकंचैवंयष्टीगोक्षुरकंतथा ।।
भूमिकूष्मांडकंमाषानिस्तुषाः सतिलायवाः ।।१४।।
गोधूमचूर्णंशृंगारीबीजंकूष्मांडकस्यच ।। मुशली-
शालिचूर्णंतुराजिगंधाचचंदनम् ।।१५।।प्रियालभल्ला-
तकयोर्बीजंद्राक्षासितोत्पलम्।।त्वक्क्षीरागरुकर्पूरंस-
मभागंतुकारयेत् ।। १६ ।। सितोपलासमंचूर्णंभक्षये-

सूकी ऐसी उड़दकी दालको नारियलका पानीसे गीलीकर पीठी बना गौका दूधमें मिला पीछे मिश्री मोचरस शतावरी इन्होंका रस मिला हाथसे मर्दितकर वटिका बना घीसे पकाय घीके संग खावै ।। १२ ।। बूढाभी १०० स्त्रियोंसे भोग करनेमें जुवान पुरुषकी तरह हो जाता है रोगी भी स्त्रियोंको भोगनेमें तृप्त नहीं होता कभी भी लिंग शिथिल नहीं होता तिस कारणसे उसका बलक्षय नहीं होता उत्साहका भंग नहीं होता नष्ट हुआ वीर्य भी वृद्धिको प्राप्त होता है और बल उपजता है ।। १३ ।। विदारीकंद आंवला मुलहटी गोखरू भूमिकोहला तुषरहित उड़द तिल जब ।। १४ ।। गीहूंका चून सिंघाड़ा कोहलाके बीज मुशली शालिचाव-लोंका चून अशगंध चंदन ।। १५ ।। चिरोंजी भिलावाकी गिरी दाख मिश्री वंशलोचन अगर कपूर ये सब समान भाग लेने ।। १६ ।। इन

च्चदिनेदिने ॥ क्षौद्रेणतत्समायुक्तंपलार्द्धंपलमेववा ॥ १७ ॥ अनुपानेहिमंवारिक्षीरंमांसरसोथवा ॥ मद्यमिक्षुरसोवापिद्विकालमपिभक्षयेत् ॥ १८ ॥ अनेनपुरुषः शुक्रात्पूर्णधातुः प्रजायते ॥ वीर्यवान्बलवांश्चैवस्त्रीषुनित्यंवृषायते ॥ १९ ॥ तेजोवर्णबलोपेतोदीप्ताग्निर्नित्यहर्षितः ॥प्रमेहमूत्रकृच्छ्राश्चशुक्रदोषाष्टकंतथा ॥२०॥ वलिंवैपलितंचैवसद्यो नाशयतिध्रुवम्॥ अनेनातिजरोजीर्णोयुवेवपरिहृष्यति ॥ २१ ॥ प्रमदाभिर्नतृप्येतगच्छन्नपिमुहुर्मुहुः ॥ रक्तस्रावंचपित्तंचरक्तातीसारमेवच ॥ २२ ॥ वातपित्तकृतान्रोगानन्यानपिनिवारयेत् ॥ मासत्रयप्रयोगेणक्षयरोगात्प्रमुच्यते ॥ २३ ॥ मासत्रय-

सबोंके समान मिश्रीका चूर्ण मिला नित्यप्रति खावै परंतु शहद मिला दो तोलेभर अथवा चार तोलेभर खावै ॥ १७ ॥ अनुपानमें शीतल पानी दूध मांसका रस मदिरा ईखका रस इन्हों मांहसे एककोईसाको लेवै दोनों काल खावै ॥ १८ ॥ इस करकै पुरुष वीर्यसे पूर्ण धातुवाला होता है बलवान् और वीर्यवान् होकै नित्यप्रति स्त्रियोंको आनंदित करता है ॥ १९ ॥ तेज वर्ण और बलसे युत हुआ दीप्त हुआ अग्निवाला नित्य प्रति आनंदित होकै प्रमेह मूत्रकृच्छ्र वीर्यके आठ दोष ॥ २० ॥ वलि पड़ना सुपेदवाल इन्होंको शीघ्र नाशता है इस करकै अत्यंत बुढापासे जीर्ण हुआ भी जवानकी तरह आनंदित होता है ॥ २१ ॥ वारंवार भोग करता हुआभी स्त्रियोंसे तृप्त नहीं होता रक्तस्राव पित्त रक्तातिसार ॥ २२ ॥ वातपित्तके किये अन्यरोग इन्होंको निवारता है तीन महीने सेवनेंसे क्षयरोगसे छूट जाता है ॥ २३ ॥ तीन महीने

प्रयोगेणगच्छेच्चप्रमदाशतम् ॥ मासषट्कप्रयोगेण स्याद्वराहोपमोदृढः ॥ २४ ॥ नरोगैर्बाध्यतेकैश्चि-ज्जरयानाभिभूयते ॥ संवत्सरंतुकृत्वैवंपूर्यंतेसप्तधा-तवः ॥ २५ ॥ महाबलोमहोत्साहोदृढकायोदृढें-द्रियः ॥ नतृप्यतेचयोपिद्भिर्भक्ष्यभोज्यादिभि-स्तथा ॥२६॥ विदार्यादि ॥ शतावरीचूर्णप्रस्थंप्रस्थं गोक्षुरकस्यच ॥ वाराह्याविंशतिपलंगुडूच्याःपंच-विंशतिः ॥ २७ ॥ भल्लातकानांद्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैवतु ॥ तिलानांलुचितानांचप्रस्थंदद्यात्सुचूर्णि-तम्॥२८॥त्र्यूषणस्यपलान्यष्टौशर्करायाश्चसप्ततिः॥ माक्षिकंशर्करार्द्धेनमधुनोर्द्धेनवैघृतम् ॥२९॥ शता-वरीसमंदेयंविदारीकंदचूर्णकम्॥एतानिश्लक्ष्णचूर्णानि स्निग्धभांडेनिधापयेत् ॥ ३० ॥ पलार्द्धमुपभुंजी-

सेवनेसे १०० स्त्रियोंको भोग सक्ता है छः महीने सेवनेंसे वरहड़ा शूरके समान दृढ हो जाता है ॥ २४ ॥ किसी रोगसेभी पीड़ित नहीं होता बुढापासे दुःखित नहीं होता वर्षभर ऐसे सेवनेंसे साती धातु पूर्ण हो जाते हैं ॥ २५ ॥ बहुत बलवाला बहुत उत्साहवाला दृढ शरीरवाला दृढ इंद्रियोंवाला स्त्री और भक्ष्य भोज्यआदिसे तृप्त नहीं होता ॥ २६ ॥ शतावरीका चूर्ण ६४ तोले गोखरूका चूर्ण ६४ तोले वाराही कंद ८० तोले गिलोय १०० तोले ॥ २७ ॥ भिलावा १२८ तोले चीता ४० तोले शोधे हुये तिलोंका चूर्ण ६४ तोले ॥ २८ ॥ सूंठ मिरच पीपलका चूर्ण ३२ तोले खांड २८० तोले शहद १४० तोले घी ७० तोले ॥ २९ ॥ विदारीकंदका चूर्ण ६४ तोले इन्होंका मिहीन चूर्ण कर चीकना पात्रमें घाल धरै ॥ ३० ॥ दो तोलेभरको खावै इसपै मनोवां

तयथेष्टंचात्रभोजनम् ॥ एषमासोपयोगेनरुजांहंतिज
रामपि ॥ ३१ ॥ वलीपलितखालित्यप्लीहपांड्वाद्य-
पीनसान् ॥ भगंदरान्मूत्रकृच्छ्रानश्मरींचाभिनत्त्य-
पि ॥ ३२ ॥ अष्टादशचकुष्ठानितथाष्टावुदराणिच॥
प्रमेहंचमहाव्याधिपंचकासान्सुदारुणान् ॥ ३३ ॥
अशीतिर्वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥ विं-
शतिश्लेष्मकांश्चैवसंसृष्टान्सान्निपातिकान् ॥ एता-
न्सर्वान्रुजोहंतिवृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ ३४ ॥ स्या-
त्कांचनाभोमृगराजविक्रमस्तुरंगमानामतियातिवे-
गात् ॥ स्त्रीणांशतंगच्छतिसोऽतिहृष्टः सुहृष्टपुष्ट
श्चटकोयथातथा ॥ ३५ ॥ पुत्रान्सञ्जनयेद्वीरान्नार-
सिंहपराक्रमान्॥ नारसिंहइतिख्यातश्चूर्णोरोगगणा-
पहा ॥३६॥ नारसिंहचूर्णम् ॥ स्नानंचंदनलेपनंमृग-

छित भोजन करै एक महीना सेवनेंसे यह रोगको और बुढापाको नाशता है ॥ ३१ ॥ वलियें पडना सुपेद बाल गंजापना तिल्लीरोग पांडुरोग पीनस भगंदर मूत्रकृच्छ और पथरी इन्होंको नाशता है ॥ ३२ ॥ अठारह कुष्ठ आठ उदर रोग प्रमेह क्षयरोग पांचों भयंकर खांसी ॥ ३३ ॥ अश्शी वातरोग चालीस पित्तके रोग वीश कफके रोग दो दोषोंके रोग सन्निपातके रोग इन सब रोगोंको हरता है जैसे वृक्षको इंद्रका वज्र ॥ ३४ ॥ सोना सरीखी कांतिवाला सिंह सरीखा पराक्रमवाला वेगसे घोडोंके आगेचलनेंवाला १०० स्त्रिकोंको भोगनेंवाला अत्यंत आनंदित और चिड़ाकी तरह हृष्ट पुष्ट रहता है ॥ ३५ ॥ नरसिंहके समान पराक्रमवाले वीर पुत्रोंको उपजाता है; यह नारसिंहचूर्ण रोगोंके समूहको नाशता है ॥ ३६ ॥ स्नान चंदन

मदक्षोदोजलंशीतलंवाताः शीतसुगंधमंदमधुराःक्षीरं हिमंमाहिषम् ॥ द्राक्षादाडिमनालिकेरसलिलंखाद्यं विपाकेमृदुकांतश्रांतमनोभवव्यतिकरंसेवेत नित्यं पुनः ॥ ३७ ॥ एषोऽन्नपानस्यविधिर्मयाकृतोलोके हितार्थमपिदोषहरोसविस्तृतः ॥ रसस्यसर्वस्यगुणाश्च दोषामयाश्रुतामुख्यमुखात्प्रशस्ताः ॥३८॥ इदमतीवरहस्यसकौतुकंविरचितं रसपाकविशेषणम् ॥ भवतिभेषजमल्पशरीरिणांगुणिगणार्णववैद्यसुखेनवा ॥३९॥ इत्यायुर्वेदमहोदधौश्रीसुषेणदेवविरचिते अन्नपानविधिः समाप्तः ॥ ॥ एकोंऽशोरुचकादुभौमरिचतःशुंठ्यास्त्रयोजीरकाच्चत्वारोऽर्द्धकृतात्समुद्रलवणाद्भागस्तथासैंधवात् ॥ चूर्णंसिंहनभूभुजेनगदितं

लेप कस्तूरीका अनुलेप शीतलपानी शीतल सुगंधित मंद और मधुर ऐसा पवन शीतलभैसका दूध दाख अनार नारियलका पानी खानेके योग्य पाकमें कोमल कांत और श्रांत रूपी मनसे उपजे विकारोंको नाशनेंवाला ऐसे पदार्थोंको नित्य बारंबार सेवै ॥ ३७ ॥ मैंनें लोकका हितके लियें दोषनाशक और विस्तृतरूप अन्नपानका विधि किया सब प्रकारका रसके उत्तम गुण और दोष मैनें धन्वंतरिजीका मुखसे सुने ॥ ३८॥ रहस्य कौतुक सहित और रसपाकमें विशेषणरूप यह गुणियोंके समूहके समुद्ररूप वैद्योंको सुख देनेंवाला मैने रचा शरीरवालोंको यह औषध है ॥ ३९ ॥ यहां श्रीसुषेणदेवनेंरचित किया आयुर्वेदमहोदधिमें अन्नपानविधि समाप्त हुआ ॥ काला नमक १ भाग मिरच २ भाग सूंठ ३ भाग जीरा ४ भाग सांभर नमक आधाभाग सेंधानमक अधाभाग इन्होंका चूर्ण करै यह चूर्ण सिंहनराजानें कहा है; तक्रके संग संयोजितकिया

तक्रेणसंयोजितं गुल्माध्मानविषूचिकामयहरंस्या-
द्भोजनांतेसदा ॥ १ ॥

इति श्रीसुषेणकृत आयुर्वेदमहोदधिः समाप्तः ।

गुल्म अफरा विषूचिका हैजा इन रोगोंको हरता है; भोजनके अंतमें सदा लेना ॥ १ ॥ यहां श्रीसुषेणवैद्यका किया ग्रंथ समाप्त हुआ ॥

इति श्रीरौहतकप्रदेशांतर्गतवेरीग्रामनिवासिगौडवंशावतंसविविधशास्त्रपरमपंडितश्रीशिवसहायपुत्रहरियानाकुरुक्षेत्रधर्म्ममण्डलमहोपदेशकराविदत्तशास्त्रिराजवैद्यानुवादितश्रीसुषेणकृतायुर्वेदमहोदधिभाषाटीकासमाप्ता ॥

श्रीहरिः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना (मुंबई.)